हिदी रत्न दस दिनों में

(रत्न गाईड)

सुमन

गुंजन

स्नेही

दास

नारायण

हरिशर्मा

व्याकरण

प्रथम-पत्र

१ प्रश्न—भाषा, व्याकरण, शब्द और वाक्य किसे कहते ? शब्द, व्याकरण और भाषा के विभागों को बताओ।

उत्तर—अपने विचारों को प्रकट करने वाले साधन को भाषा कहते हैं।

जिस शास्त्र से हमें किसी भाषा का पढ़ना-लिखना अच्छी तरह आ जाय उसे व्याकरण कहते हैं।

ध्वनियों तथा अक्षरों से बने हुए संयोग को शब्द कहते हैं, और सार्थक शब्दों के संयोग को भाषा कहते हैं। शब्द के दो भेद हैं। अव्यक्त और व्यक्त।

व्याकरण के चार विभाग हैं—१—वर्ण-विभाग २—शब्द-विभाग ३—वाक्य-विभाग ४—छन्द विभाग।

भाषा के दो प्रकार हैं—१—लिखित २—पठित।

व्युत्पत्ति के अनुसार शब्दों के तीन भेद हैं।

रूढ़ि—जिन शब्दों के टुकड़े करने पर अर्थ न निकलें। जैसे पेट, घर।

यौगिक—जो दो या इससे ज्यादा शब्द या शब्दांशों से बने हों। जैसे—पाठशाला, दयालय।

योग रूढ़ि—जो शब्द या शब्दांशों के मेल से बने हों और विशेष अर्थ प्रकट करते हों। जैसे—जलज। जल + ज = कमल।

इन तीनों को चार विभागों में बाटा गया है।

१—तत्सम—सस्कृत के ज्यो त्यों प्रयुक्त होने वाले शब्द। जैसे—बालक, सरिता, भ्रष्ट।

२—तद्भव—जो सस्कृत से बिगड कर बने हों जैसे—आज (अद्य) भाई (भ्राता) नाक (नासिका)।

३—देशी—जो यहा के आदि निवासियों के शब्द हैं। जैसे खिड़की, ऊधम पेट।

४—विदेशी—जो विदेश के हों। जैसे—औरत, बाद, किताब, कमरा, रेल, आलू, रोटी, दाल।

प्रश्न—२ वर्ण विभाग, अक्षर या वर्ण, वर्णमाला और लिपि की परिभाषा लिखिये।

उत्तर - जिस में अक्षरो के स्वरूप, उच्चारण और मेल की रीति बताई जाय उसे वर्णविभाग कहते हैं।

जिस छोटी ध्वनि के टुक्ड़े न हो सकें उन्हें अक्षर या वर्ण कहते हैं जैसे-क्, अ, इ।

अक्षरो के समूह को वर्णमाला कहते हैं।

जिस रूप में भाषा लिखी जाती है लिपि कहलाती है। (हिन्दी देवनागरी लिपि, अगरेजी लेटिन लिपि और उर्दू फारसी लिपि में लिखी जाती है)।

प्रश्न - ३ स्वर, व्यञ्जन मात्रा, इनके भेद, उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न भेद पर प्रकाश डालो।

उत्तर—जो वर्ण बिना किसी की सहायता से बोले जाएँ वे हैं। जैसे— अ, इ, । स्वर दो प्रकार के हैं ह्रस्व और दीर्घ। ,उ, ऋ ह्रस्व और आ,ई,ऊ,ॠ,ए,ऐ, ओ, औ दीर्घ। दो

भेद और हैं। जो नाक से भी बोले जाएँ जैसे ङ, ञ, ण, न, म, ये सानुनासिक और जो केवल मुँह से बोले जाएँ वे निरनुनासिक। बाकी सब स्वर और व्यञ्जन भी।

जो स्वर की सहायता से बोले जाएँ वे व्यञ्जन। इनके तीन भेद। स्पर्श—'क' से लेकर 'म' तक। अन्तःस्थ—य, र, ल, व। ऊष्म—श, ष, स, ह।

व्यञ्जन से मिलकर स्वर का जो रूप हो जाता है उसे मात्रा कहते हैं।

जैसे—आ 'ा' र+आ+म=राम।

उच्चारण स्थान दस हैं।

कण्ठ्य— अ, आ, कवर्ग, ह और विसर्ग।

तालव्य—इ, ई, चवर्ग, य और श।

मूर्द्धन्य—ऋ, टवर्ग, र और ष।

दन्त्य—तवर्ग, ल और स।

ओष्ठ्य– उ, ऊ, पवर्ग।

कण्ठतालव्य—ए, ऐ।

कण्ठोष्ठ्य—ओ, औ।

दन्तौष्ठ्य—व, फ।

नासिक्य—अनुस्वार।

जिह्वामूलीय—क़, ख़ आदि।

वर्ण के उच्चारण होने का व्यापार प्रयत्न कहलाता है इसके दो भेद हैं—अभ्यन्तर, जो उच्चारण का पहला है। इसके चार भेद हैं। विवृत, स्पृष्ट, ईषद्विवृत और

उच्चारण के बाद के प्रयत्न को वाह्य-प्रयत्न कहते हैं। इसके दो भेद हैं—घोष और अघोष।

घोष—प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा अक्षर, सारे स्वर, य, र, ल, व घोष हैं और बाकी अघोष।

४—प्रश्न—स्वराघात, शब्दविभाग, किसे कहते हैं।

लिंग, वचन, कारक, भाववाचक-संज्ञा बनाने के नियम। शब्दों के भेद और प्रभेदों की परिभाषा उदाहरण सहित लिखो।

उत्तर—शब्दों के उच्चारण में जिस अक्षर पर धक्का लगता है, उसे स्वराघात कहते हैं।

जहाँ शब्दों के भेद, रूप और उसके बनाने की रीति बताई जाती है, उसे शब्द-विचार कहते हैं।

शब्द के आठ भेद हैं—

विकारी के रूप में—संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण।

अविकारी के रूप में—क्रिया-विशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक।

संज्ञा किसी वस्तु के नाम को कहते हैं। राम, गाय, दुख। इसके तीन भेद हैं।

जातिवाचक—जो जाति भर का बोध कराये। जैसे—गाय, घोड़ा, लड़का।

व्यक्तिवाचक—जो एक व्यक्ति का बोध कराये—जैसे-राम, वेणु, गंगा।

भाववाचक—जो पदार्थ के गुण, अवस्था और व्यापार कराए-जैसे—जवानी, दुःख।

कुछ लोग दो भेद और मानते हैं। समुदायवाचक–सभा, गोष्ठी। द्रव्यवाचक—लोहा, घी, पानी।

जो शब्द संज्ञा के बदले आवे वह सर्वनाम कहलाता है। जैसे—राम आता है फिर वह सो जाता है। यहा वह सर्वनाम है। इसके पाच भेद हैं।

१—पुरुषवाचक—जिस से कहने वाले सुनने वाले और जिसके विषय में कुछ कहा जाय उसका ज्ञान हो। इस के तीन भेद हैं—उत्तम पुरुष—मैं हम। मध्यमपुरुष—तू, तुम, आप। प्रथम पुरुष–वह, वे, यह, ये।

२—निश्चयवाचक—जिससे वस्तु का निश्चयात्मक ज्ञान हो जैसे–यह, वह।

३—अनिश्चयवाचक—जिससे सन्देह-पूर्ण ज्ञान हो। सब, कुछ, कोई।

४—सम्बन्धवाचक—जिससे एक दूसरे का सम्बन्ध जाना जाय। जैसे—जो, सो।

५—प्रश्नवाचक—जो कुछ पूछने में व्यवहार किया जाय जैसे—क्या, कौन, कैसा।

जिससे वस्तु की जाति जानी जाय उसे लिंग कहते हैं। इसके दो भेद हैं। पुँल्लिग और स्त्रीलिंग।

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग बनाने के नियम।

अकारान्त शब्द के अंतिम अ को आ कर देने से—जैसे—प्रिय से प्रिया।

अन्तिम 'अ' को 'ई' कर देने से। देव—से देवी। पुत्र से पुत्री।

आ को ई कर देने से—रस्सा से रस्सी, डब्बा से डब्बी।

'आ' को 'इया' कर देने से—कुत्ता से कुतिया । चूहा से चुहिया ।

व्यापारवाची शब्दों के पीछे 'इन' लगाने से । कहार से कहारिन ।

पदवी वाचक शब्दों के पीछे 'आइन, लगाने से । दूबे से दुबेइन, पण्डा से पण्डाइन ।

कहीं तो नी लगती है । जैसे—ऊँट—ऊँटनी ।

कहीं कहीं स्त्रीलिंग बिलकुल दूसरा बन जाता है । पिता से माता, भाई से बहिन । बैल से गाय । पुरुष से स्त्री । वर से वधू ।

शब्द का वह रूप जिससे यह ज्ञात हो कि वह एक के लिये आया है या अनेक के लिये, उसे वचन कहते हैं । यह दो प्रकार का है ।

एक वचन और बहुवचन ।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम ।

१—स्त्रीलिंग अकारात शब्दों के 'अ' को 'एँ' कर देने से । जैसे—भैंस से भैंसें ।

२—आकारान्त स्त्री लिंग शब्दों के पीछे एँ जोडने से । जैसे—माता माताएँ ।

३—पुँल्लिग आकारान्त शब्दों के आ को 'ए' कर देने से । जैसे—गधा से गधे ।

४—स्त्रीलिंग इकारान्त और ईकारान्त शब्दो के साथ 'या' लगाने से । जैसे रीति से रीतिया और गाडी से गाडिया ।

५—स्त्रीलिंग उकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त और ओका-

रान्त शब्दों के अन्त में 'एँ' लगा देने से कहीं पर पूर्व दीर्घ स्वर को ह्रस्व से भी। जैसे—वस्तुसे वस्तुएँ, वहू से वहुएँ, गौ से गौएँ।

संज्ञा वा सर्वनाम का वह रूप जो वाक्य के अन्य शब्दों का सम्बन्ध क्रिया से प्रकट करे कारक कहलाता है। जैसे—ने, को, से।

हिन्दी में आठ कारक हैं। उनके चिन्ह अलग अलग हैं। कर्त्ता—ने, से। कर्म—को। करण—से, के साथ, द्वारा। सम्प्रदान—को, के लिये। अपादान—से। सम्बन्ध—का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी। अधिकरण—में, पर। सम्बोधन—हे। अरे।

१—क्रिया को करने वाला कर्त्ता। जैसे—राम जाता है। यहा राम कर्त्ता हैं।

२—जिस पर कर्त्ता के व्यापार का फल पड़े। मैंने राम को मारा। यहा मैं कर्त्ता और राम कर्म है।

३—करण-जिससे कर्त्ता कार्य करे। राम कलम से लिखता है। यहा कलम करण है।

४—सम्प्रदान-जिसके लिए कर्त्ता काम करे। राम मोहन के लिए आया है। यहा मोहन सम्प्रदान कारक है,।

५—अपादान-जिससे अलग होना, शुरू होना, तुलना करना आदि जाना जाय। जैसे—वह वहा से गया। स्कूल आज से बन्द है। तुम उस से अच्छे हो।

६—सम्बन्ध-संज्ञा का वह रूप जिससे एक वस्तु का दूसरी वस्तु से सम्बन्ध जाना जाय। जैसे—यह चम्पा की पुस्तक है।

७—अधिकरण-जहा क्रिया का होना या करना पाया

जाय। जैसे—विमला घर में रहती है। श्यामा छत पर सोती है।

८—सम्बोधन-जिस से किसी को पुकारना जाना जाय। ओ, राम, यहा आओ।

भाववाचक संज्ञा चार प्रकार के शब्दों से बनती है।

जातिवाचक संज्ञा से—जैसे—लडका से लडकपन।

विशेषण से—बूढ़ा से बुढ़ापा।

क्रिया से—गिरना से गिरावट, चढना से चढाई।

सर्वनाम से—अपना से अपनापन। निज से निजत्व।

विशेषण—जो संज्ञा की विशेषता बताए। जैसे अम्बिका बेवकूफ है। यहाँ बेवकूफ विशेषण हुआ।

विशेषण के चार भेद हैं—गुणवाचक, परिमाणवाचक सख्यावाचक, सार्वनामिक या निर्देशक।

१—गुणवाचक—जिससे किसी वस्तु का गुण या दोष जाना जाय। जैसे—लज्जा मूर्ख है, लता चतुर है, गाय काली है, कुत्ता सफेद है।

२—परिमाणवाचक—जिससे किसी वस्तु का माप-तोल जाना जाय। जैसे—सेर भर, दो मन।

३—सख्यावाचक—जिससे किसी सख्या का बोध हो। इसके दो भेद हैं। निश्चयवाचक-जैसे एक, दस।

अनिश्चितवाचक—बहुत, कुछ।

४—सार्वनामिक—विशेषण—जो सार्वनाम विशेषण की तरह प्रयुक्त हों। मैं मनोरमा हूं—यहा 'मैं' सर्वनामिक विशेषण है।

वस्तुओं के गुणों के आपस में मिलान को (विशेषण की) तुलना कहते हैं। यह तीन प्रकार की है।

१—मूलावस्था—जिसमे तुलना नहीं की जाती। जैसे–वह -तुर है।

२—उत्तरावस्था—जिसमें एक को दूसरे से अच्छा या बुरा ाया जाय। जैसे—तुम मुझ से अच्छी हो। वह तुमसे खराब है।

३—उत्तमावस्था—जिसमें एक को बाकी और सबों से च्छा या बुरा बताया जाय। बालकराम हम सबो से चतुर है। तुम न से कमजोर हो। संस्कृत में उत्तरावस्था मे 'तर' और उत्तमा-था मे 'तम' लग जाता हैं। जैसे - श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम।

जिससे कुछ होना या करना जाना जाय उसे क्रिया कहते हैं। —मैं लिखता हूँ। यहाँ लिखना क्रिया है। क्रिया का मूलरूप ातु' कहलाता है। जैसे—पी, ले, उठ। धातु के आगे 'न' लगाने क्रिया का सामान्य रूप बनता है। जैसे—पीना, लेना, उठाना।

क्रिया के दो भेद हैं। अकर्मक—जिसमें क्रिया के व्यापार। फल कर्त्ता पर पडता है। कृष्णा सोती है। यहाँ कृष्णा ही सोने का व्यापार पडता है। सकर्मक—जिसमें व्यापार का फल कर्त्ता के अलावा दूसरे पर (कर्म पर) पडे। जैसे—राधा शोर को खिलाती है। यहाँ क्रिया का फल किशोर पर ड़ता है।

कर्म होने पर भी जिस क्रिया का मतलब पूरा न हो वह पूर्णक्रिया कहलाती है। जैसे—मैं उसे समझता हूँ। (क्या मझता हूँ ? इसका उत्तर प्रकट नहीं।

अपूर्ण क्रियाओं को पूरा करने वाले शब्द 'पूरक' कहलाते । मैं उसे अच्छा समझता हूँ। यहाँ 'अच्छा' पूरक है।

कर्त्ता कार्य को स्वय न करके दूसरे को करने की

प्रेरणा करे वह क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। जैसे—
दास कर्मदास से लिखाता है। मैं उन्हें चपरासी से बुलवाता हूँ।

क्रिया को छोड कर और शब्दों में प्रत्यय लगाकर जो धा
बनाये जाते हैं, उन्हें नाम-धातु कहते हैं। जैसे—बात से बतिया
गर्म से गर्माना, दुख से दुखाना।

प्रश्न—सकर्मक तथा प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाने के निय
लिखिए।

क—अकारान्त धातु के 'अ' को दीर्घ करके आगे 'ना' ल
देने से सकर्मक और वाना लगा देने से प्रेरणार्थक क्रिया
जाती है। जैसे—

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
उठना	उठाना	उठवाना।
हटना	हटाना	हटवाना।

ख—दो अक्षरों की अकर्मक धातुके बीच से दीर्घ स्वर
ह्रस्व करके 'आ' लगाने से सकर्मक और 'वाना' लगाने
प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। जैसे—घूमना, घुमाना, (सकर्म
घुमवाना (प्रेरणार्थक)।

ग तीन अक्षरों की अकर्मक धातु के दूसरे अक्षर को
करके सकर्मक बनती है और वाना लगा कर प्रेरणार्थक। जैसे
निकल—निकालना, निकलवाना।

घ—अकर्मक धातु के दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके 'ला' अ
'लवा' लगा देने से सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया बन जाती
जैसे—जी-जिलाना, जिलवाना। सो—सुलाना, सुलवाना।

ङ—कुछ का स्वतन्त्र परिवर्तन होता है। जैसे—छूट

ना, छुड़वाना । फटना-फाड़ना, फड़वाना । बिकना, बेचना, वाना । लेटना, लिटाना, लिटवाना ।

मूल क्रिया के आगे एक और अमुख्य क्रिया मिलती है जो क क्रिया कहलाती है । जैसे—'कर' धातु है । इस में 'चुक' 'सक' लग जाने से 'कर सकना' 'कर चुकना' या 'कर लेना' दि संयुक्त क्रिया बन जाती है ।

प्रश्न १—क्रिया व वाच्यों के भेद लक्षण और उदाहरण हित लिखो ।

उत्तर—वाच्य तीन प्रकार के होते हैं । (१) कर्त्तृ वाच्य २) कर्मवाच्य (३) भाव वाच्य ।

कर्त्तृ वाच्य उसे कहते हैं जिस में लिंग और वचन कर्त्ता के नुसार हों । जैसे मैंने खीर खाई । सुशीला सोती है आदि ।

कर्म वाच्य उसे कहते हैं जिससे लिंग और वचन कर्म के नुसार हों । जैसे—गोविन्द से पुस्तक चुराई गई । शीला से जन बनाया गया आदि ।

भाव वाच्य उसे कहते हैं जो सदा पुल्लिंग, एक वचन और म पुरुष में हो जैसे—मुझ से लिखा नहीं जाता । सीता से उठा हीं आता आदि ।

प्रश्न—काल की परिभाषा करते हुए उसके भेद सोदाहरण लिए ।

उत्तर—क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने का समय चित हो उसे काल कहते हैं । काल तीन प्रकार का होता है १) भूत (२) वर्तमान (३) भविष्यत् । इन के उदाहरण म्न प्रकार समझें—

भूत—मैंने पुस्तक लिखी। सरला ने भोजन किया आदि।

वर्तमान—मैं पढ रहा हूँ। रानी भोजन बना रही है

भविष्यत्—मैं शहर को जाऊगा। ज्वाला लावेगी आदि।

प्रश्न—भूतकाल के भेद उदाहरण सहित लिखो।

उत्तर—भूतकाल छः प्रकार का होता है। (१) सामान्य भूत (२) आसन्नभूत (३) पूर्णभूत (४) अपूर्णभूत (५) संदिग्धभूत (६) हेतुहेतुमद्‌भूत।

१ सामान्य भूत उसे कहते हैं, जिससे क्रिया के हो चुक का बोध हो। जैसे—राम गया, मैंने खोदा।

२ आसन्न भूत उसे कहते हैं जिससे तत्काल ही कार्य होना पाया जावे। जैसे—देव आया है, कृष्णा गई है।

३ पूर्ण भूत उसे कहते हैं, जिससे यह बोध हो कि को समाप्त हुए बहुत समय हो चुका है। जैसे—मैं मथुरा गई मनोहर आया था।

४ अपूर्णभूत उसे कहते हैं जिससे यह विदित हो कि का भूतकाल मे प्रारम्भ तो कर दिया गया था, परन्तु अभी पूर्ण न हुआ था। जैसे—मैं लिखता था, लीला खेलती थी।

५ सदिग्ध भूत वह है जिस से भूतकाल में कार्य के हो का सदेह विदित हो। जैसे—राम गया होगा। तूने सुना होगा।

६ हेतुहेतुमद्‌भूत उसे कहते हैं जिस से यह जाना जा कि कार्य भूतकाल में हो तो सकता था, किन्तु किसी कारणवश न हो सका। जैसे—यदि तुम यहा होते तो मैं अवश्य जीत जाता। कृष्णा होती तो राम खेलता।

प्रश्न—सामान्य भूत और पूर्वकालिक क्रियाओं की
ाषा लिखते हुए उनके बनाने की विधि सोदाहरण लिखिये।

उत्तर—सामान्य भूतकालिक क्रिया निम्न प्रकार से बनती
। ह्रस्व अकारान्त धातु के अन्त के अकार को दीर्घ (आ)
देने से जैसे—पढ़ना से पढ़ा, उठना से उठा।

२ आकारान्त वा ओकारान्त धातु के अन्त में 'या' लगा
से, जैसे—खा (ना) से खाया। सो (ना) से सोया।

३ यदि किसी धातु के अन्त में 'ई' वा 'ए' हो तो इनके
न्त में 'इया' लगा देने से—जैसे—सी [ना] सिया। दे [ना]
या।

४ ऊकारान्त धातुओं के 'ऊ' को ह्रस्व करके उसके आगे
ा' लगा देने से—छू [ना] छुआ।

५ हिन्दी में कुछ ऐसी क्रियाएँ भी हैं जिनकी भूतकालिक
नाकिसी नियम के बनती हैं, जैसे—कर [ना] से 'किया'
[ना] से 'गया' आदि।

पूर्वकालिक क्रिया उसे कहते हैं जिसका होना मुख्य क्रिया के
ने से पूर्व पाया जाय, परन्तु उसमें 'लिंग' वचन और पुरुष
ादि का भेद काल न हो। जैसे—मैं खाना खाकर जाऊँगा, वह
ध लेकर जावेगा।

प्रश्न—भविष्यत् काल की परिभाषा करते हुए उस के भेद
ोदाहरण लिखिये।

उत्तर आगे आने वाले समय को भविष्यत् कहते हैं। यह
 प्रकार का होता है। [१] सामान्य भविष्यत् [२] सम्भाव्य
विष्यत।

[१] जिससे काम करने की इच्छा का बोध हो, होने नहीं, उसे सम्भाव्य भविष्यत् कहते हैं। जैसे—मैं पढ़ूँगा। तू पढ़े वह पढ़ेगा।

[२] जिस वाक्य समुदाय से काल की साधारणता वि होती है, उसको सामान्य भविष्यत् कहते हैं। जैसे—मैं पढ़ूँ पढ़े, वह पढ़े।

प्र० क्रिया-विशेषण की परिभाषा करते हुए सोदाह उसके भेद लिखो।

उ०—जो शब्द किसी क्रिया की कोई विशेषता बतायें क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे—राम तेजी से लिख रहा है। वे धीमी चाल से चल रहा है आदि।

इसके विशेषत चार भेद हैं [१] रीतिवाचक, [२] का वाचक [३] स्थानवाचक और [४] परिमाण वाचक।

१ रीतिवाचक—रीतिवाचक उसे कहते हैं जिससे क्रिया रीति, स्वीकार, निश्चय, कारण आदि विदित हो। जैसे— भाँति, आप ही आप, ज्यों-त्यों, यथा तथा।

२ काल-वाचक—उसे कहते हैं, जिससे क्रिया के सम अवधि आदि का बोध होता है। जैसे—अब, कब, तक, आज क परसों, सुबह, शाम, साँझ-सवेरे आदि।

३ स्थानवाचक—उसे कहते हैं, जिससे क्रिया के स्था दिशा आदि का बोध हो। जैसे—निकट, पास, अन्यत्र, सर्व भीतर, बाहर आदि।

४ परिमाणवाचक—उसे कहते हैं, जो शब्द क्रिया का परिमा ते हैं। जैसे—बहुत, थोड़ा, खूब, कुछ, जरा सा, पर्याप्त आदि।

प्र०—क्रिया विशेषण रचना की दृष्टि से कितने हैं ? उनके नाम उदाहरण सहित लिखिए।

उ०—रचना की दृष्टि से क्रिया-विशेषण [१] मूल और [२] यौगिक दो प्रकार के हैं।

१ मूल उसे कहते हैं जो किसी दूसरे शब्द में प्रत्यय लगाने से नहीं बनते। जैसे—दूर, अचानक, मत आदि।

२ यौगिक—उसे कहते हैं जो दो शब्दों के मेल से या शब्दों में प्रत्यय लगाने से बनते हैं। ये निम्नलिखित शब्द—भेदों से बनते हैं—

[क] संज्ञा से—जैसे प्रेमपूर्वक, प्रतिदिन, आजन्म, ध्यानपूर्वक।

[ख] सर्वनाम से—यहां, इधर, अभी, वहां, उधर, यहीं, किधर, कहीं।

[ग] विशेषण से—चुपके, ऐसे, वैसे, कैसे, दूसरे, तीसरे।

[घ] क्रिया से—चलते—चलते, उठते—बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते।

[ङ] शब्दों की द्विरुक्ति से—हाथों हाथ, एकाएक, दिन दिन, साफ-साफ।

[च] भिन्न-भिन्न शब्दों के मेल से—रात दिन, सायं-प्रातः, घर-बाहर, एकदम, कल-परसों।

[छ] अव्ययों के मेल से—कहाँ तक, वहाँ तक, झट से

इसी प्रकार कहीं-कहीं अनुकरण वाचक शब्दों की द्विरुक्ति से भी क्रिया-विशेषण बनते हैं। जैसे—तड़ातड़, धड़ाधड़। कभी-कभी

सर्वनाम, विशेषण आदि भी बिना किसी विकार के क्रिया विशे
के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

प्र०—सम्बन्ध बोधक अव्यय किसे कहते हैं ?

उ०—सम्बन्ध बोधक अव्यय उसे कहते हैं, जो संज्ञा अथ
सर्वनाम शब्दों से मिलकर उनका सम्बन्ध अन्य शब्द से सूि
करें। जैसे—अतिरिक्त, बिना। इसे वाक्य में इस प्रकार प्रयु
किया जा सकता है।

१—आपके बिना मैं यहा नहीं ठहरूगा।

२—ईश्वर के अतिरिक्त हमारा कौन सहायक है ?

उक्त वाक्यों में 'बिना' आप और मैं का सम्बन्ध जोडता है अ
'अतिरिक्त' ईश्वर और 'हमारा' में सम्बन्ध निर्धारित करता है।

प्र०—समुच्चय बोधक अव्यय किसे कहते हैं ? उसकी प
भाषा लिखते हुए सोदाहरण भेद भी लिखिए।

उ०—समुच्चयबोधक अव्यय उसे कहते हैं जो पदों, वाक्य
अथवा खण्डवाक्यों को आपस में मिलावें, जैसे राम औ
श्याम खेल रहे हैं। इस वाक्य में 'और' समुच्चय बोधक अव्यय है
यह दो शब्दों 'राम' और 'श्याम को मिलाता है।

समुच्चय बोधक के दो भेद हैं—[१] समानाधिकरण (
व्यधिकरण।

समानाधिकरण—उसे कहते हैं जो समान पदों अथवा
ही प्रकार के वाक्यों या शब्दों को आपस में जोडे। जैसे—हिर
और कछुए में मित्रता हो गई। कमला और विमला मिलक
खेल रही थी।

व्यधिकरण उसे कहते हैं जो समान पद को अथवा भि

आश्रित वाक्य को मुख्य वाक्य से जोड़ें। जैसे—मैं आज न आऊँगा क्योंकि मेरी माँ बीमार है।

प्र०—विस्मयादि बोधक अव्यय की परिभाषा करते हुए उसके भेद सोदाहरण लिखो।

उ०—विस्मयादि बोधक उसे कहते हैं जिन शब्दों या शब्द समूहों से विस्मय, हर्ष, शोक, लज्जा, ग्लानि आदि मनोभाव प्रकाशित होते हैं। इसके मुख्यत पाच भेद हैं—

[१] हर्ष बोधक - वाह वाह ! आह ! धन्य धन्य !

[२] घृणा बोधक धिक् ! दुर् ! छि छि ! थू !

[३] आश्चर्यबोधक – अहो ! वाह ! हैं ! ऐं !

[४] शोकबोधक – आह ! हाय ! भैया रे !

[५] अनुमोदन-बोधक ठीक ! अच्छा ! हाँ !

प्रश्न—ऐसे वाक्य बनाओ जिनसे हर्ष, घृणा, आश्चर्य आशीर्वाद के भाव प्रकट हों।

उत्तर—(हर्ष) अहा ! विमला बापू जी आ गए।

(घृणा) छि ! तुम्हें ऐसा कार्य शोभा नहीं देता।

(आश्चर्य) धन्य है, तुम्हारी वीरता को !

प्र०—उपसर्ग की परिभाषा करते हुए उसके भेदों को सोदाहरण लिखें।

उत्तर उपसर्ग उसे कहते हैं जो शब्द के आदि में आकर उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते हैं। जैसे 'गमन' शब्द जाने के अर्थ में प्रयुक्त होता है, परन्तु इसके साथ 'आ' उपसर्ग लगा देने से 'आगमन' आने के अर्थ में हो गया।

प्र० रिक्त स्थानों की पूर्ति करो।

जान गई अभिमान न गया। भाग जाओ यहाँ से पकड़े जाओगे। सुरेन्द्र तुम क्या रहे हो। वे घर से ही ये पेड़ के से एक साँप उनकी आता दिखाई दिया।

उ० जान गई पर अभिमान न गया। भाग जाओ यहाँ से नहीं तो पकड़े जाओगे। सुरेन्द्र तुम क्या कर रहे हो। वे घर से निकले ही थे कि पेड़ के नीचे से एक साँप उनकी ओर आता दिखाई दिया।

प्र०—हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले संस्कृत, हिन्दी, उर्दू भाषा के कुछ उपसर्गों का नाम लिख कर उन्हें उदाहरणों द्वारा समझाइए।

संस्कृत के उपसर्ग

अनु = पीछे, समान, जैसे—अनुकरण, अनुसार।
अप = बुरा, विरुद्ध, जैसे—अपमान, अपयश, अपशब्द।
परा = उल्टा, पीछे, जैसे पराभव पराजय।
अभि = सामने, पास, जैसे—अभिमुख, अभ्यागत।
निर् = बिना, निषेध, जैसे—निरवलम्ब, निराकार।

हिन्दी के कुछ उपसर्ग

(ये उपसर्ग भी संस्कृत के उपसर्गों के बिगड़े हुए रूप हैं)
भर = पूरा, जैसे—भरपेट, भरपूर भरसक।
अध = आधा, जैसे—अधखिला, अधकचरा।
कु = बुरा, जैसे—कुचाल, कुपूत कुढंग।
नि = रहित, जैसे—निडर, निकम्मा, निरोग।

उर्दू के कुछ उपसर्ग

ना = थोड़ा, जैसे नालायक, नापसन्द।

वट=बुरा, जैसे—बट्नाम, बटू।

ता=सहित, अनुसार, जैसे—बाकायदा, बासलीका।

प्र०—प्रत्यय की परिभाषा करते हुए कृत् और तद्धित प्रत्यय के भेदों का निरूपण कीजिए।

उ०—प्रत्यय उसे कहते हैं जो शब्दांश शब्द के पीछे लगते हैं। जैसे—वीरता, सजावट। इनमें 'ता' और 'वट' प्रत्यय हैं।

कृत् प्रत्यय के पाँच भेद हैं—

[१] कर्तृवाचक [२] कर्मवाचक [३] करणवाचक [४] भाववाचक [५] क्रिया वाचक।

तद्धित प्रत्यय—वैसे तो तद्धित प्रत्यय बहुत हैं, पर कुछ नाम नीचे दिये जाते हैं—

[१] अपत्य वाचक [२] कर्तृवाचक [३] भाव वाचक [४] गुणवाचक [५] लघुता वाचक।

प्र०—अनु, परा, उप, कु, वि इन उपसर्गों का प्रयोग करके दिखलाओ।

उ०—अनु—अनुसार, अनुचर, अनुरूप, अनुज।

परा—पराजय, पराभव। उप—उपकुल, उपवन, उपाध्यक्ष।

कु—कुचाल कुपूत। वि—विदेश विलाप।

प्र०—समास की परिभाषा करके उसके भेदों का निर्देश कीजिए।

उत्तर—परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या अधिक पदों की विभक्तियाँ हटाकर उनके मेल से एक शब्द बनाने को समास कहते हैं। जैसे—घोड़ों की दौड़=घुड़दौड़।

समास चार प्रकार के होते हैं—

[ ] तत्पुरुष [२] बहुव्रीहि [३] द्वन्द्व [४] अव्ययी भाव।
इसके अतिरि त तत्पुरुष का एक भेद कर्म धारय और कर्म का एक द द्विगु है।

प्र०—इनकी परिभाषा बताकर उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर तत्पुरुष समास वह है जिसमें अन्तिम पद प्रधान हो। जैसे-देवमदिर—देव का मदिर। इसमें अन्तिम पद प्रधान है।

बहुव्रीहि समास वह है, जिसमें कोई भी पद प्रधान न हो, पर समस्त पद किसी अन्य पद का विशेषण हो। जैसे—दत्त चित्त, रक्तनयन, बारहसिंहा, मृगनयनी।

इनमें कोई भी पद प्रधान नहीं होता, प्रत्युत समस्त शब्द विशेषण बन जाता है।

द्वन्द्व समास उसे कहते हैं जिसके सब खड प्रधान हों। जैसे—ऋषि-मुनि, पाप-पुण्य, धर्म-कर्म, दाल-रोटी।

अव्ययीभाव उसे कहते हैं जिसमें पहला शब्द प्रधान होता है और समस्त पद अव्यय हो जाता है। जैसे—नेराटके घडा घड़ यथाशक्ति।

इसक अतिरिक्त तत्पुरुष का एक भेद कर्मधारय बतलाया गया है—

कर्मधारय समास उसे कहते हैं, जिस तत्पुरुष समास के विग्रह में दोनों पदों के साथ एक ही कर्ता कारक की विभक्ति आती है। इस समास के पद उपमान उपमेय अथवा विशेषण—विशेष्य होते हैं। जैसे महाराजा, पुच्छल तारा। चन्द्रमुख विराधन।

पहला पद सख्यावाचक विशेषण हो और जिसमे किसी समुदाय का बोध हो उसे द्विगु समास कहते हैं। इसे सख्यावाचक कर्मधारय भी कहा जाता है। जैसे—त्रिलोकी चौमासा, पसेरी आदि।

प्रश्न—सन्धि की परिभाषा करते हुए उसके भेदो के नाम सोदाहरण लिखिये।

उत्तर—दो अक्षरो के पास पास होने के कारण मिल जाने से उनमे जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि' कहते हैं। जैसे राम + अवतार = रामावतार।

सन्धि तीन प्रकार की होती है १—स्वर सन्धि २—व्यजन सन्धि ३—विसर्ग सन्धि।

स्वर सन्धि उसे कहते हैं जिस मे स्वर के साथ स्वर का मेल हो। जैसे—शिव + आलय = शिवालय। भारत + इन्दु = भारतेन्दु आदि।

व्यजन सधि उसे कहते हैं जिस में व्यजन के साथ व्यजन की सन्धि हो। जैसे—सत् + चरित्र = सच्चरित्र। दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन आदि।

विसर्ग सन्धि उसे कहते हैं जिसमें विसर्ग के साथ स्वर या व्यजन की सन्धि हो। जैसे—नि चल = निश्चल। धनु + टकार = धनुष्टकार आदि।

प्रश्न—स्वर सधि के भेद लिखकर उनकी परिभाषा सोदाहरण लिखिये।

उत्तर = स्वर सधि के पाँच भेद हैं = दीर्घ २—गुण ३—वृद्धि ४—यण और ५—अयादि।

[ ] तत्पुरुष [२] बहुव्रीहि [३] द्वन्द्व [४] अव्ययी भाव
इसके अतिरिक्त तत्पुरुष का एक भेद कर्म-धारय और कर्म-धारय
का एक द द्विगु है।

प्र०—इनकी परिभाषा बताकर उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर तत्पुरुष समास वह है जिसमें अन्तिम पद "
हो। जैसे-देवमदिर—देव का मदिर। इसमें अन्तिम पद प्रधान है

बहुव्रीहि समास वह है, जिसमें कोई भी पद प्रधान न हो
पर समस्त पद किसी अन्य पद का विशेषण हो। जैसे—दत्त
चित्त, रक्तनयन, बारहसिंहा, मृगनयनी।

इनमें कोई भी पद प्रधान नहीं होता, प्रत्युत समस्त शब्द
विशेषण बन जाता है।

द्वन्द्व समास उसे कहते हैं जिसके सब शब्द प्रधान हों
जैसे—ऋषि-मुनि, पाप-पुण्य, धर्म-कर्म, दाल-रोटी।

अव्ययीभाव उसे कहते हैं जिसमें पहला शब्द प्रधान
होता है और समस्त पद अव्यय हो जाता है। जैसे—नेरटर्क घड
घड यथाशक्ति।

इसके अतिरिक्त तत्पुरुष का एक भेद कर्मधारय बतलाय
गया है—

कर्मधारय समास उसे कहते हैं जिस तत्पुरुष समास
विग्रह में दोनों पदों के साथ एक ही कर्ता कारक की विभक्ति
आती है। इस समास के पद उपमान उपमेय अथवा विशेषण-
विशेष्य होते हैं। जैसे महाराजा, पुन्डल तारा। चन्द्रमुख
विगाधन।

कर्मधारय का एक भेद द्विगु है। जिस कर्मधारय समास

मे पहला पद सख्यावाचक विशेषण हो और जिसमे किसी समुदाय का बोध हो उसे द्विगु समास कहते हैं। इसे सख्यावाचक कर्मधारय भी कहा जाता है। जैसे—त्रिलोकी चौमासा, पसेरी आदि।

प्रश्न—सधि की परिभाषा करते हुए उसके भेदों के नाम सोदाहरण लिखिये।

उत्तर—दो अक्षरों के पास पास होने के कारण मिल जाने उनमे जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सधि' कहते हैं। जैसे म+अवतार = रामावतार।

सधि तीन प्रकार की होती है १—स्वर सधि २—व्यजन सधि ३—विसर्ग सधि।

स्वर सधि उसे कहते हैं जिस मे स्वर के साथ स्वर का मेल हो। जैसे--शिव+आलय=शिवालय। भारत+इन्दु=भारतेन्दु आदि।

व्यजन सधि उसे कहते हैं जिस में व्यजन के साथ व्यजन की सधि हो। जैसे –सत्+चित्र=सच्चरित्र। दिक्+दर्शन= दिग्दर्शन आदि।

विसर्ग सधि उसे कहते हैं जिसमे विसर्ग के साथ स्वर या व्यजन की सधि हो। जैसे--नि चल=निश्चल। धनु +टकार= धनुष्टकार आदि।

प्रश्न—स्वर सधि के भेद लिखकर उनकी परिभाषा सोदाहरण लिखिये।

उत्तर=स्वर सधि के पाँच भेद हैं=दीर्घ
वृद्धि ५—अयादि।

जिसमें ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, से परे यदि क्रम से ह्र या दीर्घ अ, इ, उ, हों, तो दोनों के स्थान में वही दीर्घ हो जाता है। उसे दीर्घ सन्धि कहते हैं। जैसे—हिम+आलय=हिमालय। कवि+इन्द्र=कवीन्द्र।

जिस मे अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनो को मिलाक 'ए', उ या ऊ हो तो 'ओ' और 'ऋ' हो तो 'अर्' हो जाता उसे गुण सन्धि कहते हैं। जैसे-धर्म=इन्द्र+धर्मेन्द्र। सूर्य+उदय=सूर्योदय। सप्त+ऋषि=सप्तर्षि।

जिसमे अ या आ से परे यदि ए या ऐ हों तो दोनों स्थान मे 'ऐ' और ओ या औ हो तो दोनों के स्थान में 'औ' हो जाता है, यह वृद्धि सन्धि कहलाती है। जैसे—एक+एक=एकैक। सदा+एव=सदैव। वन+औषधि=वनौषधि

जिसमे ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, या ऋ से परे यदि कोई असव (भिन्न स्वर हो तो इ या ई को य् उ या ऊ को व् और ऋ 'र्' हो जाता है उसे यण सन्धि कहते हैं। जैसे—यदि+अपि=यद्यपि। सु+आगत=स्वागत। मातृ+आनन्द=मात्रानन्द

जिस में ए, ओ, ऐ, औ से परे यदि कोई स्वर हो तो को अय्, ओ को अव, ऐ को आय् और औ को आव् हो जाता है उसे अयादि सन्धि कहते हैं। जैसे—ने+अन+नयन। भो+अन=भवन। नै+अक=नायक। भौ+उक=भावुक।

प्रश्न—निम्नलिखित सन्धियाँ किन अवस्थाओं मे होती हैं र् का लोप, विसर्ग को ओ, विसर्ग र् न को ष को द्।

उत्तर - ह्रस्व स्वर के बाद र् से परे यदि र हो तो पहले र् का लोप हो जाता है और ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे—निर्+रस में एक र् का लोप होकर 'नीरस' दीर्घ बन गया है।

विसर्ग को ओ – यदि विसर्ग से पूर्व अ हो और पीछे अ या वर्ग का तीसरा, चौथा पाँचवा अक्षर या य र ल व में से कोई अक्षर हो तो पहले 'अ' और विसर्ग को 'ओ' हो जाता जैसे-यश +अभिलाषी=यशोऽभिलाषी। मन +हर=मनोहर।

विसर्ग को श्-विसर्ग के परे च या छ हो तो विसर्ग को 'श्' हो जाता है। जैसे नि +चय=निश्चय।

न को ण— ऋ, र और ष से परे न को ण हो जाता है, वर, कवर्ग, पवर्ग अनुस्वार और स य में से किन्हीं वर्णों के बीच में आ जाने पर भी 'न' को 'ण' हो जाता है। जैसे--राम अयन=रामायण। प्र +मान=प्रमाण।

त् को द्‌ त के आगे यदि कोई स्वर, ग घ, द, ध, ब, भ अथवा म, र, व म स कोई अक्षर हो तो 'त्' को 'द्' हो जाता है। जैसे—जगत् + ईश=जगदीश। भगवत्=भक्ति=भगवद्भक्ति।

प्रश्न--नीचे लिखे शब्दों में सन्धिच्छेद करो—नवोदन, सच्चिदानन्द पयोधर, रथीन्द्र, अत्युत्तम, निष्कलंक, राजेन्द्र, निर्मल, सज्जन, सत्यानन्द।

उत्तर—नवोदन=नव+ओदन। सच्चिदानन्द=सत्+चित्+आनन्द, पयोधर=पय +धर। रथीन्द्र=रथी+इन्द्र। अत्युत्तम=अति+उत्तम। निष्कलंक+नि +कलंक। राजेन्द्र=राज+इन्द्र। निर्मल=नि +मल। सज्जन=सत्+जन। सत्यानन्द=सत्य+आनन्द।

प्रश्न—नीचे लिखे शब्दों में सन्धि करो।

रमा + ईश । यश + दा । दिक् + विजय । स्व + छन्द। वहि + मुख । उत् + चार ।

उत्तर—रमा + ईश = रमेश । यश + दा = यशोदा । दिक् + विजय = दिग्विजय । स्व + छन्द = स्वच्छन्द । वहि + मुख = वहिर्मुख । उत् + चारण = उच्चारण ।

सन्धि और संयोग में तथा सन्धि और समास में क्या अन्तर है ?

उत्तर—सन्धि और संयोग में यह अन्तर है कि संयोग में अक्षर केवल मिल जाते हैं पर बदलते नहीं, किंतु सन्धि उच्चारण के नियमानुसार एक में या दोनों अक्षरों में परिवर्तन हो जाता है और कभी-कभी दोनों अक्षरों की जगह उनसे भिन्न कोई तीसरा अक्षर आ जाता है। इसके अतिरिक्त संयोग व्यञ्जन—व्यञ्जनों में ही होता है। स्वरों में संयोग नहीं होता, पर संधि स्वर और व्यञ्जन दोनों में ही होती हैं।

सन्धि और समास में अंतर यह है कि समास में दो या दो से अधिक पद परस्पर मिल कर एक पद बन जाता है। उनके बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है। पर संधि में एक या दो अक्षरों में ही मिल कर विकार उत्पन्न होता है।

प्रश्न—वाक्य-रचना में किन-किन बातों का विचार किया जाता है ?

उत्तर—वाक्य—रचना में मेल, क्रम और प्रयोग इन तीन बातों पर विचार किया जाता है।

प्र०—कर्ता और कर्म के साथ क्रिया के मेल के क्या नियम हैं ?

उ० [१] जब कर्ता विभक्ति रहित है तो क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष उसी के अनुसार होते हैं। जैसे—मैं रोटी खाता हूँ, हम रोटी खाते हैं।

[२] यदि वाक्य मे एक ही लिंग, वचन तथा पुरुष के कई विभक्ति-रहित कर्ता 'और' या इसी अर्थ के किसी अन्य योजक अव्यय से जुडे हुए हो तो क्रिया उसी लिंग के बहुवचन मे होगी। जैसे—मोहन और सोहन पढते हैं। सीता और सावित्री खेल रही है, इत्यादि।

[३] विभक्ति-रहित अनेक अप्राणिवाचक कर्ताओ से यदि एक वचन का ही अर्थ निकले तो कई कर्ता होने पर भी क्रिया एक वचन मे ही रहती है। जैसे —इस बाढ में मेरी खेती, घर, द्वार माल-असबाब, सब ही बह गया, इत्यादि।

[४] यदि भिन्न-भिन्न लिंगों के विभक्ति—रहित एकवचन कर्ता 'और' या इसी तरह के किसी अन्य योजक अव्यय से जुड़े हों, तो क्रिया प्राय पुँल्लिग और बहुवचन में होती है। जैसे—जब मैं वहाँ पहुचा तब राम और शकुन्तला खेल रहे थे। इस राज्य में बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं। इत्यादि।

(५) यदि भिन्न-भिन्न लिंगो के विभक्ति – रहित कर्ता बहु-वचन में हों तो क्रिया होगी तो बहुवचन में पर उसका लिंग अन्तिम कर्ता के अनुसार होगा। जैसे—प्रतिवर्ष हज़ारों

और पुरुष सूगी अर्दर्स से किताबें खरीदते हैं या हजारों पुरु और स्त्रिया सूगी अर्दस से किताबें खरीदती हैं।

(६) यदि भिन्न भिन्न लिंगो के विभक्ति--रहित कर्ता भिन्न भिन्न वचनो मे हो तो क्रिया बहुवचन में होगी और उस का लिंग अन्तिम कर्ता के अनुसार होगा। जैसे-वहा दो गौए और बहुत से घोडे चर रहे थे। वहा एक बैल, दो घोडे और बहुत सी गौए चर रही हैं। ऐसी जगह प्राय पुल्लिग और बहुवचन कर्ता अन्त में रहता है।

(७) भिन्न कर्ताओ में विभाजक शब्द होने पर क्रिया अन्तिम कर्ता के अनुसार होगी। शामू की बकरिया या बुद्धू का बैल बिकेगा। बुद्धू का बैल या शामू की बकरिया बिकेंगी।

८ सन्दिग्ध लिंग में क्रिया कर्ता के साथ आती है। जैसे— आज कौन आया था ?

९ कुछ शब्दों का केवल बहुवचन में ही प्रयोग होता है जैसे--प्राण पखेरू उड़ गए।

(१०) एक वाक्य में निर्विभक्तिक भिन्न भिन्न पुरुष कर्ता होने पर क्रिया उच्च पुरुष के साथ होगी। जैसे—हम और तुम जायेंगे वह और तुम जाओगे। अन्य पुरुष की अपेक्षा मध्यम और मध्यम की अपेक्षा उत्तम पुरुष उच्च होते हैं।

११ यदि कर्ता विभक्ति युक्त हो और कर्म एक से अधिक हों तो क्रिया निर्विभक्तिक कर्म के साथ आती है। राम ने गरीब बालक को पुस्तकें दी।

(१२) यदि कर्ता और कर्म दोनों विभक्ति सहित हो तो क्रिया का मेल किसी से नहीं होता, वह सदा एक वचन पुल्लिंग और

प्रथम पुरुष में रहती है। जैसे—राजाओं ने मंत्रियों को बुलाया या राजा ने मंत्री को बुलाया।

(१३) जब क्रिया का कर्म न हो सके। उसे भाव वाच्य में। या कर्म लुप्त हो तो सविभक्तिक कर्त्ता की क्रिया एक वचन, पुंलिंग तथा प्रथम पुरुष में आती है। जैसे—इतनी रात गये भी मुझ से सोया नहीं जाता। मैं डरता था।

(१४) कुछ शब्दों का केवल बहुवचन में प्रयोग होता है। अतः उन के साथ क्रिया भी बहुवचन में ही आती है। जैसे—राम के वियोग में महाराज दशरथ के प्राण निकल गये।

प्रश्न—वाक्य- विभाग किसे कहते हैं?

उत्तर—वाक्य-विभाग व्याकरण का वह भाग है, जिस में व्याकरण-सिद्ध पदों से मेल, क्रम, अनुक्रम रोज़मर्रा तथा वाग्धारा मुहाविरा के अनुसार वाक्य बनाने का वर्णन हो।

प्रश्न—यदि एक ही वाक्य में भिन्न भिन्न पुरुषों के विभक्ति रहित कर्त्ता हों तो क्रिया किस पुरुष में होगी?

उत्तर—ऐसे स्थान पर क्रिया किसी उच्च व्यक्ति के अनुसार होगी। उत्तम पुरुष को सब से ऊंचा समझा जाता है, मध्यम पुरुष दूसरे स्थान पर और अन्य पुरुष तीसरे स्थान पर। जैसे हम और तुम बढ़ेंगे या तुम और हम बढ़ेंगे।

प्रश्न—'रोज़मर्रा' किसे कहते हैं और 'मुहाविरा' तथा लोकोक्ति किसे? परिभाषा कर के उदाहरण भी दो।

उत्तर—अपनी मातृ भाषा में लोग अपनी नैत्यिक बोल चाल में जिस रीति से वाक्य रचते हैं, उसे रोजमर्रा या अनुक्रम कहते

हैं। जैसे--'पचास मील की यात्रा' साइकिल द्वारा '५-७' घंटे अधिक की नहीं।

इस वाक्य में ५-७, का प्रयोग अनुक्रम के अनुसार किया गया है। यदि कोई इस के स्थान पर ६-८ कहे तो व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध होते हुए भी अनुक्रम-विरुद्ध होने के कारण वह वाक्य अशुद्ध समझा जायगा।

रचना में शब्द एक ही प्रकार के होने चाहिए। यथा—मैं उस से बखूबी परिचित हूँ। इस वाक्य में 'बखूबी' के स्थान में 'भलि भाति' उपयुक्त है।

वाग्धारा या मुहाविरा उसे कहते हैं जो अपने सामान्य अर्थ को त्याग किसी विलक्षण अर्थ में प्रयुक्त हो। जैसे--खोली कहा न पोल ढके ढोंग ढोल की॥

(ढोल की पोल खोलना, आडम्बर को—रहस्य को प्रकट कर देना)

लोकोक्ति वह, प्रचलित वाक्य या वाक्यांश हैं जिन से उन के विलक्षण अर्थ द्वारा किसी सच्चाई का बोध होता है जहां काम भी सिद्ध हो जाए और हानि भी न उठानी पड़े।

प्रश्न—निम्न मुहावरों और लोकोक्तियों को अपने वाक्यों में लिख कर समझाओ।

मुहाविरे

१—आंच न आने देना।
२—ईद का चांद होना।
-—अंधेरे का उजाला।

लोकोक्तिया

(ख) १—भागते चोर की लगोटी ही सही।

२—मान न मान मैं तेरा महमान।

३—बासी बचे न कुत्ता खाय।

उत्तर १—आप निश्चिन्त रहे। मैं आप पर तनिक भी आन्च आने दूंगा।

२—आज कल तो आप बिलकुल ईद के चाद हो गये हैं कि दिखाई नहीं देते।

३—अकेला सोहन ही उस अधेरे घर का उजाला था।

(ख) १ जहा से कुछ मिलने की आशा न हो वहा से जो मिल जाए वही अच्छा है।

२—जबर्दस्ती किसी के गले पडना।

३—कोई काम समाप्त कर के निश्चिन्त हो जाना।

(इसी प्रकार मुहावरों के प्रश्न आ सकते हैं। विशेष परिचय प्राप्त कर लेने के लिए अपने पाठ्य पुस्तक में देखो।

प्रश्न वाक्य विग्रह किसे कहते हैं?

उत्तर वाक्य के शब्दों को भिन्न भिन्न कर के एक दूसरे के साथ उन का सम्बन्ध दिखलाने को वाक्य-विग्रह कहते हैं।

प्रश्न—निम्नलिखित वाक्यो में पदो के क्रम को ठीक करो।

१ बैठी छत खुली पर खा रही हवा रामेश्वरी थी।

२ खेल रहे थे दोनो बच्चे दौड दौड छत पर।

३—बडा भला मालूम खेलना कूदना हो रहा था उन बच्चों का रामेश्वरी को।

उत्तर १ रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा खा रही थी।

२—दोनों बच्चे छत पर दौड़ दौड़ कर खेल रहे थे।

३—रामेश्वरी को इन बच्चों का खेलना कूदना अच्छा मालूम होता था।

प्रश्न—उद्देश्य कितने प्रकार के होते हैं और कौन से ?

उत्तर—१-संज्ञा—जैसे—मुनीश्वर ने अपने मनोरंजन के लिए व्याकरण लिखो।

२—सर्वनाम-जैसे वह आई।

३—विशेषण-जैसे गाने वाले गाते हैं।

४—वाक्यांश-परोपकार करना पुण्य है।

प्रश्न—वाक्य-विग्रह कितने प्रकार के होते हैं उनके नाम लिखो परिभाषा भी लिखो।

उत्तर—वाक्य के खंड दो होते हैं (१) उद्देश्य (२) विधेय।

उद्देश्य उसे कहते हैं जिस के सम्बन्ध में कुछ कहा जाय।

विधेय उसे कहते हैं जो उद्देश्य के सम्बन्ध में कहा जाए। जैसे—बालक खेलता है इस मे 'बालक, उद्देश्य है और उसके सम्बन्ध में कहा गया 'खेलता है', विधेय है।

प्रश्न—रचना के अनुसार वाक्य के कितने भेद होते हैं लक्षण सहित लिखो।

उत्तर—रचना के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

[१] सरल या साधारण [२] मिश्रित [३] सयुक्त।

[१] जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय होता है उसे 'सरल वाक्य' कहते हैं। जैसे—'राम खेलता है'। इसमें 'राम' यह एक उद्देश्य है और 'खेलता है' विधेय है।

[२] मिश्रित वाक्य उसे कहते हैं। जिस वाक्य में एक प्रधान

वाक्य हो और उसके आश्रित एक या अधिक उपवाक्य होते हों जैसे—'मैंने सुना है कि वह यहाँ पहुँच गया है' यह आश्रित या मिश्रित वाक्य है।

[३] संयुक्त वाक्य उसे कहते हैं जिसमें दो या दो से अधिक सरल अथवा मिश्रित वाक्य एक दूसरे पर आश्रित न हो कर मिलते हैं। जैसे स्नान से शरीर शुद्ध होता है और ध्यान से मन शुद्ध होता है। दोनो सरल वाक्य हैं। वह आया था पर यह कह कर चला गया कि जब हत्यारे का पता लगा लूँगा तभी विश्राम लूँगा। इसमें 'वह आया था' 'सरल-वाक्य' है और 'कह कर ... विश्राम लूँगा।' यह मिश्रित वाक्य है दोनों के मेल से बना हुआ वाक्य संयुक्त वाक्य कहलायेगा।

प्रश्न—मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य में क्या भेद है?

उत्तर—मिश्रित वाक्य मे एक वाक्य प्रधान होता है और दूसरे सब अप्रधान। किन्तु संयुक्त वाक्य में सब वाक्यांश ही प्राय स्वतंत्र (एक दूसरे के आश्रित नहीं) होते हैं, यही इनमें भेद है।

प्रश्न—निम्न लिखित वाक्य का पद परिचय दो।

[१] जो परिश्रम करेगा, वह परीक्षा मे अवश्य सफल हो जायेगा

उत्तर—जो सम्बन्ध वाचक सर्वनाम, पुँल्लिंग, एक वचन कर्त्ता कारक, 'करेगा' क्रिया का कर्म है।

करेगा—सकर्मक क्रिया, कर्तृ-वाच्य, भविष्यत काल (सामान्य भविष्यत्), प्रथम पुरुष, एक वचन पुँल्लिंग 'जो' इसका कर्ता है और 'परिश्रम' कर्म है।

वह—सम्बन्ध वाचक सर्वनाम (जो का नित्य सम्बन्धी)

एक वचन, कर्ता कारक, 'दास हो जायगा' क्रिया का विशेषण।

परीक्षा में—जाति वाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एक वचन अधिकरण कारक।

पास हो जयगा—संयुक्त क्रिया, अकर्म, कर्तृवाच्य, भविष्य काल, प्रथम पुरुष 'पुँल्लिग, एक वचन, 'वह इस का कर्ता है।

प्रश्न—विराम चिन्ह किसे कहते हैं और ये कितने प्रकार के अलग नाम लिख कर समझाइए ?

उत्तर—वाक्य के उच्चारण करते समय भाव को अच्छी प्रकार प्रकट करने के लिये जहाँ जिह्वा थोडी देर विश्राम लेती है, उस विश्राम के सूचक चिह्न को 'विराम' कहते हैं। इसके लिये भिन्न भिन्न चिह्न नियत किये गये हैं। मुख्य चिह्न ये हैं—

१-अल्प विराम ,	२-अर्ध विराम ;
३-अपूर्ण विराम	४-पूर्ण विराम .
५-प्रश्न बोधक ?	६-विस्मय बोधक !
७-निर्देशक —	८-योजक -
९-कोष्ठ ( )	१०-उद्धरण ' "
११-लाघव चिन्ह ०	

प्रश्न—निम्न लिखित वाक्य में विराम चिन्ह लगाओ।

"नीति निपुण जन नन्दा करें चाहे स्तुति लक्ष्मी रहें या नहीं आज ही मृत्यु आ घेरे य युगान्तर मे पर धीर जन पुण्य-माग से विचलित नहीं होते।"

उत्तर—"नीति-निपुण जन निन्दा करें चाहे स्तुति, लक्ष्मी रहे या न रहे आज ही मृत्यु आ घेरे या युगान्तर में, पर धीर जन पुण्य-मार्ग मे विचलित नहीं होते।"

'इमी प्रकार अनेक प्रश्न आ सकते हैं'

प्रश्न—निम्न लिखित सदर्भ को शुद्ध रूप से लिखो।'

में पीता जी को परिनाम करके वैठ गया, उनों ने पियारु पूरवक मुझ से पूछा "बटा इतने दिन कहाँ बीताये सच सच्च बताओ।

उत्तर—मैं पिता जी को प्रणाम करके बैठा गया, उन्हों ने प्यारपूर्वक मुझ से पूछा "बेटा, इतने दिन कहाँ बिताये, क्या बात है सच सच बताओ ?"

(इसी प्रकार के अनेक प्रश्न आ सकते हैं विद्यार्थी इस से ही विचार लें।)

प्रश्न—रिक्त स्थानो को पूर्ति करो, मित्र इस तो तुम के चाद ही हो गये। दहली क्या गये लण्डन चले । एक पत्र का नहीं देते।

उत्तर—मित्र! इस वार तो तुम ईद क चाँद हो गए। देहली क्या गये लण्डन चले गये पत्र तक का उत्तर नहीं देत।

(ऊपर का प्रश्न सकेत के लिये ही दिया है। ऐस प्रश्न होते हैं)



द्वितीय पत्र

कविता

प्रश्न—हिंदी कविता का सक्षिप्त इतिहास लिखो।

उत्तर—हिन्दी-साहित्य में कविता का भी प्रमुख स्थान है। हिन्दी को लोकप्रिय करन में इस का भी बहुत बडा हाथ है। हिन्दी मे कविता का प्रारम्भ वीरगाथाओ से हुआ। वीर-गाथा-

काल की कविता प्राय तत्कालीन राजाओ की प्रशसा ही म लिखी गई थी । उससे भारत की सस्कृति एव सभ्यता की रक्षा करने में बहुत सहारा मिला । छन्द शास्त्र की दृष्टि से तत्कालीन कविता महत्वपूर्ण नहीं कही जा सकती । पहले कविता प्राय वर्ण वृत्तों एव सस्कृत छन्दों में ही होती थी मात्रिक छन्दो मे रचना करना सरल होता है, इसलिए इस समय के अधिकाश कवियों ने वार्णिक छन्दों के बजाय मात्रिक छन्द को ही अपनाया । उन मे भी सवैया, दोहा, चौपाई घनाक्षरी कवित्त आदि अधिक लोकप्रिय हुए । इतिहास की दृष्टि से वीर गाथा-काल की कविता महत्व-पूर्ण कही जा सकती है ।

वीरगाथा के पश्चात् भक्ति काल आता है । इस में भक्ति रस से पूर्ण कविताए होने लगीं और सभी हिन्दू मुस्लि कवियों ने इस ओर पर्याप्त ध्यान दिया । इस कविता को ह दो धाराओं में विभक्त कर सकते हैं । १—निर्गुण । २ सगुण मुसलमान सगुणोपासना के विरोधी थे । इस कारण स कवियों ने निराकार भगवान की भक्ति का प्रचार किया । य मार्ग हिन्दू और मुसलमान सभी कवियों ने अपनाया । हिन्दु से अधिक मुस्लिम सन्तों अथवा सूफियों ने इस धारा को औ भी आगे बढाया । निराकार की उपासना का भाव मनुष्य क भक्ति क्षेत्र में तो पहुचा देता है, किन्तु उस से मनुष्य को पू शान्ति नहीं मिलती । इस से भारत में कुछ कवियों के प्रया से सगुण धारा का विकास हुआ । इस को आगे लाने में सूरदा थे । सूरदास ने भक्ति क्षेत्र मे भटकते हुए प्राणियों के साम भगवान का साँवला सलोना रूप लाकर खडा कर दिया

भगवान की बाल-लीला किस का मन नहीं मोह लेती ? इस लिये अधिकांश जनता इसी ओर तीव्रगति से बढ़ी । भारत के कोने कोने में कृष्ण-भक्ति की लहर बह गई । कृष्ण-भक्ति के साथ उस में माधुर्य भाव बढ़ते बढ़ते लोगों के मन में राधा की मन मोहिनी मूर्ति ने भी घर कर लिया । फल यह हुआ कि कृष्ण भक्ति के साथ राधा की भक्ति भी आगई । इस से भारत में लाभ होने के स्थान में हानि ही दिखलाई दी । इस हानि की पूर्ति के गो० तुलसीदासजी ने राम भक्ति का प्रचार कर अद्भुत कार्य किया । वे रामभक्त होने के साथ साथ सुधारक भी थे । उन के रामचरित मानस से भक्ति भावना के साथ साथ अज्ञानतिमिराच्छादित संसार को प्रकाशित-पथ दिखलाकर लोक धर्म की अपूर्व शिक्षा दी ।

समय बदलते देर नहीं लगती । इस भक्ति के साथ-साथ शृंगार रस ने भी अपना प्रभुत्व स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया । सांसारिक कवियों की कल्पना में भी अनेक नायिकायें नृत्य करने लगीं । फल यह हुआ कि सूरदास के राधाकृष्ण भी इन्हीं कवियों के नायक नायिका बनकर रह गये । लौकिक शृंगार की धारा प्रबल हो उठी और तब शृंगारी कवि ही दृष्टिगोचर होने लगे । इस काल को इतिहास-कारों ने, रीति काल के नाम से पुकारा है । इस काल में वास्तव में हिंदी-साहित्य की बहुत वृद्धि हुई । कविता और कला की दृष्टि से इस काल के कवियों ने अभिनन्दनीय कार्य किया । पर भारतीयों ने उन की उस चमत्कृति पूर्ण रचना से लाभ न उठा कर विलासिता में डूब कर अपनी वीरता और भक्ति को तिलांजलि दे दी ।

जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं कि समय को बदलते
र नहीं लगती । इस काल के बाद फौरन ही हिन्दी-कविता
ली ने पलटा खाया और उसकी भाषा एक दम ही बदल गई।
गैर उसे ही आधुनिक काल के नाम से पुकारा जाने लगा।
रतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इस युग की नींव को प्रतिष्ठापित किया
गैर देश-प्रेम, जाति-प्रेम को कविता का विषय बनाया ।
छ काल के पश्चात ही इस में छायावाद, हालावाद, समाजवाद
गदि अनेक वादों की बाढ़ आगई। आजकल प्राय सभी वाद
ंग्रेजी साहित्य से प्रेरणा पाकर पनप रहे हैं । हिंदी-कविता
ही भी बहुत कुछ अंगरेजी स्टाइल से प्रेरित हुई है। और
सी का परिणाम है कि आज हिंदी-कविता प्राय लिरिक, गीतों
हो लिखी जाने लगी है। इन सब बातों के अतिरिक्त आज एक
गैर वाद ने हमारे हिंदी-साहित्य में प्रवेश किया है और वह है
गतिवाद । प्रगतिवाद के अन्तर्गत मनुष्य सरल से सरल
ग से गम्भीर वस्तु को प्रतिपादित करने का प्रयत्न करता हैं।
सकी कविताएँ आज प्राय मुक्त वृत्त में ही हो रही हैं। हमने
क्षेप से हिंदी-कविता के विकास के विषय में लिख दिया है।
विशेष जानने के लिये पुस्तक की भूमिका को आद्योपात मनन
र्वक पढ़िये।

प्रश्न—काव्य मंदाकिनी के पद्यों में निर्दिष्ट समस्त पौराणिक एवं धार्मिक तथा अन्तर्कथाओं का संक्षिप्त दिग्दर्शन कराइये।

उत्तर—'काव्य मन्दाकिनी' के समस्त पद्यों एवं कविताओं में आई अन्तर्कथाओं का उल्लेख हम यहां अत्यंत संक्षेप रूप

से करेंगे। साथ ही रचनाओं के पृष्ठ का उल्लेख भी विद्यार्थि
के लाभार्थ कर रहे हैं, जिस से छात्रों को उन्हें अपनी मूल पुस्
देखने मे सुविधा हो। सब से पहली अन्तर्कथा 'कबीर के प
मे पृष्ठ ७० पर पहली पंक्ति 'कर्म गति टारे नहीं टरी, शी
पद में है, । वह है—

सत्यवादी हरिश्चन्द्र

यह राजा सूर्य वंश में पैदा होकर अपनी सत्यपरायणा
के लिये प्रसिद्ध है । उसने स्वप्न मे ही पृथ्वी दान दी थ
फलत विश्वामित्र क आग्रह पर अपने वचन को पूरा कर
के लिये समस्त साम्राज्य उसने द दिया था, विश्वामित्र ने दा
की दक्षिणा मे ७० हजार स्वर्ण मुद्रा और माँगी थीं, जि
हरिश्चन्द्र ने अपने कुमार—अपनी पत्नी और अपने आप
काशी में बेच कर पूरा किया था। श्मशान में अपने पुत्र रोहि
की मृत्यु पर अपनी स्त्री से वस्त्रहीनावस्था में भी कर-स्वरू
उसकी आधी साडी लेने पर विश्वामित्र का आविर्भाव हु
था। विश्वामित्र ने प्रसन्न होकर उसका सारा राज्य लौटा द
उन्हें कई प्रकार के शुभ आशीर्वाद दिये थे।

वलि (पृष्ठ १६)

(पृष्ठ संख्या मूल पुस्तक की ही है)

दैत्यराज वलि की कथा पौराणिक कथा है। दैत्यो में
एक बड़े दानी राजा हो गये हैं उसकी दान वीरता को देख
इन्द्र को अपने राज्य के प्रति डर हो गया था, देवताओं
हित के लिये वामन ने ब्रह्मचारी के रूप में जाकर भीख माग
थी । अपने गुरु शुक्राचार्य के मना करने पर भी वलि

ामन की याचना पूरी करने के लिये उन्हें तीन डग पृथ्वी देने का वचन स्वीकार कर लिया, किन्तु धरती नापने के समय वामन ने विराट रूप धारण कर दो डग ही में उसके सारे संब्राह्म को ले लिया था। वलि ने अपनी दान-वीरता से प्रेरित होकर तिसरे डग को अपनी पीठ पर रख कर पूरा किया था।

नृग (पृष्ठ १६)

उनकी भी कथा पौराणिक है। ये भी ए। प्रसिद्ध दानी । गये हैं। नित्य हज़ार गौएँ दान किया करते थ। भूल से सी दिन पहले एक वार की दी गई गाय, दी जाने वाली गाओं समूह मे मिल गई। फलत वह भी दान द दी गई। जब उस ाय के पहले स्वामी को यह बात ज्ञात हुई तो उस गाय लिये दोनों ब्राह्मणों में झगड़ा होने लगा, बात राजा तक हुंची। नृग भी धर्म संकट में पड़ गया। उसने दोनों मे से प्रत्येक उस गाय के बदले उनको अन्य गौए लेने के लिये और झगड़ा मात कर देने की अपील की किंतु कुछ तय न हो पाया–उसी ाप के प्रति दूसरे जन्म में नृग को गिरगिट होना पड़ा, जिसे ृष्ण ने मोक्ष दिया था।

हिरण्य-कश्यप (पृष्ठ ४६ पंक्ति ८)

यह दैत्य वंश का एक पराक्रमी राजा हो गया है भागवत अनुसार उसका उद्धार तीन जन्मों के बाद हुआ है। उसी को एक जन्म में रावण बनना पड़ा था। यह शिव का भक्त और ेष्णु तथा वैष्णव सम्प्रदाय का विरोधी था–पर इसका पुत्र ा वैष्णव निकला। अपने पुत्र पर शासन करने और अपने ्चार के अनुसार प्रह्लाद का सुधार करने की इसने सभी कोशिशें

की थीं। अन्त में दण्ड का भी सहारा इसे लेना पड़ा। यह अपने पुत्र को वध करने के लिए उसे खम्भे में बाध कर तलवार का वार करने वाला था कि खम्भे से ईश्वर का नृसिंह रूप में अवतार हुआ जिसके द्वारा इसका वध हुआ था।

गजेन्द्र-मोक्ष (पृ० ४६)

प्राचीन काल में हूहू नाम का गन्धर्व था, जो शाप-वश पुनर्जन्म में गजराज हुआ था यह एक बार अपने साथी हाथी हथनियों के साथ पानी पीने के लिए नदी में गया था कि वहीं मगर ने इसे पकड़ लिया। गज और ग्राह में घोर युद्ध हुआ। अन्त में गज हार गया। वह डूबने ही वाला था कि अपनी रक्षा का और कोई उपाय न देख कर उसने नारायण को पुकारा। नारायण ने अपने वाहन को त्याग कर नगे पाव उसके यहा पहुच कर उसका उद्धार किया था। गज-ग्राह-युद्ध का स्थान आज कल सोनपुर नाम से पुकारा जाता है।

अजामिल (पृ० ४७)

यह कन्नौज का रहने वाला एक ब्राह्मण था। उसकी प्रीति एक दासी से थी। उसी दासी के दसवें पुत्र का नाम नारायण था। वह बड़ा चोर, डाकू और कपटी था, मरते समय यमदूतों की यातना से रहम करने के लिये अपने छोटे पुत्र नारायण को 'नारायण कहकर इसने पुकारा था। नारायण स्मरण के कारण नारायण उपस्थित होकर यमदूतों से इसकी रक्षा करके इसे वैकुण्ठ धाम ले गये थे।

कुब्जा (पृ० ४६)

यह कस की एक दासी थी जो अग से कुबड़ी थी।

कृष्ण जी कंस के निमन्त्रण पर मथुरा गये उस समय कुब्जा ने कृष्ण को उनके आग्रह पर उन्हें चंदन लगाया था, फलत कृष्ण ने उसकी ठोटी पकड कर उसे सीधा कर दिया था।

शबरी (पृ० ४७)

पम्पासर के निकट एक मतङ्ग ऋषि रहते थे, उन्हीं के आश्रम में शबरी नाम की एक भीलनी रहती थी। ऋषि की इसपर बडी दया-कृपा थी। जब ऋषि परम धाम जाने लगे तो शबरी ने भी साथ जाने का आग्रह किया। ऋषि ने उसे समझाया कि श्री रामचन्द्र जी वन में आने वाले हैं। वे यहा भी आवेंगे। तू यहीं रह और उनका सत्कार करके यशाधिकारिणी बनना। वह रामचन्द्रजी की प्रतीक्षा में रह गई। जब रामचन्द्रजी शबरी के यहाँ गये तो प्रेम में मग्न होकर चखे हुए मीठे बेर उसने श्रीराम को खिलाये थे।

ध्रुव (पृ० ५३)

यह मनु का नाती और राजा उत्तानपाद का पुत्र था। उसकी विमाता के साथ जब उत्तानपाद बैठे थे तभी यह उनकी गोद में चढने लगा था। विमाता ने उसे झिडक कर कहा था-हट, तू इस गोद में बैठने का अधिकारी नहीं। इस अधिकार के लिये मेरे गर्भ से तुझे पैदा होना चाहिये था और उसे गोद से उतार दिया। बच्चा रोता हुआ अपनी माता के यहा आया। माता ने ईश्वर-भजन का उपदेश दिया। उसी अवस्था में ध्रुव ने कठिन तपस्या करके भगवान को प्रसन्न किया। फलत जीते तो अपना राज्य किया मरने पर भी अचल सिंहासन पाया। तारों में ध्रुव तारा उसी का नाम बतलाते हैं।

गोवर्द्धन पर्वत उठाना (पृ० ५३)

व्रजवासी प्रतिवर्ष कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को इन्द्र की पूजा या करते थे। कृष्ण ने एक बार अपने पिता नन्द से कहा कि इन्द्र कारण पानी नहीं बरसता है। अन्न मिलना, गौओं के लिये रागाहें आदि प्रकृति की देन हैं न कि इन्द्र की। गोवर्धन पहाड हमारी गौओं का और हमारा कल्याण होता है। भला हो हम लोग गोवर्धन की ही पूजा करें। कृष्ण के आदेशानुसार न वर्ष गोवर्धन की ही पूजा की गई। फलतः इन्द्र को क्रोध गया और यह कहकर कि एक छोकरे के कहने से हमारा ग एक जड पहाड को दिया गया, यह उचित नहीं, मेघों नन्द का गर्व तोडने के लिये आज्ञा दी कि जाओ, व्रज डुबा दो। मेघों ने एक सप्ताह तक घनघोर वृष्टि करके नाश टव दृश्य उपस्थित कर दिया। व्रज को डूबता सा जान ष्ण ने गोवर्धन पहाड मात्र को अपने बाए हाथ की लघु उँगली पर ा कर व्रज की रक्षा की थी। गोवर्धन पहाड की छत्र छाया में ज का बाल बाका न होता हुआ देखकर इन्द्र का ही गर्व र हो गया। वह कृष्ण के यहाँ आया और क्षमा याचना की।

पाडव (पृ० ५६)

महाभारत युद्ध समाप्त हो जाने पर पाडवों ने अश्वमेध ज्ञ किया था। बहुत वर्ष राज भोगने के पश्चात् अभिमन्यु के त्र परीक्षित को राज्य-भार सौंप, स्वयं हिमालय चले गये थे। हाँ एक-एक करके द्रौपदी, भीम, नकुल, सहदेव और अर्जुन ल गये थे।

परशुराम (पृ० ७०)

एक बार जमदग्नि ऋषि की पत्नी रेणुका स्नान क
नदी गई हुई थी। वहां उसे राजा चित्ररथ को अपनी स्त्री
के साथ जल-क्रीड़ा करते हुए देख कर कामवासना उत्पन्न हो
गई थी, उसने आकर अपने पति से इच्छा पूरी करने को
था। जमदग्नि को उसकी बातों पर क्रोध आ गया और उन्होंने
अपने चारों पुत्रों में से क्रम से सभी को अपनी माता
वध करने की आज्ञा दी थी। परशुराम ने अपनी कुल्हाड़ी
अपनी माता का सिर काट दिया था, अब ऋषि ने परशुराम
के कार्य पर प्रसन्न होकर वर मांगने को कहा तब परशुराम
ने अपनी माता को जिला देने का वरदान मांगा। फलतः माता
जीवित हो गई।

ययाति (पृ० ७०)

यह एक चन्द्रवंशीय राजा था, इसकी शादी शुक्राचार्य
देवयानी से हुई थी, दहेज में शर्मिष्ठा दी गई थी। शुक्राचार्य ने
कन्या ने कहा था शर्मिष्ठा से भोग न करना। शर्मिष्ठा जब ऋतु
अवस्था पर पहुंची तो उसने ऋतु रक्षा की प्रार्थना की। अ
ययाति ने उसके साथ भी संभोग किया। शर्मिष्ठा के प
पुत्र भी हुआ। जब यह बात शुक्राचार्य को ज्ञात हुई तो उन्हें
शाप दिया कि तुम बूढ़े हो जाओ। ययाति की प्रार्थना
ऋषि ने कहा कि भाई, कोई तुम्हारा बुढ़ापा ले लेगा तो
पुनः पूर्ववत् हो जाओगे। उन्होंने अपने सारे पुत्रों से अपना
बुढ़ापा लेने को कहा। शर्मिष्ठा से उत्पन्न पुत्र ने अपनी जवानी
पिता को देकर स्वयं बुढ़ापा ग्रहण किया था। ययाति पु

नन प्राप्त कर हजार वर्ष तक सुख भोग कर अन्त में अपने को राज्य देकर तपस्या करके स्वर्ग गया।

तुलसी (पृष्ठ ८०)

तुलसी नाम की गोपी गोलोक में राधा की सखी थी। दिन राधा ने तुलसी को कृष्ण के साथ प्रेम करते हुए देख उसे शाप दिया था कि तू मनुष्य शरीर धारण कर। शापवश धर्मध्वज की कन्या हुई। तुलसी ने तपस्या करके वर मांगा कृष्ण मेरे पति हों। ब्रह्मा के आदेशानुसार शंखचूड नामक त से तुलसी ने शादी की। शंखचूड को वरदान था कि जब उसकी पत्नी भ्रष्ट नहीं हो जाती वह किसी के द्वारा मारा जा सकता। शंखचूड के निधन के लिये विष्णु भगवान तुलसी का सतीत्व, शंखचूड का रूप धारण करके भ्रष्ट था। जब तुलसी को भगवान का छल ज्ञात हुआ तो पत्थर हो जाने का शाप दिया। फलत वे ही शंकर के रूप में पूजे जाते हैं। जब तुलसी का क्रोध उतरा तो अपनी पर और शाप पर उसे बहुत खेद हुआ। वह रोने लगी भगवान ने वरदान दिया कि यह शरीर त्याग देने के लक्ष्मी वृक्ष पैदा होगा। उसी समय से शालग्राम पर सी चढ़ाई जाने लगी, आज बहुत लोग शालग्राम और तुलसी शादी करते हैं।

भृगु और भगवान (पृष्ठ १०३)

एक बार देवताओं में इस बात पर प्रश्न उठा कि सब से देव कौन हैं? जाँच के लिये भृगु जी चले। वे प्रथम ब्रह्मा पुन शिव के यहां गये। ये दोनों भृगु के व्यवहार से

विचारों से सहमत नहीं है तो उसने उसे मार डालने के लिए अपनी बहन, होलिका जिसे वरदान मिला था कि वह आग मे जल नहीं सकती, की गोद में प्रह्लाद को बैठा कर चारों तरफ से आग लगा दी। विचार-नीचता के कारण प्रह्लाद की बूआ तो जल गई परन्तु प्रह्लाद अपने पुण्य बल से बच गया था।

प्रश्न काव्य-मदाकिनी में निर्दिष्ट समस्त कवियों का संक्षिप्त जीवन चरित्र सरल और मार्मिक भाषा में लिखिये, जिस में काल-विभाजन भी हो।

उत्तर—'काव्य-मदाकिनी, में उल्लिखित कवि पाँच विभागों में विभक्त किये गए हैं १-प्राचीन काल २ पूर्व माध्यमिक काल ३-माध्यमिक काल ४-उत्तर माध्यमिक काल ५ नवीन काल। इन सब का संक्षेप से जीवन-चरित्र लिखा जाता है—

१—प्राचीन काल

१—कबीरदास

कबीरदास का जन्म संवत् १४५६ में माना जाता है। कुछ लोग इनका जन्म मगहर [बस्ती] बतलाते हैं और कुछ कहते हैं कि काशी के प्रसिद्ध महात्मा स्वामी रामानन्द के आशीर्वाद से एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से ये पैदा हुए थे, किन्तु लोकापवाद के भय से उसने इन्हें जन्म लेते ही काशी के पास लहरतारा में त्याग दिया और अली या नीरू नामक जुलाहे की स्त्री नीमा ने वहीं इन्हें पड़ा पाया और फिर उनको पाला पोसा।

इन्होंने जुलाहे का व्यवसाय ही अपनी जीविका का साधन बनाया। ये संतोषी थे, इन्हों ने रामानन्द को अपना

गुरु बनाया तथा उनके चलाए हुए भक्ति सम्प्रदाय को अंगीकार किया। उस पथ का नाम आज 'कबीर पन्थ' ही पड़ गया है। इसमें हिन्दू मुसलमान सभी होते हैं। परन्तु ये धर्म में न तो हिन्दू ही थे और न मुसलमान। इन्होंने अपने चरित्र और उपदेश द्वारा विचार और आचार की शुद्धता का जो पथ दिखलाया है वह समाज के लिए श्रेयस्कर सिद्ध हुआ है। इनकी मृत्यु ११९ वर्ष की आयु में सम्वत् १५७५ के लगभग हुई थी ऐसा मानते हैं।

२—सूरदास

आप सारस्वत ब्राह्मण रामदास के पुत्र थे आप का जन्म १५४८ वि० में आगरा के समीप एक ग्राम में हुआ था। आप अन्धे थे पर जन्म से ही नहीं, विद्वानों का ऐसा मत है कि आप अपनी वेश्या को त्याग कर सन्यास ग्रहण कर कहीं जा रहे थे कि किसी रमणी को देख आप का मन मचल गया। उसी कारण आप ने अपनी आँखें फोड़ डालीं। वल्लभाचार्य ने आप की शैली और कृष्ण-भक्ति पर आसक्त होकर आप को अपने साथ ही ले लिया और अपना प्रमुख शिष्य बनाया।

आपने भागवत् के आधार पर अपने प्रधान ग्रन्थ सूरसागर की रचना की। आप की भाषा ब्रज है। आप ने अपनी सारी कविताएँ प्राय कृष्ण के ही प्रति की हैं। आप की रचना के स्वरूप सूरस्वरावली और साहित्य-लहरी नामक ही दो ग्रन्थ मिलते हैं। सम्वत् १६४२ में पारसोली नामक ग्राम में आप की मृत्यु हो गई।

"मीराबाई"

मीरा का जन्म १५७३ वि० मे मेवाड में हुआ था आप के पिता का नाम रत्नसिंह था जो मेवाड के अधिपति थे। आपका विवाह राणा सागा के सुपुत्र भोजराज से हुआ था। ७ वर्ष के पश्चात् ही ये विधवा हो गई। भक्त रैदास की भक्ति का आप पर बचपन में ही पड चुका था। कृष्ण भक्त तो पहले ही हो गई थीं। विधवा होते हो कृष्ण-भक्ति में तन्मय हो थी। साधु-सग और कृष्ण भक्ति ही दिन चर्या हो गई। घरवाल ने अपने अज्ञान मे उन्हे गिरते जान कई प्रकार से रोकने की चेष्टा की। विष तक दिया गया, पर सब असफल हुआ, अन्त मे मीरा वृन्दावन चली गई और आजीवन कृष्ण-गान करती रहीं। स्त्री कवियों में मीरा का स्थान सर्व-श्रेष्ठ है। मीरा की कविता में ब्रज, अवधी, गुजराती और राजस्थानी के शब्द प्रयुक्त हैं। मीरा के ग्रन्थ नरसी जी का मायरा और राग गोविंद ये दो ही सुने जाते हैं। सम्वत् १६२० वि० के लगभग मीरा का निधन हो गया।

"तुलसीदास"

आप के जन्म सम्वत् और स्थान के सम्बन्ध में तो विद्वानों में बडा मतभेद है। राय बहादुर श्यामसुन्दर दास बी० ए० के मत से स० १५५५ वि० में राजापुर जिला बांदा मे आत्माराम दुबे (गोत्र पराशर) के यहाँ हुलसी के गर्भ से आप का जन्म हुआ था। मूल नक्षत्र में पैदा होने के कारण माता पिता ने इन्हें त्याग दिया।

इनकी माता की दासी चुनिया अपने ससुराल में इनका पालनपोषण करती रही, जब वह भी मर गई तो बालक भिक्षाटन द्वारा जीवन निर्वाह करता रहा। एक बार कहीं नरहरिदास से उसकी भेंट हुई। वे इन्हें अपने आश्रम में ले गये और राम-कथा का उपदेश दिया। चैतन्य हो जाने पर काशी में शेष सनातन जी के यहा इन्होंने साहित्य का विशेष अध्ययन किया तब ये अपने ग्राम को गए, वहा इनका विवाह भी हुआ।

स्त्री रत्नावली से एक पुत्र भी तारक नाम का पैदा हुआ। जो बचपन में ही मर गया। स्त्री से य विशेष प्रेम रखते थे। एक बार वह पीहर गई थी, ये भी पीछे से पहुँच गये वहीं उस ने फटकार सुनाई फलत ये सयासी हो गए और भारत के प्राय सभी प्रमुख तीर्थों का भ्रमण करके काशी वासी हो गये थे। इन्हों ने अनेक ग्रन्थ रचे हैं, जिनमे रामचरित मानस, कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका बहुत प्रसिद्ध हैं, दोहावली कुण्डलिया, रामायण बरवै रामायण, पार्वती मगल, वैराग्य सन्दीपनी और रामलला नहछू, कृष्ण गीतावली, इस प्रकार आपके अनेक ग्रन्थ हिन्दी-साहित्य को प्राप्त हैं।

कला की दृष्टि से कविता में जो गुण होने चाहिए आप की रचना मे सब पूरे परिमाण में हैं आप सभी विद्वानों के मत से हिन्दी-गगन- के राकाशशि माने जाते हैं। आपने स १६८७ वि० में शरीर त्याग किया। मृत्यु तिथि में भी मतभेद है। श्यामसुन्दर दास की रामायण टीका के जो नागरी प्रचारिणी सभा काशी से प्रकाशित हुई है मत से—

सम्वत् सोलह सै असी असी गंग के तीर।
सावन शुक्ला सप्तमी तुलसी तज्यो शरीर॥
लिखा हुआ है

मृत्यु तिथि श्रावण शुक्ला सप्तमी है। कुछ लेखकों ने लिखा है कि विशेष अध्ययन करने से यह जन्म तिथि ज्ञात होती है।

"रहीम खानखाना"

सम्राट् अकबर के संरक्षक बैरम खां के पुत्र का नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। उनका जन्म १६१० वि० में हुआ। अकबर के नवरत्नों में से एक आप भी हैं। आप संस्कृत-हिन्दी और फारसी के अच्छे पण्डित थे। ये परोपकारी और ऐसे साहित्य प्रेमी थे कि एकबार प्रसन्न होकर गंग को ३६ लाख रुपये दे डाले थे। आप अकबर के पश्चात् जहांगीर के भी दरबार में रहे। जहांगीर ने एक बार राजद्रोह का अभियोग लगा कर आपको कैद कर लिया था। आप की जागीर भी जब्त कर ली। फलतः जब आप जेल से छूटे हुए तब आप का जीवन बहुत कष्ट में बीता। आप का सांसारिक अनुभव बहुत बढ़ा चढ़ा था। इसी लिये आप के दोहों में ज्ञान के साथ नीति का वर्णन कुशलता पूर्वक हुआ है। आप की भाषा अवधी है भक्ति और शृङ्गार पर भी आप ने अच्छा लिखा है। आप की तमाम रचनाओं का संग्रह 'रहीम रत्नावली' नाम से प्रकाशित हो चुका है। आप की मृत्यु १६८२ वि० में हुई।

"विहारी लाल"

हिन्दी में शृङ्गार रस की कविता करने वालो में विहारी

स्थान सर्वोच्च है। उनका जन्म १६६० वि० में ग्वालियर निकट वसुआ गोविंदपुर में हुआ था। ये जाति के माथुर चौबे । इन का अधिक समय जयपुर के राजा मिर्जा जय सिंह के यहाँ ता। इनके एक दोहे ने—

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सो वन्ध्यो आगे कौन हवाल॥

अपनी नवोढ़ा पत्नी में अनुरक्त राजा जयसिंह को हलों से निकाल कर राज दरबार में ला बिठाया था। इसी रण राज दरबार में इनका बहुत मान था। ऐसा प्रसिद्ध है - ये नित्य एक नया दोहा दरबार में सुनाते और एक अशर्फी स्कार में पाते थे। भाषा की दृष्टि में भी बिहारी का स्थान बहुत ा है। ब्रज भाषा के साथ अवधी का भी पुट आपकी रचना मिलता है।

आप ने १७२० वि० में वृन्दावन में शरीर त्याग किया।

"वृन्द"

वृन्द कवि कृष्णगढ नरेश राजसिंह के गुरु थे। आप ने १६६१ वि० में वृन्द सतसई की रचना की। इसमें ७०० दोहे हैं तो अधिकतर संस्कृत सूक्तियों के अनुवाद मात्र हैं। आप के नीति के दोहे प्रसिद्ध हैं आपने सीधि सादी बातें सरल भाषा में ऐसे ढ़ङ्ग से की हैं कि जिससे आचार-शिक्षा के साथ साथ मनोविनोद भी हो जाता हैं।

गिरधर कविराज

आपका जन्म १७७३ वि० के लगभग बतलाया जाता है। आपने अपनी सारी रचना कुँडलियों में ही की है, आपकी

स्त्री भी कविता करती थी। कहते-हैं "साई" शब्द से कुँडलिया इनकी पत्नी की ही बनाई हुई हैं। आपकी नी विषयक कुँडलिया बहुत प्रसिद्ध हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

आपका जन्म भाद्रपद शुक्ल सप्तमी १९०७ को था। आप काशी के रहने वाले थे। आप ६ वर्ष की ही में पितृविहीन होकर विपुल सपत्ति के अधिकारी हो गये। आपने अपनी सारी सपत्ति समाज और साहित्य-सेवा में लगा दी। आपका स्थापित किया हुआ स्कूल आज भी हरिश्चन्द्र इन्टरमीडियेट कालेज के नाम से चल रहा हैं।

आप खड़ी बोली के प्रधान अभिनायक और जनक माने जाते हैं। भाषा को गद्यरूप में निर्माण करने का श्रेय आपको ही है। आप नाटक के विधायक माने जाते हैं। आपकी रचना शब्दाडम्बर नहीं हैं। शैथिल्य दोष से भी आपकी रचना सर्वथा मुक्त है। आपने काव्य, स्तोत्र, नाटक, उपन्यास, आख्यायिका आदि मौलिक और अनूदित गद्य और पद्य में छोटे बड़े कुल पौने दो सौ ग्रन्थ लिखे हैं। इसी कारण आप खड़ी बोली के जन्मदाता माने जाते हैं। हिन्दी साहित्य के दुर्भाग्य से ३५ वर्ष की ही अवस्था में आप गोलोकवासी हो गए।

श्रीधर पाठक

पाठक जी का जन्म संवत् १९१६ में आगरा जिले में जोलधरी नामक ग्राम में हुआ था। बाल्यकाल से ही आपकी बुद्धि अत्यन्त प्रखर थी। इसी कारण आपने बहुत शीघ्र ही उन्नति कर ली थी। आपकी रचना खड़ी बोली और ब्रजभाषा

नों में ही मिलती है, किन्तु खड़ी बोली के श्रेष्ठ कवियों में आपकी गणना की जाती है। आपने गोल्डस्मिथ के hermit नामक ग्रन्थ का अनुवाद (एकांतवासी योगी) नाम से किया है। आपकी मौलिक रचनाओं में 'काश्मीर सुषमा' महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। आप प्रकृति-सौंदर्य के प्रेमी थे। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के लखनऊ अधिवेशन के सभापति भी निर्वाचित हुए थे। आपका निधन १६८५ विक्रमी में हुआ।

नाथूराम शंकर शर्मा

श्री शंकर जी का जन्म संवत् १६ ६ में हरदुआगंज (अलीगढ़) में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० रूपराम शर्मा था। हिन्दी संस्कृत के अतिरिक्त वे कुछ उर्दू अंगरेजी भी जानते थे। आपके ग्रन्थों में अनुराग रत्न, वायसविजय, शंकर सरोज, आदि प्रमुख हैं। आपकी रचनाओं में अधिक सुधारात्मक भावनाएं रहती हैं। मृत्यु-काल १६८८ विक्रमी है।

माध्यमिक काल

अयोध्य सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

श्री हरिऔध जी का जन्म सं० १६२२ में आज़मगढ़ ज़िले के 'निज़ामाबाद' नामक कस्बे में हुआ था। साहित्य से आपको प्रारम्भ से ही रुचि थी। आपने अंग्रेजी, फ़ारसी, बंगाली, संस्कृत उर्दू, हिन्दी भाषाओं के काव्य, साहित्य का अच्छा अध्ययन किया है। खड़ी बोली और ब्रजभाषा पर आपका एक सा अधिकार हैं। 'प्रिय प्रवास' आपका अनुपम महाकाव्य है। यह आपने संस्कृत छन्दों के ढङ्ग से लिखा है इसके अतिरिक्त 'चुभते चौपदे' 'चोखे चौपदे' 'बोल चाल' आदि

पूर्ण हैं। 'आसू' 'लहर' और 'कामायनी' आदि आपके
कविता-ग्रन्थ हैं। कवि होने के साथ साथ आप एक सफल नाट्य
कार भी थे। आपने हिन्दी में नई गद्यशैली को जन्म दिया था
उनकी रचनाओं में बंगला की छाप स्पष्ट प्रतिभासित होती है
हिन्दी का दुर्भाग्य है कि उन जैसा व्यक्ति १६६४ में केवल ४८ व
आयु में ही इस लोक से चल बसा। इन्हें भी मंगलाप्रसाद पारि
तोषिक मिल चुका है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

श्री निरालाजी का जन्म बंगाल की महिषादल नामक
रियासत में १६५५ में हुआ था। कविता करने का चाव इन्हें
बचपन से ही था। पहले आपकी रुचि वेदांत सम्बन्धी एक पु
समन्वय का सचालन भी योग्यता-पूर्वक किया। आपकी कविता
के छन्दों के साथ भाव भी स्वच्छन्द ही होते हैं। उनकी व्यञ्जना
का ढंग बिलकुल ही निराला है। आप रहस्यवाद से अधि
प्रभावित हैं। आपकी रचनाओं में अनामिका, परिमल, आदि क
संग्रह, तुलसीदास खण्डकाव्य, अप्सरा, अलका आदि उपन्यास
प्रमुख हैं। कवि होने के साथ साथ सुंदर लेखक भी
हैं। अधिकांशत आपकी रचनाओं में संस्कृत शब्दों का बाहु
रहता है। आजकल आप प्रगतिशील कवितायें भी
लग गए हैं।

श्री सुमित्रानन्द पंत

श्री पंत जी का जन्म प्रकृत-सुंदर अल्मोड़ा प्रदेश के
कसौना नामक ग्राम में सम्वत् १६५८ में हुआ था। आप कोमल
भावों के उपासक हैं। इसी लिये कल्पना द्वारा आप

ोटी वस्तु के साथ बड़ी अच्छी तरह न्याय कर सक्त हैं। ापका अध्ययन बहुत विस्तृत है। वीणा ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, ग्राम्या, युगांत आदि आपकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं। ाप की कविताओं में रूपक, उत्प्रेक्षा और उपमा के शृंगार से सका सौंदर्य निखर उठा है। आजकल आप कालाकाकर में िवास करते हैं।

नवीन काल

सियारामशरण गुप्त

श्री गुप्त जी बाबू मैथिलीशरण गुप्त के छोटे भाई हैं। ाप का जन्म स० १६५२ में हुआ था। आप बंगाल, गुजराती, राठी, संस्कृत आदि भाषाओं में अच्छी गति रखते हैं। आप ्य वर्णनात्मक कविताएँ लिखते हैं। कविता के साथ साथ आप हानियां तथा नाटक भी सुन्दर लिख लेते हैं। आप की र्वदल, विषाद, पाथेय आदि प्रमुख काव्य रचनाएं हैं।

श्री बालकृष्ण शर्मा (नवीन)

श्री नवीन का जन्म १६५४ में शाहजहापुर 'ग्वालियर' हुआ था आप प्रारम्भ से ही कविता प्रेमी थे। अपनी शिक्षा माप्त करने के बाद आप कानपुर में श्री गणेशशङ्कर विद्यार्थी 'प्रताप' में कार्य करने लगे और तब से अभी तक वहीं हैं। प की कविताएँ पंत, प्रसाद तथा निराला की कोटि की होती । आप ने विस्मृता-उर्मिला नामक एक सुन्दर काव्य भी लिखा जो अभी अप्रकाशित है। आप की कविताओं का संग्रह ुम नाम से प्रकाशित हो चुका है।

श्री उदयशंकर भट्ट

श्री भट्टजी का जन्म करणवास जिला बुलंदशहर में स० १६५५ में हुआ था। आप मूलतः गुजराती हैं। आपको प्रारम्भ से ही कविता लिखने का शौक था। पहले संस्कृत में कविता करते थे। आप की अधिकांश रचना दार्शनिकता पूर्ण, नैराश्य लिये हुए होते हैं। आप के मानसी तक्ष शिला, राका, विसर्जन नामक काव्य ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। आप कवि होने के अतिरिक्त नाटककार भी हैं। सगर विजय, अम्बा, दाहर, विक्रमादित्य उन में प्रमुख हैं। आप को पंजाब सरकार से अपनी पुस्तकों पर पुरस्कार भी मिल चुका है।

श्री भगवती चरण वर्मा

श्री वर्मा जी का जन्म उनाव जिले के शफीपुर नामक गाँव में स० १६६० वि० को हुआ था। आप को छात्र जीवन से ही कविता में लिखने का चाव था। आप की कविताओं में प्रेम और सौंदर्य का चित्रण अत्यन्त ही मनोहर बन पड़ा है। मधु-कण और 'प्रेम-सङ्गीत' आप के समह हैं। आप कविता के साथ सुंदर कहानी भी लिखते हैं।

श्री रामकुमार वर्मा

श्री वर्मा जी का जन्म मध्य प्रांत के सागर जिले के एक गांव में स० १६६२ में हुआ था। आप ने प्रयाग विश्वविद्यालय से हिंदी लेकर एम० ए० किया है और आजकल वहीं पर हिंदी लेक्चरार पद को सुशोभित कर रहे हैं। आप की रचनाओं में प्राय सौन्दर्यनुभूति नैराश्य, वेदांत के दर्शन होते हैं। ॰ के चित्ररेखा, चंद्रकिरण, अञ्जलि, रूपराशि, आदि

ता-सग्रह प्रमुख हैं। चित्ररेखा पर आपको २०००) का पारि-क भी मिल चुका है। आप कवि होने के साथ गम्भीर चक भी हैं। कबीर का रहस्यवाद, हिंदी साहित्य का लोचनात्मक इतिहास आदि इसके ज्वलत प्रतीक हैं।

श्रीमती महादेवी वर्मा

श्रीमती वर्मा का जन्म स० १६६४ मे हुआ था। आजकल छायावाद के प्रमुख कवियों मे गिनी जाती आप की रचनाओ में वेदांत और अनुभूति की गहरी रहती है, नीहार, रश्मि, नीरजा, साध्य गीत आदि के सुन्दर कविता-सग्रह हैं। 'नीरजा' पर आपको १००) पुरस्कार की प्राप्ति हो चुकी है। आप की कविता नैराश्य, ा और पीडा के भावों से युक्त होती है जिसको पढ यह कह देना ही पडता है कि वे आजकल की मीरा हैं। आजकल आप प्रयाग में वास करती हैं।

श्री जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद'

श्री मिलिंद का जन्म ग्वालियर रियासत के मुरार नामक ान में स० १६६४ मे हुआ था। आप प्रकृतिक सौंदर्य के न्य उपासक और आध्यात्मिक कवि हैं। आप का प्रकृति ीक्षण ऊचा और कल्पना सवेरा है। जिसका बल पाकर और करुणा के चित्रों में जान आ गई है। आप के जीवन ीत सुदर कविता-सग्रह है। आप का 'प्रताप प्रतिज्ञा' टक भी अत्यत लोकप्रिय हैं।

श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी'

श्री प्रेमी जी का जन्म स० १६६५ में ग्वालियर

ना नामक कस्बे में हुआ था। आप रहस्यवादी कवियों
ापना अच्छा स्थान रखते हैं। नाटककार के रूप में आप
प्रच्छी ख्याति प्राप्त की है। आप की आखों में, अग्नि
प्रनत के पथ पर, प्रतिमा आदि कविता संग्रह तथा
न्धन, पाताल विजय, प्रतिशोध, बंधन, मित्र छाया आदि
ाटक प्रमुख हैं। आपकी कविता की विशेषता है गहरी
ानुभूति, सरल वर्णन शैली और भाषा की स्वाभाविकता
ाप की स्वर्ग-विहीन पद्यनाटिका जन्त है। कई पुस्तकों
ार आपको विविध स्थानों से पुरस्कार भी मिल चुके हैं आज
ल आप अपना स्वतंत्र प्रकाशन कार्य कर रहे हैं।

श्री हरिवंशराय वच्चन

श्री वच्चन जी का जन्म सं० १९६५ में इलाहाबाद
ुआ था। कालेज जीवन से ही आप अच्छी कवितायें लिख
ते थे। 'उमर खैयाम की रुबाइयों का आपने हिंदी में अनुवाद
क्या। जिसका हिंदी जगत में अच्छा आदर हुआ। फि
ापने उसी ढंग पर मधु बाला और मधु कलश आदि
ौलिक कविताए लिखीं, जिससे आपकी ख्याति और
ढ़ गई। वच्चन की शैली में सरलता, और चोट
ी शक्ति अवर्णनीय रहती है, यही कारण है कि जनता
इनकी रचना का इतना स्वागत किया। 'निशा निम-
ौर 'एकांत संगीत' आपके बाद के कविता संग्रह हैं।

प्रश्न अधोलिखित पद्यों का सरल हिंदी में
रने के साथ ही [घ] [ङ] पद्यों का अर्थ देकर उनका म
ी लिखो।

[क] छांडि मन हरि विमुखन को संग।

[देखिये पृष्ठ ३३ मूल पुस्तक

हे मन ! तू हरि का विरोध करने वालों का साथ छोड दे नके साथ रहने से कुबुद्धि पैदा होती है और [ईश्वर] के भज बाधा उत्पन्न होती है। साप को दूध पिलाने से क्या ला । कि वह जहर को नहीं छोडता ? कौए को कपूर चुगा रे कुत्ते को गंगा में स्नान कराने से क्या लाभ ? गधे को चद ादि सुगंधित पदार्थों से लेप करना और बन्दर के शरीर में भूषण पहराना भी व्यर्थ है। हाथी को नदी में स्नान करा क्या लाभ ? वह तो अपने शरीर को फिर धूल से भर लेता है र पत्थर में छेद नहीं कर सकता, चाहे मारते मारते तरकश ाली कर दे। सूरदास जी कहते हैं कि नीच मनुष्य काले कम्बल समान है। जिस पर और दूसरा रंग नहीं चढ पाता।

[ख] यहि विधि भक्ति कैसे होय ?

[देखिये पृष्ठ ४५ मूल पुस्तक

इस प्रकार से भक्ति कैसे हो सकती है। मन का मैल ह दय से नहीं छूटा और ऊपर से फिर धोकर तिलक लगा लिय । काम (विषय भोग) रूप लालची कुत्ता पीछे पड़ा हुआ है ँडाल ने लोभ रूपी रस्सी से मुझे बांध रखा है। क्रोध रूप साई जब हर समय इस शरीर में रहता है तब गोपाल किस कार मिल सकते हैं ? विषय-वासना रूपी मोह (आसक्ती) बिल्ल ो तू भोजन देता है (अर्थात् तू विषय भोग आदि में लगा है ीन हीन और भूखा हो कर राम का नाम लिया जाता है अपने को स्वयं पूज कर फूला नहीं समाता। तू ने अपने

अभिमान रुपी अनेक टीले खड़े कर रखे हैं, तो फिर तू ही बता शुद्ध विचार रूपी पानी वहा कैसे हो ?

भगवान तेरे मन की गुह्य से गुह्य बात को जानता है उसमें तू छल नहीं कर सकता है। तेरे हृदय में भगवान का नाम तक न आ सकता और तू माला के दाने किस मुख से गिन रहा है तू अपनी सारी आशायें छोड़ कर भगवान के भक्तों से प्रीत कर मीरा दासी के तो केवल कृष्ण जी ही आधार हैं और तू उन की भक्ति कर के सहज ही में वैराग्य प्राप्त कर ले।

[ग] मोहिं चलत न होइहि हारी।

[देखिए पृष्ठ ६३]

क्षण क्षण मे आप के चरण कमलों को देख कर मुझे थकावट मालूम होगी। सभी प्रकार से मैं आप की सेवा करूं गी और मन में चलने के कारण आपको जो थकान हो जायगी उसको दूर कर दूँगी। वृक्ष की छाया मे बैठकर आपके मैं चरण धोऊं और फिर मन मे प्रसन्न होकर हवा करूं गी तथा पखा करूं गी परिश्रम क कणों [पसीने की बूदों] से युक्त आपके सुंदर सांवले शरीर को देखूँ गी और प्राणनाथ के देखने पर फिर दुःख का अवसर कहाँ है या दुःख कहाँ समा सकता है।

[घ] जब मैं था तब गुरू नहीं—

[देखिए पृष्ठ ७]

जब मैं था तब तो गुरु नहीं था, और अब गुरू है तो मैं नहीं हूँ। यह प्रेम की गली इतनी तंग है कि इसमें एक साथ दो नहीं समा सकते।

इसका भाव यह है कि जब तक मनुष्य अहंकार अर्थात् घमण्ड मे रहता है। तब तक ब्रह्मज्ञान नहीं होता। इस लि गुरु की आवश्यकता रहती है। जब गुरु के उपदेश से वह मिथ्या अभिमान नष्ट होकर ब्रह्मज्ञान होता है तब स्वय ही ऐसी लगन लग जाती है कि गुरु की आवश्यक्ता ही नहीं रहती। जीव को स्वयम् ही सब कुछ ब्रह्ममय दिखाई देने लगता है।

(ड) मत व्यर्थ पुकारे शूल शूल। (देखो पृष्ठ २११)

तू व्यर्थ ही कांटे कांटे मत पुकार। इनको तू फूल कह और प्रसन्नता पूर्वक इनका सामना कर। भगवान को हृदय में धर करके शेर से कहो कि तू अपने नाखूनों से प्रहार कर।

इस पद्य का भाव यह है कि यदि भगवान् से मिलने की इच्छा हो तो मनुष्य को आत्म-त्याग करना चाहिए और उस त्याग का आदर्श होना चाहिए कि कॉटे भी फूल के समान प्रतीत होने लगें।

प्रश्न—तुलसी दास की कविता के आधार पर सीता जी का वन जाने के लिए अनुरोध नामक कविता भाग का सरल हिंदी मे वर्णन करो।

उत्तर—अपने पति रामचद्र जी के साथ वन जाने का अनुरोध करती हुई जनक दुलारी सीता श्री रामचद्र जी से कहती हैं—

हे नाथ! माता, पिता, भाई, बहिन, सास, ससुर, सुख देने वाले सारे कुटुम्बी, सुशील पुत्र एव सहायता करने वाले गुरु यह सब अपने पति के बिना स्त्री को अपना शरीर भी भारी मालूम पड़ता है और यह ससार नरक के तुल्य प्रतीत

प्रियतम ! जिस प्रकार जल के बिना मछली और
के बिना इस शरीर की दशा होती है। हे प्रभो ! तुम्हारे
जगल में मुझे वन देवता और वनदेविया सास ससुर के
होगीं। वहा के कन्द मूल तथा फलो का आहार मेरे लिए
के तुल्य होगा। वन के पहाड आदि तुम्हारे साथ रहने पर
अवध के राज-महलो के समान लगेंगे।

हे स्वामी ! मुझे जंगल में चलते चलते कोई दु
होगा मैं वहाँ भी आपकी सेवा भली प्रकार करूगी
पसीने की बूदों से युक्त सावले मुख को देख कर मुझे किस प्रका
दु ख होगा। तुम्हारी कोमल मूर्ति को बार बार देखने से
मुझे लू भी ठण्डी मालूम पडेगी।

हे प्राणनाथ ! आपके साथ रहने पर मेरी तरफ आँख
उठा कर भी भला क्या कोई देख सकता है ? हे नाथ यह ठीक
है कि मैं सुकुमारी हूँ, पर यदि तुम्हारे लिए तप करना उचित है
तो क्या मेरे लिए घर में रहकर भोग और ऐश्वर्य का मजा लेना
धर्म है ? हे नाथ ! यदि ऐसी विनती करने पर भी आपका हृदय
न पिघलेगा तो क्या इन नीच प्राणों को फिर आपके विरह
का दुख सहन करना पड़ेगा ? हे नाथ ! मैं विनती करती हूँ कि
मुझ दासी को अपने साथ वन जाने की आज्ञा दीजिए ?

(ऊपर हमने कुछ संकेतात्मक प्रश्न दिए हैं—ऐसे प्राय
आ सकते हैं। हम काव्य-मदाकिनी के विशेष विशेष स्थलों का
निर्देश करते हैं। छात्र तथा छात्राए अपनी पाठ्य-पुस्तक में
अधोनिर्दिष्ट स्थानो को अवश्य ध्यान से देख लें)।

प्राचीन काल

कबीर

१—तेरा साई तुझ्झ मे—२ ज्यों तिल माहीं तेल है—
-अवहिन म हिरदे धरा—४—साधू ऐसा चाहिए-५ जल ज्यों
ारा माछरी ६—जब लगि भक्ति सकाम है—७—लगी लगन
नहीं—८—प्रेम न बाडी ऊपजै। ६—जा घट प्रेम सचरे—
—हरि तू जनि हेत कर—११—माला फेरत जुग गया १२—
धु गाठ न बाधई—१३—मैं अपराधी जन्म का—१४—गुरु
विन्द दोऊ खड़े—१५—सात समुन्दर की मसि करूँ—१६—
र रुठे गुरु ठौर है—१७—सब बन तो चन्दन नहीं १—साथ
ावन कठिन है—१६—गाँठी दाम न बाधई—२०—वृक्ष
हूँ नहिं फल भरैं—२१—साधू भूखा भाव का—२२—पानी
ा बुदबुदा—२३—दुर्लभ मानुष जन्म है २४—दस द्वारे का
जरा—२५—न्हाये धोये क्या भया—२६—कुटिल वचन सब
बुरा—२७ तिनका कबहूं न निंदिये—२८—ज्ञानी ध्यानी
मी—२६—छिमा बडन को चाहिए—३०—जो जल बाढ़े
व में—३१ मरि जाऊँ माँगू नहीं—३२—जिन ढूँढा तिन
या—३३ ऊँचे पानी न टिकै—३४—सब ते लघुताई भली—
५—मन के मते न चालिए—३६—ऐसी गति ससार की—
७—करु चल आपनी—३८ मो में इतनी सक्त कहाँ—

शब्द

३६—सधो सो सतगुर मोहि भावै—४०—सत लक्षण
१—उद्बोधन—४२—आत्म ज्ञान [१] [३] [४] [६]

सूरदास

सूरदास की साखियो के नम्बर ही दे रहे हैं—

२, ४, ५, ८, ६, ११, १२, १४, १५, १७, १८, २१, ३१, ३२, ३३, ३५, ३६, ३७।

मीरावाई

२ ३, ४, ७, ६, १०, ११, १३, १४, १७, १६, २४, १६,।

तुलसीदास

१-वन जाने क लिए सीता जी का अनुरोध। २-कौशल्या सवाद। ३-शरद् ऋतु वर्णा।

४-लक्ष्मण की मूर्च्छा पर राम का विपाद। ५-शवरी भेंट।

दोहे

१-राम नाम अवलम्ब विन। २-जे जन रूखे वि रस। ३-तुलसी ममता राम सी। ४-विनु सत्सग न हरि कथ ६-ज्ञानी, तपसी सूर कवि। ७-अवसर काडी जो चुके। ८-तुल अपनो आचरन। ६-तुलसी जे कीरति चहहि। १०-परद्र परदार-रत। ११- जूझे ते भ‍ल बूझिवो। १२-अनहित भय हित किए। १३-अनुचित उचित विचार तजि। १४-तुल पावस के समय। १५-तुलसी सन्त सुअम्ब तरु १६-दिये पी पाछे लगे। १८-नीच गुडी ज्यों जानिवौ।

रहीम दोहे

१-धूर उड़ावत सीस पर। २-जो रहीम भावी कतो ३-दीन सवन को लखत है। ४-जो विपया सन्तन तजी। ५ दरदिन परे 'रहीम' कवि। ६-जो रहीम निधि वड किये। ७-र

सूखे पछी उडे। ८-रहिमन देखि बडेन कों । ६-कहु रहीम कैसे निभै । १०-रहिमन राज सराहिये । ११-ज्यों रहीम गति दीप की । १२-धनि रहीम जल पक कहँ । १३-रहिमन वे नर मर चुके । १४-रहिमन तीन प्रकार ते । १५-मथत-मथत माखन रहे । १६-रहिमन विपदा हू भली । १८-रहिमन घरिया रहँट कहँ । १६-रहिमन उजली प्रकृति को । २० कबहुँक खग मृग मीन कबहुँ । २१-पट चाहे तन, पेट चाहत छदन, मन ।

विहारीलाल—दोहे

१-मेरी भव बाधा हरौ । २-सजि सोहत गोपाल के ३-सोहत ओढे पीत पट । ४-अधर धरत हरि के परत । ५-नीच हिये हुलसो रहै । ६-कोटि जतन कोऊ करे । ७-बसे बुराई जासु तन । ८-बडे न हूजै गुनन बिन । ६-नर की अरु नल-नीर की १०—बढत बढत सपति सलिल । ११-अरे परेखो को करै १२-कनक कनक ते सौगुनी । १३-अरे हस या नगर में । १४-कब लैं सूघि सराहि कै । १५-को छुट्यौ यहि जाल परि । १६-दिन दस आदर पाय कै । १७-पावस ऋतुराज यह । १८-चले जाहु ह्याँ को करत । १६-जप-माला छापा तिलक । २०-तौ लगि या मन सदन में । २१-भजन कह्यो तासो भज्यो । २२-दीरघ सास न लेहि दु ख । २३-कब को टेरत दीन ह्वै । २४-थोरेई गुन रीझते । २५-जो अनेक पतितन दियो ।

वृन्द दोहे

१-जाही ते कछु पाइये- २-कैसे निबहै निबल जन- ३-पिसुन छल्यो नर सुजन सों- ४-ओछे नर की प्रीति की- ५-चुरे लगत सिख के वचन- ६-विधि रूठे तूठे

७–अति परिचै ते होत है– ८–भले बुरे सब एक
९–सबै सहायक सबल के– १०–दुष्ट ने छाडे
११–स्वारथ के सब ही सगे– १२–सुख बीते दुख होत है
१३–जो पावे अति उच्च पद– १४–जा के संग दूषण दुरे
१५–जाको जहँ स्वारथ सधै– १६–दुर्जन के संसर्ग ते
१७–कन कन जोरे मन जुरै– १८–दोषहि को उमहै गहै
१९–उद्यम कबहुँ न छाँडिये– २०–क्यो कीजे ऐसा जतन
२१–सुधरी बिगरे वेग ही– २२–उत्तम पर कारज करें
२३–विपत परे सुख पाइये– २४–कहा भयो जो धन भयो
२५–उत्तम जन सों मिलत ही– २६–सोई अपनी आपनें
२७–बिन पूछे ही कहत– २८–अपने अपने समय पर
२९–द्वै ही गति है बडेन की– ३०–उत्तम विद्या लीजिये

गिरधर कविराय की कुँडलियाँ

१—बिन बिचारे जो करै— २—दौलत पाय न कीजिए—
३—बीती ताही बिसारि दे— ४—साईं सब संसार, में—
५—गुन के गाहक सहस नर— ६—साईं अपने चित्त की—
७—राजा के दरबार में—

पूर्व माध्यमिक काल

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

१—उमरि सब दुख ही माहि सिरानी।
२—करहु उन बातन की प्रभु याद।
३—उद्बोधन। ४—घर की फूट। ५—यमुना-वर्णन।

श्रीधरपाठक

१-देशगीत २-सान्ध्या-अटन ३-काश्मीर-वर्णन ४-
नशोभा।

नाथूराम

१—निनाप दर्शन २-प्रशस्त पाठ

माध्यमिक काल

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

१—बाल-लीला २-सच्चे-वीर ३-शिक्षा का उपयोग।

मैथिलीशरण गुप्त

१—धर्म की दशा २—गुरु नानक ३—नहीं पियूंगा ४—
I, कह एक कहानी ५—साकेत के कुछ पात्रों में—कौशल्या,
ाम, भरत। ७—सलाप।

माखनलाल चतुर्वेदी

१-हृदय २-पुष्प की अभिलाषा ३-देश के बालक ६-भारत
५ भावी विद्वान।

रामनरेश त्रिपाठी

१-अन्वेषण २-राम कहाँ मिलेंगे। ३-पाँच सूचनायें।

वियोगी हरि

३-प्रकृत-वीर २-अछूत ३-पराधीनता ४-विविध में से—
१-बिना मान तजि दीजियो २-कौन अनय मधु पग धरयौ
३-भीरु छिपावतु जीव ज्यों ४-रचि-रचि कोरी कल्पना ५-कठिन
राम कौ काम हैं ६-मतवारे सब ह्व रहे ७-नभ जिमि बिनशशि
सूर के। ८-गये दिवस अब बिभव के ६-खण्ड खण्ड ह्वै, जाय
वर १०-खल-खण्डन, मण्डन-सुजन ११-कादर भये न म्र

(

१२-जे जन लोभी सीस के १४-अहे मधुप ! गज-गण्ड-मद १५ नहिं परवसु, नहिं घटा-घट।

उत्तर माध्यमिक काल

श्री जयशङ्कर 'प्रसाद'

१-प्रार्थना २-आँसू ३-अशोक की चिन्ता।

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

१-तुम और मैं २-जलद के प्रति ३-भिक्षुक ४-वर वीणावादिनी।

श्री सुमित्रानन्दन पंत

१-कुसुम-जीवन २-सुख दु:ख ३-छाया ४-आचार्य द्विवे के प्रति।

नवीन काल

श्री सियारामशरण गुप्त

१-चोर २-दुर्वार ३-खिलौना ४-परीक्षा ५-खादी की चा

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

१—सिरजन की ललकारें मेरी। २—विप्लव गायन।

श्री उदयशंकर भट्ट

१—महाप्रस्थान २—विद्रोही ३ विजया दशमी ४-मेरा बचपन ५—पथिक से ६—होगया यह ह्रास मेरा।

श्री भगवती चरण वर्मा

१—परिचय २—मेरी आग

श्री रामकुमार वर्मा

१—चन्द्र-किरण—२—अशान्त

श्रीमती महादेवी वर्मा

१—अधिकार २—जीवन-दीप ३—दीपक में पतग जलता ?

श्री जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद'

१—उगता राष्ट्र । २—गुरुता से लघुता की ओर । -निखरे भाव ।

श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी'

१—जादूगरनी २—अनन्त के पथ पर ।

श्री हरिवंशराय 'बच्चन'

१—दिन जल्दी जल्दी ढलता है । २—अब मत मेरा र्माण करो । ३—कवि की निराशा । ४—आत्मपरिचय ।

प्रश्न—अपनी पाठ्य पुस्तक की भूमिका क आधार पर दीकाव्य का काल-विभाजन काल की विशेषता दरशाते हुए जिये ।

उत्तर—हिंदी कविता क विकास-काल का हम इस प्रकार भाजन कर सकते हैं ।

१—प्राचीन काल, २—पूर्व माध्यमिक काल ३—माध्यमिक ाल, ४—उत्तर माध्यमिक काल, ५—नवीन काल ।

प्राचीन काल में हमें दो प्रकार की काव्यधाराओं का धानतया प्राधान्य मालूम दिया । एक तो भक्ति प्रधान काव्य धारा और दूसरी नायक-नायिका भेद से लदी शृङ्गाररस की काव्य-धारा । वीररस काव्य-धारा पद्य के प्रारम्भ की भूमिका होते हुए भी अधिक काल तक न पनप सकी और परिस्थिति के अनुसार उसका रूप बदलता गया । हिंदी का प्रारम्भिक काल वीर गाथाओं से भरा पड़ा है । यह निश्चित है कि प्राय ।

सभी देशों की सभी जातियों में वीरत्व से ही कविता का
हुआ है । कविता का रूप भी एक प्रकार से ...
प्रारम्भ होता है ।

अब हम यहा पहले भक्ति-प्रधान काव्य-धारा के सम्बन्ध में दो शब्द लिखते हैं । वीर गाथाकाल के बाद निर्गुण सम्प्रदाय के प्रवर्तक कवीर जैसे कवियो ने दोहों और पदो में भक्ति के भाव को भरने का पूर्ण रूपेण प्रारम्भ किया । यह बात स्वाभाविक है कि मनुष्य जब सघर्ष कार्य से ऊब जाता है तब ईश्वर की शरण लेता है । इसी आधार पर वीर गाथा काल के बाद हमारी काव्य धारा भक्ति की ओर अग्रसर हुई । इसी का परिणाम यह हुआ कि उस समय विष्णु सम्प्रदाय, रामानुज सम्प्रदाय, मध्व-सम्प्रदाय और वल्लभ सम्प्रदाय के आचार्यों ने भिन्न-भिन्न देशों में जन्म लेने पर भी अपने उपास्य देवों की प्रशसा मे रचनाएँ की । राम और कृष्ण अवतारी होने के कारण भारत के हिन्दू जीवन में शरीर में प्राण की तरह घर कर गये । अब व्यास की भांति एक ऐसे महापुरुष की आवश्यकता थी जो कृष्ण चरितामृत का पान उस समय के प्रत्येक भारती को कराकर उसे अपने वास्तविक कर्त्तव्य की ओर अग्रसर करता । फल यह हुआ कि हिंदी में सूरदास ने उत्पन्न होकर हमारी उस प्यास की कमी को पूरा किया । यह निश्चय है कि उनकी सजीवन-शक्ति - सचारिणी कविता के रस का आस्वादन करके आज भी हिंदू जाति का जीवन सक्रिय हो सका है । उनके पदों ने हमें इस योग्य बना दिया कि हम अपने वास्तविक कर्तव्यों को समझ सकें ।

को पूरा किया। यह निश्चय है कि उनकी सजीवन-शक्ति रिणी कविता के रस का आस्वादन करके आज भी हिंदू का जीवन सक्रिय हो सका है। उनके पदों ने हमें इस योग्य दिया कि हम अपने वास्तविक स्वरूप को समझ सकें। उनके इस कार्य को अग्रसर करने के लिये उनके कुछ समय बाद तुलसी दास जी का जन्म हुआ। सीदास महाकवि होने के साथ साथ सुधारक, भक्त-शिरोमणि, एवं नरश्रेष्ठ थे। उन्होंने 'रामचरित मानस' जैसा अपूर्व हिंदुओं को विभूति के रूप में भेंट किया, जिसमें स्वार्थ ा, भक्ति, मर्यादा, सुरुचि, सद्भावना एवं सौंदर्य आदि सभी त्तर भावों का समावेश है। मेरा विश्वास है कि यदि को केवल दो ही महाकवि मिलते तो भी उसका साहित्य- अक्षय माना जाता।

इस समय तक भारत में विदेशी जातियों का पदार्पण चुका था और उनमें से भावानुसार विलासिता बढ़ने लगी थी। त श्रृंगार—लौकिक श्रृंगार—चमका। कृष्ण, जो सूरदास परब्रह्म निरन-स्रष्टा के रूप में आये थे, जनता में गोपियों के प्रेमी, कर प्रकट हुए। इस धारा ने कविता के प्रवाह को बदलने साथ साथ भारत के कवियों तथा राजाओं और प्रजा जनो स्त्रैण एवं नारीमय बना दिया। इसने भारत की संस्कृति परोक्षवादी से प्रत्यक्षवादी और विलासप्रिय बना दिया। इस रा के प्रमुख कवि बिहारी, सेनापति, रस-खान आदि हुए हैं। भूषण इस धारा की प्रतिक्रिया के रूप में आये हैं।

परिणामत फिर भारत में नवीन युग की स्थापना हु
भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने आकर सर्व प्रथम देश-प्रेम, आ
अपने गौरव का पुनरुद्धार किया। उस समय से लेकर आज
हिंदी साहित्य प्रगती पथारूढ है। अब तो छायावाद,
प्रगतिवाद, हालावाद आदि अनेक वादों की सृष्टि हो गई है।
प्रकार हरिश्चन्द्र से लेकर आज तक हिंदी में अनेक
प्रचलन हो चुका है। ब्रजभाषा के कलेवर का त्याग करते
ने बहुमुखी प्रगति प्राप्त की है और इस में अनेक
प्रतिनिधित्व होने लगा है। इसका श्रेय हरिश्चन्द्र के साथ
प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, श्रीधर पाठक और
शङ्कर शर्मा को दिया जा सकता है। इन्होंने भावों के
विषयों में भी परिवर्तन किये।

इस के बाद जिन कवियों ने हिन्दी को आगे
अयोध्यासिंह उपाध्याय और मैथिली शरण गुप्त प्रमुख
उपाध्याय जी ने गद्य तथा पद्य दोनों के द्वारा हिंदी की
का सम्यक्तया निर्माण किया। प्रिय प्रवास आपका
महाकाव्य है। गुप्त जी ने आचार्य द्विवेदी जी की प्रेरणा
अपनी अक्षुण्ण प्रतिभा से हिंदी कविता को बहुत से रत्न प्र
हैं। जिन में यशोधरा और साकेत ही अमर साहित्य मे
अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। तुलसी और सूर के
बोली को इस रूप में लाने का बहुत कुछ श्रेय श्री गुप्त जी को
जा सकता है।

श्री प्रसाद, श्री निराला और श्री पंत तीनों भिन्न
कवि होते हुए भी रहस्यवाद और छायावाद के कवि माने

जी गाम्भीर्य, माधुर्य,सुरुचि और रहस्य के कवि थे। आँसू, कामायनी, आप के प्रमुख काव्य ग्रन्थ हैं। निराला जी दार्शनिकता मुक्त-बन्धन, असकुचित दृष्टि के विवेचक हैं। जिन्होंने कविता के क्षेत्र को उज्ज्वल किया है, । और ी तो प्रकृति की प्रतिमूर्ति कवि हैं। मधुरता कोमलता सरलता का सुन्दर समन्वय आपकी कविताओं में हुआ है।

श्री माखनलाल चतुर्वेदि तथा श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन ता के प्रतिनिधि कवि हैं। चतुर्वेदी जी की कविता में वाक्य सौन्दर्य, अर्थ गाम्भीर्य होता है। श्री नवीन जी ली के महामस्त कवि हैं। आप रहस्यवादी रचना भी बडी करते हैं। राष्ट्रीय-जागरण में जो कवि वैशिष्ट्य लेकर आये में श्री सियारामशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी तथा मिलिन्द हैं। उदय शकर भट्ट की कविता में रूढिवाद के प्रति और बुद्धिवाद के प्रति मोह देखने मे मिलता है।

श्रीमती महादेवी वर्मा का स्थान सब से पृथक है। इनकी पीड़ा, सौन्दर्य तथा परोक्ष की सुन्दर कल्पना है। श्री मार वर्मा तथा श्री भगवती चरण वर्मा भी इसी कोटि के गायक कवि हैं। श्री हरिकृष्ण प्रेमी वेदनावादी कवि हैं। ी भाषा सरल, भाव अनुभूति पूर्ण एव गहरी अन्तर की लिये हुए होते हैं। आपने रहस्यवाद, छायावाद, और वाद तीनों में सफल कविताएँ लिखी हैं श्री हरवशराय र का हिन्दी कवियों में अपना अलग ही स्थान है। आपकी वाद की रचनायें जनता में बडे चाव से सुनी जाती है।

नके अतिरिक्त और भी अनेक ऐसे कवि हैं जो हिन्दी के गौरव
ा बढ़ा रहे हैं।

प्रश्न—निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए।

साकरी, मोच, चिकुर, चवाई, करगस, मघवा, विधु
ोस्ती, बापुरो, पैग, दुर्द्धर्ष, निमिष, नैसर्गिक, तमचुर, मोद
प, अनाहत, बलाहक।

उत्तर—तंग, मृत्यु, बाल, चालाक, तीर, इन्द्र, चन्द्रमा
ठिन, बावला, कदम, दुर्जेय, पल-क्षण, स्वाभाविक, मुर्गा
ड्डी, प्रसन्न होना, मुक्ति, तिरस्कृत, बादल।

तृतीय पत्र

अन्तहीन अन्त

प्रश्न १—'अन्तहीन अन्त" के लेखक का परिचय दो और
नकी रचनाओं पर प्रकाश डालो।

उत्तर—इस नाटक के लेखक पंजाब के श्रेष्ठ साहित्यिक श्री
ल्यशङ्कर भट्ट हैं। आपका जन्म करणवास जिला बुलन्दशहर में
म्वत् १९५५ में हुआ था। आप अनेक वर्षों से पंजाब को अपनी
र्मभूमि बनाये हुए हैं। पहले सनातन धर्म हाई स्कूल में अध्यापक
किन्तु अब वे अपनी विद्वत्ता और प्रतिभा के प्रभाव से सनातन
र्म कालेज के प्रोफेसर नियुक्त कर दिए हैं।

आप हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में कवि और नाटककार के
प में अधिक प्रसिद्ध हैं। आपने अब तक दाहर, सिन्ध-पतन, विक्र

आदित्य, अम्बा, मत्स्यगन्धा, विश्वामित्र, कमला, राधा और अन्तीन अन्त आदि ११ नाटक लिखे हैं। कविता की पुस्तकें भी आपक बार प्रकाशित हो चुकी है । तक्षशिला (काव्य), रात्रा, यावरन और विसर्जन। कविता क्षेत्र मे आपको भावना निराश जनक प्रती होती है। आप अपनी रचनाओं में सामाजिक बन्धनों को तोड़ क एक सुन्दर समाज की कल्पना करते हुए दीखते हैं। आपके नाट पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक तीनो प्रकार के हैं।

नाटकों का कथानक और पात्रों का चरित्र-चित्रण तो आ सुन्दर ढङ्ग से करते ही हैं समाज की भीतरी बुराइयों पर भी व्यंग-बाण की चोट कर देते हैं। अम्बा नामक नाटक में नारी अन्दर उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रियात्मक भावनाओं को आप सुन्दरतम तरीके से रखा है। आप जीवन और हृदय दोनों गुत्थियों को सुलझाते हुए प्रतीत होते हैं।

'कमला' नाटक में किसानों की सामाजिक अवस्था का चित्र आपने अच्छा किया है। इस रचना में आप साम्यवादी भावनाओं से प्रभावित हुए दिखाई देते हैं।

आपको पञ्जाब टैक्स्ट बुक कमेटी से दो बार पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। अपने पन्द्रह के करीब एकाङ्की नाटक भी लिखे हैं आप पञ्जाब मे ही रह कर इस प्रकार की सेवा कर रहे हैं, यह गर्व की बात है । हिन्दी साहित्य को आपसे बहुत कुछ आशा है आजकल आप एक बहुत सुन्दर उपन्यास की रचना कर रहे हैं।

प्रश्न—इस नाटक मे नाटककार की दृष्टिकोण स्पष्ट करो।

उत्तर—इस नाटक अर्थात् अन्तहीन अन्त में नाटक— नाथ जीवन की वास्तविकता का सम्मिश्रण भी भली भ

गया है । इस नाटक का जीवन तो वास्तविक है ही, विकास में जीवन के सूत्रों की उलझी हुई ग्रन्थियाँ हैं । यह उतार चढ़ाव से उसी भाव-धारा में बहता है जहाँ मनुष्य समाज के ज्ञान-तन्तु झङ्कारु उठते हैं।

भट्ट जी ने वास्तविकता और नाटक की कल्पना को एक स्थ पर लाकर उनका सङ्गम करा दिया है । इस नाटक का दर्श दृशक न रहकर नाटक का एक पात्र बन जाता है । जीवनसे अधि साहित्य में कल्पना का स्थान है । आजकल की कल्पना वास्त विकता से बहुत दूर नहीं, दोनों ही यथार्थ हैं । इस नाटक में जीव की एक अनुभूति कल्पना से निस्त है फिर भी उसमें जीवन सत्यता का सयोग है । भाव पुराने हैं परन्तु उनको प्रगट करन ढङ्ग एकदम नया है । यह नाटक घटना प्रधान नाटक नहीं कह जा सकता है जीवन की वास्तविकता के साथ नाटक साहित की वास्तविकता को भी स्पष्ट कर रहा है । नहीं तो मदनलाल आखिर में चिल्ला क्यों पडता कि मेरा पाप सूर्य कुमार की दु नन कर आया है । मैं देख रहा था जैसे सब कुछ मेरी कहानी कर धीरे धीरे आती जा रही है । मैं हैरान था जो कुछ हो इस नाटक ने मेरी आँखें खोल दी हैं।

नाटक की इस वास्तविकता ने मदनलालान और सूर्यकुमार के बीच की खाई को पाट दिया । तभी कदनलाल ने कहा कि "आज रा कर्म इस नाटक का रूप बन कर चमका है ।" यह कचहरी में बेल्ला उठना है-मेजिस्ट्रेट साहब, यह मेरा भतीजा है सूर्यकुमार मेरे पाप का फल न जाने क्या होगा ।"

बस इसी जीवन की सार्थक वास्तविकता के साथ नाटक की समाप्ति होती है।

प्रश्न-नाटक की कथा संक्षेप में लिखो।

उत्तर—एक बड़े भारी शहर में एक सेठ रहता था। एक दिन वह रोग-शैया पर पड़ गया। रोगी होने के पहले उसकी धर्मपत्नी का देहान्त हो चुका था। इस समय एकमात्र सहारा उसका तीन वर्ष का बालक था। जब सेठ को जीने की कोई भी आशा दिखाई नहीं दी तब उसने अपने मुनीमों से दूर देश में रहने वाले अपने भाई मदनलाल को बुलाया और कहा—भाई मदनलाल, हम दोनों आज तक एक दूसरे के जानी दुश्मन बने रहे हैं। मैंने अपने परिश्रम से लाखों रुपये कमाये हैं। मेरी पत्नी का देहान्त हो चुका है। मेरी एकमात्र सम्पत्ति मेरा यह छोटा सा बच्चा ही है। मैं कब अधिक देर तक इस संसार में रह नहीं सकता। इस लड़के को तुम्हारी रक्षा पर छोड़ जाता हूँ। इसका पूरा ध्यान रखना।" ऐसा कह कर सेठ जी चुप हो गए। मदनलाल ने उन्हें कहा कि वह सूर्यकुमार (उस बालक) को अपने पुत्र से अधिक प्यार करेगा। सेठ जी मदनलाल की बात से सुखपूर्वक मर सके।

सेठ जी के मरने के कुछ समय के बाद मदन के हृदय में पाप समाने लगा। एक दिन उसने सूर्य को एक आदमी को देकर कहा इसे जान से मार दो। उस आदमी ने मारने के बजाय उसे पाल पोस कर बड़ा कर दिया और उधर यह हल्ला हो गया कि सेठ के लड़के को डाकुओं ने चुरा लिया और उसकी हत्या कर दी।

उस नगर में एक अनाथालय भी था। मदनलाल उस संस्था के मन्त्री और मैनेजर एक नम्बर के बेईमान थे।

अनाथाश्रम में रहता था। कन्हैयालाल अनाथालय के प्रधान हुकुमचन्द जी मन्त्री थे। वे आश्रम के बालकों पर बहुत करते थे। सस्था की सब रकम स्वयं हड़प कर जाते थे। सूर्य एकमात्र सहमी लडका था जो कभी भी किसी से नहीं डरता। एक दिन उसने मन्त्री को वह खरी खोटी सुनाई कि उसके उड़ गए। मन्त्री ने प्रधान से मिलकर षड्यन्त्र किया और रुपये की चोरी का इलजाम लगा कर उसे दो मास की सजा दिलवा दी।

जेल में ही राजाराम नामक एक आदमी से इसका परि हुआ और बाहर आने पर एक होटल में दोनो ने मिल कर शरि कुमार के पाकेट से पॉच सौ रुपयों का नोट निकाल लिया। बाद कन्हैयालाल की तिजोरी टूटी। हुकुमचन्द को भी नुकस पहुचाया गया। वे सब रुपये गरीबों में बाँटे जाने लगे। सारे श मे भयकर खलबली मच गई। सेठ लोगो की तो नींद हराम होग

एक बार एक ग्रामीण और उसकी पुत्री सुखदा के साथ कुमार आ रहा था कि राजाराम ने आकर उन्हें लूट लिया थाने मे जाकर रिपोर्ट करदी कि सूर्यकुमार ने यह कार्य कि है। मुकदमा चलता है। सूर्यकुमार अदालत में हाजिर होता है सुखदा सूर्यकुमार के लिए बहुत परिश्रम करती है और गवाही है कि यह निर्दोष है। राजाराम ने ही हम लोगों को बुरी तरह पीटकर सारा माल छीन लिया है। सूर्यकुमार बच जाता है।

इस नाटक की घटना को देखकर मदनलाल को अपनी स करतूतें स्मरण हो जाती हैं। वह मैजिस्ट्रेट से कहते हैं—हुजूर मेरा भतीजा सूर्यकुमार है। यह डाकू चोर नहीं हो सकता। सू

मार सुखदा की गवाही से मुक्त हो जाता है और मदनलाल की कलुषित आँखें खुल जाती हैं।

यह नाटक मदनलाल की पत्नी शोभा करवाती है जिससे मदनलाल अपने सच्चे रास्ते को देख सके। अन्त में वह अपने उद्देश्य में सफल हो जाती है।

प्रश्न—निम्नलिखित पात्रों का चरित्र-चित्रण करो। मदनलाल सूर्यकुमार, शोभा, सुखदा, सेठ कन्हैयालाल और हुकुमचन्द।

उत्तर—१ मदनलाल—यह सूर्यकुमार का चाचा शोभा का पति और माधोलाल का छोटा भाई है। यह बहुत स्वार्थी और पापी व्यक्ति है। भाई के जीवित रहने पर वह कैसी प्रतिज्ञा करता है और मरते ही उसके इकलौते पुत्र को जान से मरवा देने के लिए एक आदमी के सुपुर्द कर देता है। इसके मत मे पाप पुण्य कोई वस्तु नहीं। पाप का भूत इसके सिर पर इतना है कि यह सोते-सोते बड़बड़ाने लगता है कि मैंने ही सूर्य को मारा है। अपने पापों को छिपाने के लिए यह स्त्री के नाम पर धर्मशाला भी बनवाता है मगर शान्ति नहीं मिलती। अन्त में इसी स्त्री शोभा की कृपा से नाटक होता है और इसे सूर्य से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है। अन्त मे यह अपनी करतूत पर बहुत पश्चात्ताप करता है।

२—सूर्यकुमार—यह सेठ माधोलाल का इकलौता बेटा है। मौत के पंजे से छूटकर वह अनाथाश्रम मे पलता है। यह शुरू से ही बहुत उद्दत और साहसी बालक है। यह अनाथाश्रम के मनेजर और मन्त्री का पोल खोल देता है मगर उनके षड्यन्त्र का भागी बन कर जेल में दो महीने के लिए चला जाता है। वहाँ राजाराम से दोस्ती करता है। बाहर आकर शशिकुमार का पांचसौ ••

चम्पत हो जाते हैं। राजाराम सुखदा और उसके बाप के चाला बताकर सूर्य को कैद करा देता है। मगर सुखदा के से वह बेलाग छूट जाता है। अन्त में यह अपने चाचा से मिल जाता है। इसे शराब वगैरह से बहुत नफरत है।

३—शोभा—यह अपने पति मदनलाल को इस नाटक अभिनय द्वारा मनुष्य बना देती है। इसका हृदय बहुत धर्मात्म और दयालु है। इसे मदनलाल की करतूतों से बड़ा कष्ट होता मगर अन्त में अपनी चातुरी से देवेन्द्र द्वारा नाटक लिखती है और पति का सुधार कराते हुए सूर्यकुमार को पुन प्राप्त कर लेती है यह सच्ची पतिव्रता और अन्याय से नफरत करने वाली भारती नारी है।

४ सुखदा—यह ग्रामीण रामभोला की पुत्री है। सूर्यकुमार को जङ्गल में देखकर उसका स्वागत करती है। राजाराम के पर सूर्यकुमार पकड़वा लिया जाता है तो यही गवाही देकर उसकी रक्षा करती है। सूर्य से वह अन्दर ही अन्दर प्यार करती है उसे यह कदापि विश्वास नहीं होता कि सूर्य डाकू या चोर हो सकता है।

५ कन्हैयाल—यह अनाथाश्रम का प्रधान है। पाप-पुण्य धर्माधर्म इसके सामने कोई वस्तु नहीं। यह घाटा सहने पर धै धैर्य नहीं छोड़ता। मजदूरों के लिए इसके हृदय में रत्ती भर भी प्रेम नहीं। अपनी पत्नी की अस्वस्थता के कारण यह सदा चिन्तित रहता है। रायसाहबी के लिए इसकी जान जाती है। यह साम्य वादी आन्दोलन को सरकार को रिश्वत देकर बन्द कर देना चाहता है। सूर्य को इसी ने दो मास की सजा दिलाई।

हुकुमचन्द – यह अव्वल दर्जे का चोर और पाखंडी है। नाथालय के मन्त्री होने के नाते इसे वहाँ से अन्न, वस्त्र आदि ाने का काफी मौका मिलता है। अनाथालय के बच्चों को यह च्छी दशा में नहीं रखता। मैनेजर साहब को भी रोब से अपनी रफ गाँठे रखता है। लड़कों को सदा डाँटता रहता है। पनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए ही यह अनाथालय में काम करता है।

प्रश्न—नाटक का नाम 'अन्तहीन अन्त' क्यों रखा गया है?

उत्तर—नाटक का नाम 'अन्तहीन अन्त' इसलिए रखा गया है ' यह एक ऐसा नाटक है कि अन्त होकर भी समाप्त नहीं होता सकी आन्तरिक भावना सदैव सीमाहीन है। जिस उद्देश्य से ए यह नाटक लिखा और खेला जाता है, उस उद्देश्य की पूर्ति हो ही जाती है इसके अतिरिक्त आन्तरिक रूप से वह अपनी ात्मा को भी चिर-प्रकाशित कर देता है इस नाटक में कल्पना र यथार्थता का सीमाहीन मिलन है। एक दूसरे में घुल-मिल र हैं और अन्त में जाकर भी इनका अन्त नहीं होता। नाटककार इसका नाम बहुत ही कलापूर्ण और गहराई में जाकर रक्खा । इसकी धारा सागर में मिल जाती है और वह फिर भाफ द्वारा ादल बन कर उसी धारा में आ मिलती है। इसी आधार-भित्ति लेखक ने अपने नाटक का नाम अन्तहीन अन्त रक्खा है।

इस नाटक का कथानक यद्यपि कोई नया नहीं फिर भी उसकी या नई है। वह कहानी को इस टेकनिक से रखता है कि उसमें वन आ जाता है। अन्तहीन अन्त लेखक की सफल रचना है। समें कुछ दोष भी हैं मगर गुणों के आगे उनकी रोशनी फीकी ड़ जाती है।

और क्रियमाण के स्थान पर आलसी बनाती है, वह शिक्षा कहाँ तक भला कर सकती है। कडवा सत्य तो यह है प्रकार की शिक्षा को शिक्षा नहीं कहना चाहिये।

प्रश्न—निम्नलिखित वाक्यों का प्रसंग बताते हुए भावार्थ लिखो।

१—पुरुष चाहे जितना पाप करे समाज उसे कुछ भी कहता परन्तु पैर फिसलते ही स्त्री का सर्वस्व नष्ट हो ऐसी तुम ढौंडी पीटते हो, क्या यही तुम्हारा न्याय है, धर्म है।

2 To increase knowledge is to increase sorrow अर्थात् ज्ञान की वृद्धि विपत्ति की वृद्धि है।

३—यदि तुम चाहते हो कि संसार सुख से रहे तो का प्रचार करो।

४—न्याय अन्याय कोई चीज़ नहीं है। जीवन की सत्त को ठीक बनाये रखने के लिये न्याय बनाया गया है। वह हमने बनाया है, समाज ने बनाया है, राजा ने बनाया है। परन्तु सामर्थ्य वान के लिए न्याय वही है जो वह करता है। राजा आज हमारे ऊपर राज्य करता है वह न्याय की कितनी दुहाई देता है परन्तु किस से छिपा है कि राज्य-स्थापना से पूर्व कितना अन्याय किया होगा। एक आदमी को मारने पर फाँसी मिलती है परन्तु युद्ध में हत्या करने वाले सिपाही की प्रशंसा होती है।

५—जो धनी आज धनवान बना है कौन कह सकता उसने अन्याय नहीं किया है, उसने कितनों को धोखा नहीं दिया है, उसने कितने गरीबों का रुधिर नहीं चूसा है। पर उसने उन लोगों की परिस्थिति को ऐसी बना दिया है कि वे लोग शांति के साथ,

...याचार सह कर भी चुप रहते हैं। और धनी अपना कार्य ...राई से निकालता रहता है क्या धनी का वैसा करके ब्याज ...र, श्रमिकों को थोडी मजदूरी देकर और अपने आप अधिक से ...धिक लाभ उठाकर रुपया कमाना न्याय है ? कभी नहीं। फिर भी ...ी सदा से वैसा करता आया है उस पर न्याय के भय का अङ्कुश ...ता है, ■ अत्याचार का दायित्व ? जिस राजा की आज पूजा ...ती है वही कभी डाकू से किसी प्रकार कम न था। शक्ति ही ...य है।

उत्तर—१ रूपकुमार को जमुना कह रही है कि पुरुषों ने ...त्रयों को हमेशा पाँवों तले दबाये रखा है पुरुष जितना चाहे ...म करे समाज उसे कुछ भी नहीं कहता। पुरुषों ने समाज को ...ल स्त्रियो के विरुद्ध ही बनाया है। जिस दोष के करने पर ...ष को पूछा तक नहीं जाता स्त्री को उसी के लिये अनेकों ...ार का दण्ड दिया जाता है, यह पुरुष जाति का सरासर अन्याय ...ीं तो क्या है ? वास्तव में स्त्रियाँ पुरुषों के दृष्टिकोण में एक ...छ वस्तु हैं जिन्हें मनमाने ढग से उठाया बैठाया और काम ...ाया जा सकता है। यह मनोवृत्ति बुरी है। पुरुष जाति को यह ...मझना चाहिए कि स्त्री जाति जननी है। उसका स्थान किसी ... अवस्था में पुरुषों से कम नहीं।

२—ज्ञान की वृद्धि विपत्ति को बढ़ाती है। यह वाक्य ...स्तव में ठीक है। जब मनुष्य अधिक से अधिक जानकारी कर ...ता है उसकी भय दिखाने वाली प्रवृत्तियाँ उसी के साथ साथ ...ढ़ जाती हैं। जैसे एक डाक्टर को मालूम है कि इतने टम्प्रेचर ...गी की ऐसी हालत होती है और वह मर जाता है

डाक्टर रोगी हो जाय और उसे भी उतना ही बुखार हो तो उसे बात की जानकारी होने से ही उसका दिल बैठ सकता है। यह भी सम्भव है कि वह निर्दिष्ट मृत्यु के पूर्व ही प्राण छोड़ दे। इसलिए यही सिद्ध होता है कि आदमी को जानकारी जितनी बढ़ जाती है उसकी निश्चिन्तता का क्षेत्र उतना ही संकीर्ण होता जाता है। वह अपने ऊपर आने और न आने वाली आपत्ति की आशङ्का से अव्यवस्थित हो जाता है। उसकी हालत ज्ञानी होने के कारण शोचनीय हो जाती है इसी लिए यह वाक्य कहा गया है। यह वाक्य दूसरे अंक के दूसरे दृश्य में जमुना ने शशि और मोहन से कहा है।

३—यहाँ मूर्खता को प्रचार करने का उपदेश ऊपर कहे गये वाक्य के बाद ही जमुना ने कहा है। उसके साथ उसे तुलसी का एक सुप्रसिद्ध दोहा भी उद्धृत किया है—

सब ते भले हैं मूढ़, जिन्हें न व्यापे जगत-गति।

संसार में सबसे अधिक प्रसन्न हैं मूर्ख जिन्हें यह पता नहीं होता, यहाँ हो क्या रहा है? उन्हें इसलिए किसी बात की परवाह भी नहीं होती। मजे से अपने काम में तल्लीन रहते हैं। मगर जिस व्यक्ति को जानकारी हो, वह उस कष्ट और असुविधा के आने के पहले ही सिर पर हाथ रख कर बैठ जायगा। इन्हीं ... दृष्टि में रखते हुए जमुना का विचार है कि संसार में ... कर रहने से मनुष्य की असुविधा और विपत्ति कम हो ...

४—सूर्य के दोस्त राजाराम ने वाक्य कहे हैं। ... दुनिया की धाँधली से जुब्ध है। वह देखता है कि ... वह सब गरीबों और असहायों के ...

न इसलिए बनाया गया है कि वह राजा रङ्क, ऊँच नीच सबों पर लागू हो परन्तु व्यवहार मे ठीक इसकी विपरीतता पाई जाती है। एक कानून है कि खून की सजा फाँसी। मगर वही पुलीस बदल्यों पर गोली चलाती है और उसका कुछ भी नहीं होता। एक निर्धन चोरी या बेईमानी करके सालों की सजा भुगत आता है मगर इसी अपराध का अपराधी धनी अपने पैसे के बल पर बेदाग बाहर निकल आता है।

जो राजा धर्म और सत्य की मूर्ति बना हुआ है वह राज्य पर अधिकार करते समय कितना क्रूर और आततायी था। जो सामर्थ्यवान है उसे कानून की जरा भी परवाह नहीं। तुलसीदासजी की चौपाई है—

समरथ को नहि दोष गुसाई।

इन्हीं बातों पर जोर देते हुए राजाराम कहता है कि यह न्याय और अन्याय की बातें ढकोसला मात्र हैं। मनुष्य को संसार में सामर्थ्यवान बन कर रहना चाहिए। न्याय अन्याय तो उसके चाकर हो जायेंगे।

४—यह भी राजाराम का ही कथन है। ... के दूसरे

रखा बनाए रखने के लिये ही रक्षा-बधन के अतिरिक्त आप शना साधना' 'पाताल विजय' 'प्रतिशोध' 'स्वप्न भग' ान' 'मित्र' 'छाया' तथा आहुति आदि सामाजिक तथा ीय नाटक प्रकाशित हो चुके हैं । आप की स्वर्ग विहान क सरकार द्वारा ज़ब्त हो चुकी हैं । मदिर नामक एकाकी कों का सग्रह भी छपा है । आज कल आप लाहौर से ही ना स्वतन्त्र प्रकाशन कार्य कर रहे हैं ।

चतुरसेन शास्त्री –

शास्त्री जी का जन्म सम्वत् १६४८ में हुआ था। हिंदी हित्य की जो सेवा आपने की है, वह किसी से छिपी नहीं हिंदी साहित्य सेवकों में आपका विशेष स्थान है। आपने र, नाटक तथा गद्य-काव्य आदि अनेक विषयों पर पुस्तकें यी हैं। धारा प्रवाहिनी भाषा तथा स्वाभाविक चित्रण आपकी शेषता है। आपकी भाषा सजीव होती है। अन्तरतल, अमर ौर आग्नि आपकी प्रसिद्ध रचनायें हैं।

प्र०—नाटक में आने वाले नाटकीय शब्दों की परिभाषा खो—

उत्तर—नाटक की परिभाषाएँ —

अक—किसी बडी कथा के कई भाग कर दिये जाते हैं। नाटक में अक कहलाते हैं। किसी नाटक के अक अधिक होते हैं ौर किसी के कम।

रगभूमि—जिस स्थान पर नाटक खेला जाता है, उस ान का नाम रगभूमि (stage) है।

यवनिका पतन या पटाक्षेप—

रंगभूमि के सामने लटके हुए परदों का नाम
ा है। इस परदे को गिराना यवनिका पतन कहलाता है।

नेपथ्य में - रंग भूमि के दोनों ओर का स्थान तथा
र वस्त्र बदलने का स्थान नेपथ्य कहलाता है।

प्रवेश--नाटक के पात्र का रंगभूमि पर आना।

प्रस्थान—नाटक के पात्र का अंदर चले जाना।

स्वगत—जब वक्ता अपना भाव किसी अन्य पर प्रक
रना चाहता हो वहां कोष्ठ में (स्वगत) लिखा जाता है
सके बाद जब वह अपने भाव जनता पर भी प्रकट करना चाह
तब वहां [प्रकट] लिखा जाता है।

नायक—नाटक के सब से बड़े पात्र को नायक क
पुकारते हैं।

विदूषक—यह नायक का मित्र तथा सेवक होता
स्थान स्थान पर यह नायक का मनोविनोद करता और उस
चित्त प्रसन्न रखता है। यह प्राय नायक के सभी आन्तरि
भेदों का ज्ञाता होता है।

नायिका स्त्री पात्रों में जो प्रधान पात्र होता है
नायिका कहते हैं, प्राय नायक की स्त्री ही नायिका होती है।

चेटी—यह नायक की दासी तथा शृंगार करने व
होती है।

कंचुकी—अन्त पुर (रनवास) में रहने वाला चतुर
वृद्ध पुरुष कंचुकी कहलाता है। यह प्राय आगे दर्शक तथा सं
वाहक का काम करता है।

प्रश्न—नाटक की परिभाषा कर के उसके भेद लिख

उत्तर—

नाटक—किसी राजा अथवा महान पुरुष की जीवन-कथ
जो सुन्दर गुणों से युक्त हो] जो सुन्दर ढंग से अभिनय कर
की गई हो साथ ही जिस में कई अंक तथा दृश्य हों उसे नाट
हते हैं।

नाटक के भेद

दृश्य—जो रंगभूमि पर सफलता के साथ खेला जा सके
श्रव्य—जो केवल सुना जा सके, खेला न जा सके।

संयोगान्त या सुखान्त—

जिस नाटक की कथा अन्त में संयोग से समाप्त होत
वह नाटक सुखान्त कहा जाता है। 'भाग्य चक्र' संयोगा
सुखान्त नाटक है।

जिस न टक की कथा नायक या नायिका के मरण अथव
योग प साथ समाप्त होती है उसको दु खान्त कहते हैं। जैसे
तारास।

प्रश्न—समस्त नाटकों की कथा संक्षिप्त रूप से लिखो।

उत्तर—रक्षाबन्धन—

संक्षिप्त कथा

मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंह की मृत्यु के बाद ज
क ज्येष्ठ पुत्र महाराणा विक्रमादित्य गद्दी पर बैठे तो उन्ह
विलासितापूर्ण जीवन बिताना शुरू कर दिया। इस पर भील
जा तथा उसके [विक्रम के] चाचा राणा बाघसिंह उसे सिंहास
ड़ने पर विवश करते हैं। उसकी माता जवाहर बाई उसे ि
है और राजमुकुट उदयसिंह को सौंपने के लिये आज्ञा

परन्तु कर्मवती आगे बढती है और फिर दूसरी बार मुकुट वि
के सिर पर रख देती है।

माता के धिक्कारने तथा बाघसिंह के समझाने से न
सोई हुई आत्मा जाग उठती है। वह राणा पराण से अपने दश
गौरव-रक्षा के लिये तय्यार हो जाता है। गुजरात के राजा
दुर शाह का छोटा भाई चाँदखा को वापिस मांगने के लिये
भेजता है परन्तु महाराणा विक्रम शरणागत को लौटाने से
मनाही कर देते हैं। इस उत्तर को सुनकर बहादुर-शाह गो
आग बबूला होकर मेवाड पर आक्रमण कर देता है। रक्षा का
कोई उपाय न देख कर महरानी कर्मवती हमायूँ को राखी भ
है। इधर शत्रु को आया जान कर मेवाड में युद्ध की तैयारी
करता है। बहादुर शाह अपने गुरु के मना करने पर भी ग
को लूटता तथा जलाता हुआ किले के पास पहुचाता है। कई
तक लडाई के बाद किले की एक दीवार टूट जाती है। मं
के उद्दाम देख कर महारानी जवाहर बाई स्वयं अपने हाथ
गार ले बिजली की तरह शत्रुओं पर टूट पडती है। ठीक
समय शत्रुओं के पीछे की ओर राणा विजय सिंह अपने
सैनिकों के साथ हमला कर देता है और महारानी के
चाता है।

अन्त में लडते लडते महारानी जवाहरबाई तथा अ
० मारे जाते हैं। राजा विक्रम वन में भाग जाते हैं। इस स
के समय अपनी बलि देने के लिये राणा बाघसिंह अपना
र छत्र धारण करते हैं। राणा उदयसिंह और चाँद खाँ को र
के लिये बाहर भेज दिया जाता है। महारानी कर्मवती

४ १२००० स्त्रिया सती हो जाती हैं। और राजपूत केसरिया
४ पहन कर किले का फाटक खोल देत हैं। तथा बहादुरशाह
सेना पर हमला कर देते हैं। मुट्ठी भर राजपूत कब तक लड
ते थ। अन्त मे विजय बहादुरशाह के हाथ रही। अन्दर किले
सुनसान पाकर वह उदास हो जाता है और अपनी विजय
भी पराजय समझता है।

इधर हुमायूँ राखी पाते ही मेवाड की ओर चल पडता है।
ी कर्मवती को मरा हुआ जान कर उसे वडा दुख होता है
ा बहादुरशाह की सेना को वहा से भगा देता है। अन्त मे
ा विक्रमादित्य को ढुँढवा कर उसे गद्दी पर बैठा देता है
। साथ ही रानी कर्मवती की चिता के पास बैठ कर देर से आने
लिय क्षमा माँगता है।

प्र०—रक्षाबन्धन नाटक मे निर्दिष्ट हुमायू, कर्मवती तथा
ादुरशाह के चरित्रों की आलोचना कीजिए।

हुमायूँ

उत्तर—दिल्ली के सम्राट् हुमायूँ एक वीर, भ्रातृ-प्रेमी,
ृ-आज्ञापालक तथा शत्रु-प्रशसक के रूप मे आगे आते हैं।
ना वडा विशाल साम्राज्य उन्होंने बाहुबल से जीता है। वीर
ने के साथ ही वह शत्रु के गुणों की उचित प्रशसा करते हैं।
श्मनी आखों की रोशनी नहीं छीन लेती, ऐसे दिलेर दुश्मन से
हा लेना भी फख्र की बात है। उसके ये शब्द इस बात के सबसे
डा प्रमाण हैं।

हुमायूँ अपने भाइयों को अपने से भिन्न नहीं मानते।
न का सारा ससार विश्वास के ही सहारे पर रखा

तातारखाँ और हिंदुबेग के कहने पर भी वह भाइयों से रा
नहीं छीनता। वह ठगा जाना स्वीकार करता है परन्तु ठग
नहीं। भाइयों के द्वारा किये गये किसी धोखे के काम ै भी
सौभाग्य समझते हैं। उसकी पितृ-भक्ति आदर्श है। अपने पिता
अन्तिम शब्द—

बेटा हुमायूँ! अपने भाइयों पर रहम करना, अब
ही इनका बाप है—उसे हमेशा याद रहते हैं और अन्तिम श्वा
तक वह इन शब्दों को निभाता है।

हुमायूँ को हठ धार्मिकता, साम्प्रदायिकता छूई त
न थी। वह अपने मनमें किसी के प्रति अधिक दिन तक शत्रु
के भाव न रखता था। कर्मवती की राखी स्वीकार कर
इस का प्रत्यक्ष प्रमाण है। बहन का सम्बन्ध उसकी दृष्टि
बहुत ऊँचा है। अपने ऊपर विपत्ति देखते हुए भी कर्मवती
सहायता के लिये दौड़ कर जाना उसके हृदय की विशालता
सूचक है। मेवाड़ पहुँचते ही बहादुरशाह को वहाँ से भगा दे
है और महाराणा विक्रम को ढुँढवा कर फिर उसे गद्दी पर बैठा
है। यद्यपि उसने मेवाड़ को शत्रुओं के हाथों से बचा लिया, पर
फिर भी कर्मवती के दर्शन न कर सकने तथा उससे आशीर्वा
न ले सकने का दुःख उसे बना ही रहता है। उसका जीव
आदर्श जीवन है,

कर्मवती

उदयसिंह की माता तथा राणा सांगा की पत्नी है। उ
न राज्य की इच्छा है, न वैभव की। यदि इच्छा है तो केवल मेव

क गौरव को सुरक्षित रखने की। गृह-कलह न बढ जाय इस डर
। उदयसिंह के लिये वह मुकुट लेना स्वीकार नहीं करती।

उसकी कार्यपरायणता, साहस तथा बुद्धि-कौशल स्थान
स्थान पर देखने को मिलते हैं। थोडी सेना होने के कारण
सैनिकों के निराश हो जाने पर कहना। सेना पाताल से निकलेगी,
मेवाड के वीरों को प्राणों का मोह' उसकी बुद्धिकुशलता सैन्य-
संचालन की दक्षता को प्रकट करते हैं।

अपने देश की रक्षा के लिए वह दूसरे से सहायता भी
माँग सकती है। उसके मन में हिन्दु मुसलमान का भेद भाव
नहीं, उसे अपनी राखी पर बडा विश्वास है। इसी लिए तो
वह एक मुसलमान को भी भाई बना लेती है और उसके पास
राखी भेज देती है।

वह किसी भी घटना से घबराना नहीं जानती। बुरी से
बुरी घटना भी सुनने के लिये तय्यार रहती है। उसके ये शब्द
'रुक्त क्यों हो ? छिपत क्यो हो ? कहो, कहो। भयकर से
भयंकर बात कहते हुए भी क्षत्रियों का कण्ठावरोध न होना चाहिये।
तुम जानते नहीं कि क्षत्राणियो का हृदय फूल से कमल होते
हुए भी वज्र से भी कठोर होता है। वे सब कुछ सुन सकती
हैं सब कुछ सह सकती हैं" उसके धैर्य, शील, स्वभाव को प्रकट
करते ह।

वह आन को निभाना जानती है, इस लिये अन्त समय
में भी वह चाँदबा को दुश्मन के हाथ नहीं पडने देना चाहती
और उसे बाहर सुरक्षित स्थान में भेज कर स्वय सती हो जाती
है। इसका जीवन सचमुच क्षत्राणी का जीवन है।

बहादुर शाह—

गुजरात का बादशाह बहादुरशाह ठीक हुमायूँ के विरुद्ध स्वभाव वाला है यदि हुमायूँ उदार दिल है तो यह तंग दिल है। वह अपने भाई तक का रहन सहन नहीं सह सकता। उसे डर है कि कहीं मेरा भाई राज्य न छीन ले। वह महत्वाकांक्षी होने के साथ ही लालची भी है। उसे अपने गुरु के शब्द भी लालच के सामने अच्छे मालूम नहीं होते। उनके वचनों को नहीं मानता।

वह अभिमानी था। वह प्रत्येक दशा में चाहे जैसा भी हो, अपने पिता के अपमान का बदला लेना चाहता है। उस की सब से बड़ी इच्छा मेवाड़ को धूल में मिलाने की है यद्यपि यह बहादुर है, परन्तु कट्टर मुसलमान है। उस के ये शब्द कि काफिरों का खात्मा करने में मेरी सहायता करनी होगी इसके द्योतक हैं। कभी कभी वह शत्रु-प्रशंसक के रूप में भी सामने आता है राजपूतों की वीरता की प्रशंसा करता है। अपने निश्चय का दृढ़ होने के कारण किसी के भी कहने से नहीं रुकता और एक बार मेवाड़ को जीत ही लेता है चाहे इस जीत की कीमत उसे अधिक चुकानी पड़ती है।

प्रश्न—निम्नलिखित पद्यों की प्रकरण पूर्वक व्याख्या करो।

(क)

वीरो ! समर-भूमि में जाओ,
सोचो तो मेवाड़ निवासी,
माँ को होने दोगे दासी ?

चलो शौर्य दिखलाओ,

वीरो ! समरभूमि में जाओ। पृष्ठ ६२

ख) आज खुदा खुद है हैरान।
पिला रहा है तुम्हें तअस्सुब की शराब शैतान॥

छेद रहे हो जिगर खुदा का तुम तलवारें तान। पृष्ठ ८४

उत्तर (क)—चारणी, श्यामा और माया वीरों को युद्ध के लिये प्रेरित करने के लिये आती हैं।

देश के लिये अपने प्राणों का बलिदान करने वाले वीरो! शीघ्र ही युद्ध भूमि में पहुचो। क्या तुम्हारे जीवित रहते हुए मातृभूमि मेवाड परतन्त्र हो सकता है ? नहीं, कभी नहीं! शीघ्र कदम बढाते हुए युद्ध-भूमि में पहुचो।

जब शत्रु भृकुटि तान कर हमारे देश पर चढ ही आया है तो घर बैठे रहना सरासर मूर्खता होगी। यह शरीर नश्वर है, एक दिन अवश्य ही मिट जाना है, अब देश के लिये प्राण देकर अमरपद प्राप्त करो। शीघ्र ही समरभूमि में पहुचो।

तुम्हारे समान कितने ही वीर सैनिक अपनी वीरता दिखलाने के लिये युद्ध-भूमि में जा चुके हैं। तुम बहादुर होते हुए भी घर में क्यों बैठे हो। जाओ, समरभूमि में अपना पराक्रम दिखाओ।

भावार्थ—जब यह निश्चित ही है कि घर पर बैठे बैठे भी अवश्य मर जाना है, फिर सबसे अच्छा यही है कि अपने देश के लिये प्राणों का बलिदान कर दें।

(ख) हिन्दुवेग और तातार खां बैठे हुए हुमायूं को यह समझाने की चेष्टा कर रहे हैं कि एक मुसलमान के

की सहायता करना धर्म के साथ विश्वासघात करना है।

ओर नेपथ्य में कोई गाता हुआ दिखाई देता है।

ईश्वर आज तुम्हारी दशा देख कर हैरान हो रहा है। आज शैतान तुम्हें ईर्ष्यारूपी मदिरा पिला रहा है। जिसे पीकर तुम ईर्ष्यालु बन गये हो। क्या वेद कुरान में यह लिखा दिखा सकते हो कि जो तुम्हारे धर्म को न माने उसकी हत्या कर दो, उसके प्राण ले लो। मन्दिर, मस्जिद, काशी तथा काबा सब स्थानों में उस ईश्वर का निवास है, वह इन सब स्थानों में समानरूपसे से व्याप्त है। वस्तुतः सब धर्मों का एक ही तत्व है एक ही आदेश है कि दूसरे प्राणियो के साथ भलाई करो। सबसे प्रेम करना सीखो, यो एक दूसरे को मारकर हैवान न बनो। तुम ये चमकती हुई तलवारें तान कर अपने शत्रु को नहीं मार रहे अपितु साक्षात् परमात्मा का हृदय चीर रहे हो।

ईश्वर यह जीव-हत्या पसन्द नहीं करता। वह सब प्राणियो मे रमा हुआ है, इसलिये किसी जीव का मारना ईश्वर की ही हत्या करना है।

प्रश्न—अधोलिखित पद्य की व्याख्या करो, प्रसंग भी लिखो।

प्रेम पर्व आ पहुँचा आज,
रखो, वधु बहनों की लाज।

. . . . .

माँ का ऋण चुका जाय सव्याज
प्रेम पर्व आ पहुँचा आज। पृष्ठ ३

उत्तर—चित्तौड़ गढ़ के भीतरी भाग में महारानी कर्मवती

ा अन्य क्षत्राणियाँ राखी लिये खड़ी हैं तथा वीर क्षत्रिय
ी बँधवाने के लिये प्रस्तुत हैं। बहनें गाती हैं —

आज प्रेम का शुभ पर्व आ पहुंचा है। बलिवेदी तुम्हारे
े पुकार रही है, इसलिये मर मिटने के लिये तैयार हो जाओ
र हाथों में तलवार पकड़ लो। रण के लिये वस्त्र पहन लो
ा जन्मभूमि और बहनों की लाज रखने के लिये तैयार हो
ाओ।

आकाश में बादल गरज रहे हैं, उधर शत्रु की सेना शोर
ती हुई बढ़ी चली आ रही है। यमराज ने भी भृकुटी चढ़ाई
ई है अर्थात् उसकी आकृति भी क्रुद्ध मालूम देती है। भाइयो!
रण का ताज पहन लो और जन्मभूमि तथा बहनों की लाज
खने के लिये तैयार हो जाओ।

हमने इन राखी के एक एक तार में अपना सारा प्रेम भर
िया है। इन्हें स्वीकार कर के मरण की तैयारी कर लो और
त्रुओं पर बिजली की भांति टूट पड़ो।

आज जन्मभूमि अनाथ के समान विपत्ति में है। जिन्हें
अपने प्राण प्रिय न हों, वे ही हाथ आगे बढ़ाएँ। जिससे कि माता
का ऋण ब्याज सहित चुक जाय।

प्रश्न—निम्नलिखित सदर्भ की प्रकरण पूर्वक स्पष्ट व्याख्या
करो—

(क) चुप रहो, लड़के! मैंने सब सुना है। पश्चात्ताप
की आग से मेरा हृदय जला जा रहा है। जिन्हें तुमने अभी नीच
कहा है, वे वसुन्धरा के लिये भगवान के आशीर्वाद हैं, वरदान
हैं। भीलराज का अपमान कर तुमने मेवाड़ पर

अभिशाप को निमन्त्रित किया है। तुम्हारे मुँह से ऐसी घृणित बात कैसे निकली ?

(ख) गुस्ताखी माफ हो, जहाँपनाह। रहमदिली और सल्तनत का इन्तज़ाम, दोनों की निभ नहीं सकती। इन का आपस में ३६ का रिश्ता है। बादशाहों के दिल की जगह लोहे का टुकड़ा होना चाहिए। आप ने अपने भाइयों को उन्हीं सूबों का सूबेदार बना दिया है, जिनके बाशिंदे बहादुर और मजबूत हैं और जिनकी आप की फौज में सख्त जरूरत पड़ती है। काबुल और पंजाब जो आप की सल्तनत के मजबूत बाजू हैं, वही आज आप के हाथ में नहीं।

(ग) यदि तुम मुझ जैसी माँ पाने पर लज्जित होते थे तो मैं क्या करूँ, मेरे पास उसका उपाय नहीं है। किंतु मैं नहीं समझती हूँ कि मरने के लिये भी किसी आयोजन की आवश्यकता होती है, गौरव की अपेक्षा है। तुम लोग सर्वस्व त्यागी सैनिक हो, पर गौरव पाए बिना तुम एक कदम भी नहीं उठाना चाहते। क्या इसी कीर्ति-लोलुपता के आधार पर दूसरों को उपदेश देने का अधिकार चाहते हो।

उत्तर—(क) जब महाराजा विक्रम राज्य की परवाह करना छोड़कर विलास में फँस जाते हैं तब बाघसिंह आदि सब उसे समझा रहे थे। भील को नीच जाति का समझ कर राणा उस का तिरस्कार कर देता है। इस पर राणा की माँ उसे धमकाती हुई कहती हैं —

चुप रहो लड़के। आगे मुँह मत खोलो। जो तुमने कहा

उसे सुन कर मेरा हृदय पश्चात्ताप की अग्नि में जल रहा है। जिन लोगों को तुमने अभी भील जाति में उत्पन्न होने के कारण ही नीच कहा है वे वस्तुत नीच नहीं हैं वे पृथ्वी के लिए परमात्मा की सब से बड़ी देन हैं। तुमने उनका तिरस्कार करके न केवल हमारे मन को दुखाया है, अपितु देवताओं को भी क्रुद्ध कर दिया है। तुम्हारे मुँह से ऐसे शब्द निकल सकते हैं इस बात की मुझे स्वप्न में भी आशा न थी। मनुष्य की जाति नहीं, उसके गुण देखने चाहिएँ।

(ख) तातारखां और हिंदुबेग हुमायूँ के साथ बैठे हुए शेर-शाह को पकड़ने के विषय में सोच रहे हैं। दोनो सेनापति उसकी नरम दिली को पसद नहीं करते। हिंदुबेग कहता है—

राजन्! अपराध क्षमा हो, कृपालुता और राज्य का प्रबन्ध इन दोनों की आपस में नहीं निभ सकती, ये दोनो इकट्ठे नहीं रह सकते। इन दोनों का आपस में ३६ का सम्बन्ध है अर्थात् दोनों परस्पर विरोधी स्वभाव हैं। राजाओं को नरम दिल की आवश्यकता नहीं, अपितु उनका हृदय तो पत्थर के समान कठोर तथा दृढ होना चाहिये। जिन प्रांतों के निवासी सबसे अधिक हट्टे कट्टे हैं तथा जिनकी आवश्यकता सेना में सबसे अधिक है, आप ने उन्हीं प्रांतों का प्रांतपति अपने भाइयों को बना दिया है। आपके भाई समय पर आपका साथ भी नहीं देते। काबुल और पजाब, दो अत्यधिक आवश्यक प्रांत, जो कि आप के राज्य के दायें तथा बायें हाथ कहे जा सकते हैं इस समय आपके हाथ में नहीं हैं।

(ग) विजयसिंह अपनी माता के पास विदा मांगने

रहा था कि उसकी माँ मिल जाती है। विजय के पूछने पर जब वह जौहर व्रत में सम्मिलित होने से मना कर देती है तो विजय सिंह इस बात को कुल के लिये लज्जा जनक कहता है। उसकी माँ उत्तर देती है—

यदि तुम मुझ जैसी माँ पाने पर भी लज्जित होते हो तो मेरे पास इसका कोई उपाय नहीं। मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि आप चुपचाप नहीं मर सकते, मरने के लिये भी उत्सवों की तथा गौरव की अपेक्षा (आवश्यकता) रहती है। मैं मानती हूँ कि तुम सर्वस्व त्यागी की सैनिक हो परन्तु तुम गौरव का त्याग नहीं कर सकते, क्योंकि तुम बिना गौरव पाये एक इञ्च भी हिलना नहीं पसन्द करते तब तक तुम उपदेश देने के पात्र नहीं हो सक्त।

प्रश्न—युक्तिपूर्वक सिद्ध करो कि 'रक्षाबन्धन' नाटक की प्रधान नायिका कर्मवती ही है जवाहरबाई नहीं।

उ०—रक्षाबन्धन हिंदुओं का प्रसिद्ध त्योहार है। इस शुभ मुहूर्त पर बहिनें भाइयों हाथों में राखी बाँधती हैं और वे जन्मभूमि तथा बहनों की रक्षा का प्रण करते हैं। प्रस्तुत नाटक में कर्मवती द्वारा एक मुसलमान राजा के पास राखी भेजना तथा उसको अपनी सहायता के लिए बुलाना, नाटककार ने दिखलाया है। राखी भेजने वाली कर्मवती है जवाहरबाई नहीं, और नाटककार को राखी की महत्ता दिखलाना ही विशेष रूप से अभीष्ट है, इस नाटक की प्रधान नायिका कर्मवती ही हो सकती है, जवाहरबाई नहीं।

सीताराम

प्रश्न—सीताराम नाटक की संक्षिप्त कथा लिखो।

उत्तर—रामचन्द्र जी राजकार्य में अधिक लगे रहने के कारण

व पहले की तरह सीता के पास अधिक देर तक नहीं बैठे रहते। त सीता उन्हे प्रेमभरा उलाहना देती है। साथ ही हर्ष-दायक माचार सुनाने के लिये इनाम माँगती है। रामचन्द्र के कहने पर र्माती हुई सीता ने संकेत से ही यह कह दिया कि वह गर्भवती । रामचन्द्र जी बहुत प्रसन्न होते हैं और दोनों मिल कर तरह ह की शुभ कामनाएँ करने लगते हैं। इतने में ही लक्ष्मण जी त्र लाते हैं और दिखाने लगते हैं। चित्र में दण्डक वन तथा गावती गंगा को देख कर सीता जी की इच्छा फिर उन स्थानों देखने की होती है। रामचन्द्र जी लक्ष्मण जी को वैसा ही रने की आज्ञा देते हैं।

इसी समय दुर्मुख नामक चर आता है। सीता तथा लक्ष्मण अलग भेजकर रामचन्द्र उसकी बातें सुनने लगते हैं। दुर्मुख सब हाल सुनाकर अन्त में कहा कि नगर में एक धोबी है जो पनी स्त्री को घर से निकालते हुए यह कह रहा था कि मैं राम नहीं जिसने राक्षस के यहाँ रही हुई सीता को रख लिया। तू मुझ पूछे बिना पीहर चली गई, इसलिये घर में निकल जा। यह नकर शोक-ग्रस्त राम ने निरपराधिनी सीता को लक्ष्मण के द्वारा ल्मीकि के आश्रम में पहुँचा दिया।

लक्ष्मण मन ही मन इस अन्याय को सोचते हुए ते हैं। अन्त में हृदय को दृढ़कर सब हाल बता देते हैं च्छित होकर गिर पड़ते हैं। सीता उन्हें सम्हालती है कि इसमे तुम्हारा दोष नहीं तुमने तो केवल आज्ञा या है जाओ, यह सन्देश कह देना "जब द में आई, मैं आप को वन ले

लक्ष्मी की बारी है कि उसने मुझ दासी को दूर कर धन ...
इस में आपका दोष नहीं, मेरे भाग्य का दोष है। मैं आपके वि...
कमी न रहती, तुरन्त प्राण त्याग देती, परन्तु आपका तन...
शरीर म है इसलिये बालक के जन्म तक सूर्य की ओर दृष्टि...
कर तप करूँगी कि जिससे अगले जन्म में आप ही पति मिलें...

सीता को वन मे छोडकर लक्ष्मण आकर रामचन्द्र जी...
कहते हैं कि इस समाचार से सब लोग दुःखी हैं। अरुन्धती, ...
माताएँ तथा भरत आदि वन में चले गये हैं यह सुनकर रामच...
जी मूर्छित हो जाते हैं तथा लक्ष्मण जी उन्हें सम्हाल लेते हैं...

रामचन्द्र जी वसिष्ठ जी से कहते हैं कि प्रजा की रक्षा त...
शान्ति के लिये चक्रवर्ती राज्य होना चाहिये परन्तु राम क...
हैं मैं अकारण किसी पर चढाई न करूँगा। वसिष्ठ जी अश्व...
मेधयज्ञ की सलाह देते हैं तथा रामचन्द्र जी के दूसरी बार विवा...
करने के लिये तैयार न होने पर सीता की सोने की मूर्ति बनाई जा...
है। वसिष्ठ जी माताओं तथा वाल्मीकि को यज्ञ का निमन्त्र...
देने के लिये कहते हैं।

इधर लव और कुश सीता से अपने पिता का नाम पूछ...
हैं। यह सुन कर सीता के आँसू गिरने लगते हैं परन्तु अन्त...
बता देती है कि उनके पिता एक बडे भारी राजा हैं। इधर कु...
बालक आते हैं और कहते हैं कि आज घोडा नामक जन्तु आश्रम ...
आया है। लव जाकर घोडा पकड लेता है। सिपाही उसके सा...
भागने लगते हैं, यह देखकर चन्द्रकेतु रथ पर चढकर सामने आ...
लडने लगते हैं कि रामचन्द्र जी विमान से उतर क...

है लड़ने से रोकते हैं। लव और कुश को देख राम को सीता की
द आ जाती है और वे उनसे रामायण सुनने लगते हैं।

राम के आने का समाचार सबको विदित होगया। वसिष्ठ,
नक, कौशल्या आदि सबने निश्चय किया कि आज, सीता के
पर जो दोष लगाया गया है उसे हटा कर, उसे राम को
सौंपा जाय।

सीता वासन्ती से बातें कर रही थी उसकी आवाज़ राम के
कान में पड़ जाती है और वे बेहोश हो जाते हैं। सीता अपना हाथ
उनके शरीर पर फेर कर उन्हें होश में लाती है। राम होश में आ
जाते हैं और सीता को सामने खड़ा देखकर आनन्द अनुभव करते
। रामचन्द्र माताओं के सामने जाने में शर्म अनुभव करते हुए खड़े
ही थे कि कौशल्या उधर आगई। सब लोग आश्रम में चले जाते
। वाल्मीकि के पूछने पर राम बतलाते हैं कि सीता का स्थान
उनकी मूर्ति लेगी। तब कुश कहने पर राम उनका अपराध क्षमा
कर देते हैं।

वाल्मीकि लव और कुश के साथ ही सीता को स्वीकार
करने के लिये राम को आदेश देते हैं। राजधर्म-वश सकोच प्रकट
करने पर वे रामचन्द्र को राजधर्म के लिये धिक्कारते हैं। सीता
बिना क्रोध किये दुबारा सतीत्व की परीक्षा के लिये तैयार हो
जाती है। आकाश में जय जय कार होने लगता है। सीता वसु-
न्धरा से प्रार्थना करती है, "माता! यदि मैंने स्वप्न में भी पर पुरुष
का ध्यान न किया हो तो तू फट जा और मैं तुझ में समा जाऊँ।"
धरती फट जाती है और साथ ही सीता उसमें समा जाती है

प्र०—राम के चरित्र की समालोचना करो।

उत्तर—भगवान रामचन्द्र महाराजा दशरथ के लडके हैं। इनका विवाह सीता के साथ हुआ था। इस नाटक में हमें उनके प्रथम दर्शन सीता के साथ प्रेमालाप करते हुए होते हैं। वे एक आदर्श राजा के रूप में दृष्टि-गोचर होते हैं। प्रजा के भावों को ठीक ठीक जानने के लिये इन्हों ने दुर्मुख आदि गुप्तचर नियुक्त किये हुए हैं। दुर्मुख के द्वारा एक धोबी द्वारा सीता पर कलंक लगाये जाने पर, अपनी सब से प्रिय वस्तु-गर्भवती सीता को, सदा के लिये वन में भेज देना, स्पष्ट बतलाता है कि ये हमेशा प्रजा के भावों को ही सर्वोपरि समझते थे। यही इन के चरित्र की विशेषता है कि जिस से आज लाखों वर्ष बीत जाने पर भी इनका नाम बड़े आदर तथा श्रद्धा से लिया जाता है।

उनके जीवन की दूसरी विशेषता अश्वमेध यज्ञ के समय देखने को मिलती हैं। गुरु वसिष्ठ के कहने पर भी दूसरा विवाह न करना उनके उत्कट पत्नी-व्रत का प्रमाण है। जैसे सीता आदर्श-पत्नी थी, वैसे ही यह भी आदर्श पति थे। पत्नी के स्थान की पूर्ति के लिये सीता की सोने की मूर्ति बनवा कर ही इन्होंने यज्ञ पूरा किया दूसरा विवाह कर के नहीं। इस नाटक में इन के जीवन की यह दो बड़ी विशेषताएँ हैं।

प्र०—सीता के चरित्र की संक्षेप से समालोचना करो।

उत्तर—सीता महाराजा जनक की पुत्री तथा भगवान रामचन्द्र की पत्नी हैं। इन का पति-व्रत धर्म संसार की स्त्रियों के लिये आदर्श स्वरूप है। इन के लिये पति ही सब कुछ, पति ही राज्य है, पति ही धन-ऐश्वर्य है। नाटककार ने निम्न लिखित

द सीता के मुँह से कहलवा कर इस विषय को बहुत स्पष्ट कर
[illegible]ा है—

"आपका प्यार दुनिया में सब से बडी वस्तु है। वह मुझे
[illegible]हले ही मिला हुआ है, अब और क्या चाहिये ?"

सीता को अपने सतीत्व पर पूर्ण विश्वास है। वह हर
[illegible]मय अपनी परीक्षा देने के लिए तैयार है। निरपराध तथा
[illegible]र्भवती होते हुए भी घर से निकाल दिये जाने पर अपने पति
[illegible] अहित नहीं सोचती। वह सब कुछ अपने ही भाग्य का दोष
[illegible]नती है। उसके ये शब्द 'महाराज! अभागिनी सीता ने कहा
[illegible]अब राजलक्ष्मी की बारी है कि उसने मुझ दासी को आप से
[illegible] कर दिया है," इस बात को भली भांति प्रकट करते हैं। उसका
[illegible]ह कहना कि पुत्र की उत्पत्ति तक सूर्य की ओर मुह करके तपस्या
[illegible]रूँगी जिस से अगले जन्म में भी आप ही पति मिलें, उसकी
[illegible]गाढ़ पति-भक्ति का परिचायक है। अन्त में सब के सामने अपनी
[illegible]रीक्षा देने को तैयार हो जाती है। उसके रुदन पर पृथ्वी फट
[illegible]ाती है और सीता उसमें समा जाती है। ऐसी देवियों के कारण
[illegible] तो आज भी भारतवर्ष का सिर ऊंचा है।

प्र०—लक्ष्मण के चरित्र की आलोचना करो ?

उत्तर—लक्ष्मण महाराजा दशरथ के तीसरे पुत्र हैं ये
[illegible]पने बड़े भाई राम के आज्ञाकारी भाई तथा सेवक के रूप
[illegible] सामने आते हैं। यह इन के चरित्र की सब से बड़ी विशेषता
[illegible]। नाटककार ने सीता द्वारा इन के लिये जो कहलाया है उस
[illegible] अधिक अच्छा चित्रण शायद नहीं हो सकता। सीता जी
[illegible]हती हैं—

तेज और विनय के अवतार, बड़े भाई की आज्ञा ईश्वर की आज्ञा मानने वाले, यती लक्ष्मण जिन्होंने अपनी इच्छा से चौदह वर्ष वन में भूख और नींद को जीत कर हमारी सेवा की, जिन्होंने कभी मेरी ओर आँख उठा कर न देखा। धन्य लक्ष्मण, धन्य देवर, तुम सा देवर तुम सा भाई दुनिया में न हुआ न होगा।

निस्सन्देह कहा जा सकता है कि लक्ष्मण सच्चे भाई हैं, वे भाई की आज्ञा पर किसी प्रकार की टीका टिप्पणी नहीं करते। कभी कभी जैसे सीता के परित्याग के समय, वे कहते हैं कि विद्रोह करूंगा परन्तु राम के कहने पर तुरन्त ही शान्त हो जाते हैं। यह विद्रोह के लिए कहना भी उनकी सीता जी के प्रति अत्यधिक भक्ति का होना प्रकट करता है। जब तक संसार में लक्ष्मण का नाम रहेगा तब तक भ्रातृ-प्रेम का आदर्श सुरक्षित बना रहेगा।

लव-कुश

वाल्मीकि के आश्रम में सीता जी के गर्भ से लव और कुश का जन्म होता है वास्तविक पिता से अनभिज्ञ होने के कारण ये वाल्मीकि को ही अपना पिता समझते हैं। ऋषि कुमारों के पूछने पर ये अपने पिता का नाम जानने के लिये अपनी माता के पास आते हैं। ये बिल्कुल सरल स्वभाव के हैं। क्षत्रिय होने के कारण स्वभाव से ही निर्भय हैं। सैनिकों के कहने की परवाह न करके घोड़े को पकड़ लेते हैं, चन्द्रकेतु के साथ युद्ध करने के लिये उद्यत हो जाते हैं। इनमें विनय भी इतना है कि बाद में रामचन्द्र से क्षमा माँगने लगते हैं।

प्र०—तुम्हें चारों नाटकों में से कौन सा नाटक अच्छा लगा है और क्यों ?

उत्तर—हमें "रक्षाबन्धन" नाटक अच्छा लगता है।

कुशल नाटककार ने—इतिहास की एक साधारण घटना को अपनी कुशलता से जीवन बना कर हमारे सामने रखा है। शरणागत की प्राण देकर भी रक्षा करना तथा हिन्दू—मुस्लिम भेद भाव को मिटा देना आदि शिक्षाओं से नाटक के पन्ने रंगे पड़े हैं। देशभक्ति की नदी इठलाती हुई तथा बल खाती हुई दृष्टिगोचर होती है, जिस के किनारे पर वीर राजपूत तथा राजपूतनियाँ बलि देने के लिए तैयार दिखाई देती हैं। प्राण देकर भी राजपूतों का धात निभाना, सब कुछ त्याग कर शरणागत की रक्षा करना, किस सहृदय पाठक के मन को अपनी ओर नहीं खींच लेता ? हुमायूं तथा कर्मवती के चित्रण में तो नाटककार ने कमाल ही कर दिया है।

कर्मवती का हुमायूं को राखी भेजना पुरानी शत्रुता को भूल कर तथा अपने राज्य पर आई हुई विपत्तियों का ख्याल न करते हुए, कर्मवती की सहायता करने के लिये दौड़ कर आना, कर्मवती के जल कर सती हो जाने पर उस की चिता पर सिर टेक कर हुमायूँ का क्षमा मांगना, ये स्थल ऐसे हैं, पढ़ते पढ़ते मनुष्य भावमग्न होकर इस संसार को भूल जाता है और एक स्वर्गीय रस का अनुभव करने लगता है। वास्तव में इन स्थलों पर नाटककार ने जो कुशलता दिखाई है वह सर्वथा प्रशसनीय है। नाटक के सारे गाने देशभक्ति से भरे पड़े हैं।

से कहते हैं कि तुम्हीं इस लड़ाई को समाप्त कर सकती। दुनिया में अब और कोई ऐसा नहीं है जो इन दोनों के में जाकर इन दोनों को शांत करे। गंगा ने भी देखा ५५ आपे से बाहर हुए जा रहे हैं। बस क्या कहना था, इन दोनों के बीच में होकर गंगा बहने लगती है। धीरे धीरे नदी पाट चौड़ा होता जाता है। परशुराम अन्तर्धान हो जाते हैं।

अन्त में देवव्रत को भीष्म पितामह का सम्बोधन हुए एवं उनकी अटल प्रतिज्ञा को देखकर माता गङ्गा तथा देवव्रत को गले लगा लेते हैं।

---

(२) 'मनुष्य की क़ीमत'

उम्र लगभग २२ वर्ष शुभ्रवर्णा, इकहरा परन्तु सुगठि शरीर, आकर्षक चेहरा और साथ ही बुद्धिमत्तापूर्ण—दृष्टि। पहने एम० ए० डिग्रीधारी एक युवक कुछ दिन काश्मीर में कर काम-काज की खोज में लाहौर आता है। कलाकार है, की स्थिति अच्छी है फिर भी न जाने क्यों नौकरी के फेर में है। नौकरी के लिये कई जगह आवेदन पत्र भेजता है एक दिन चार जगह इण्टरव्यू के लिए जाता है। किन्तु कहीं भी सफलता नहीं मिलती है।

सबसे पहले तो वह एक बीमा कम्पनी के दफ्तर पहुँचता है। जहाँ पर कि उसने काश्मीर में ब्रांच मैनेजर के लिए प्रार्थना-पत्र भेजा था। एक बीमा कम्पनी के मैनेजर होने के लिए जो योग्यता होनी चाहिए उससे बहुत कुछ वंचित होने के कारण वहाँ उस को सफलता नहीं मिलती।

वहाँ से उल्टे पाँव लौट कर युवक हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार के यहाँ पहुँचता है,—यहाँ पर उसने अनुवादक के स्थान के लिए प्रार्थना-पत्र दिया हुआ था। साधारण-सी बात है—कि कोर्ट में कानून जाने बिना काम नहीं चलता। वहाँ चपरासी को भी थोड़ा बहुत कानून जानना पड़ता है किन्तु वे महाशय कानून से बिल्कुल अनभिज्ञ रहने के कारण उस पद के लिए भी अयोग्य ठहरते हैं।

हाईकोर्ट से लौट कर वे अंग्रेजी दैनिक 'मॉर्निंग हेरल्ड' के दफ्तर में पहुँचते हैं एक सम्वाददाता की जगह पर। किन्तु वहाँ से भी उनको उल्टे पाँव लौटना पड़ता है और अन्त में आकर वह (विनय) कामेसदल के वैतनिक मन्त्री के स्थान के लिए जो प्रार्थनापत्र भेजा था उसी के बारे में बात चीत करने के लिये कामेसदल के नेता से मिलता है। वहाँ पर भी उसके सत्य-भाषण ने उस को उपर्युक्त पद से अयोग्य सिद्ध कर दिया। इन चारों मुलाकातों में ही उस को दुनियादारी का पता चल जाता है और अंत में वह इन मुलाकातों से प्राप्त वस्तु का बयान करते हुए अपने पिता को पत्र लिखते हैं। उसका साराश यह है कि—'जब तक मनुष्य अपने व्यक्तित्व को खो कर दुनिया का एक निष्प्राण पुर्जा नहीं बन जाता तब तक मनुष्य की कोई कीमत नहीं।'

वैज्ञानिक की पत्नी

प्रबोध नाम के एक व्यक्ति, जिनकी उम्र लगभग ३० वर्ष की होगी अपने वैज्ञानिक अनुसंधान के पीछे बुरी तरह पड़े

न तो खाने की सुध है और न घरवार की। केवल प्रयोगशाला की ही धुन में मस्त हैं। दिन के-अलावा रात बहुधा प्रयोगशाला में ही काटते हैं। घर पर बीवी, बहन, एक तरह से प्राय सभी हैं। वेतन भी कोई कम नहीं। मासिक पाँच सौ। कोई—ऐसा वैसा ऐव नहीं। सब कुछ होते भी उनके पास हृदय नहीं है। प्रवोध बुद्धि के पीछे हृदय को भूल गया है। उनकी वहू उनके इस कार्य से बहुत असतुष्ट हो जाती है क्योंकि प्राय स्त्रिया मातृ-हृदय प्राप्त करना चाहती हैं। पर पति इस काम में विभा का साथ नहीं देता। साल भर यों ही गुजर गया। आखिर एक दिन विभा से नहीं रहा गया और जब प्रयोगशाला जाते हुए अपने स्वामी से कह दिया—वही !—क्षुब्ध हृदय की बात थी। प्रवोध विभा के हृदय तक तब भी नहीं पहुच पाये। अत में एक दिन विभा मायके जाने के लिय तैयार होती है। प्रबोध रोकता है, पर फिर भी विभा नहीं रुकती। वह मायके चली ही जाती है।

मायके जाकर उसकी अपनी सहेली जया से ससुराल से चले आने की बात होती है बातचीत में विभा का हृदय स्त्री सारल्य के कारण पुन पिघल जाता है और उसे अपनी भूल मालूम होती है।

प्रश्न—'आदर्श और समस्याए' मे किस तरह के, कितने नाटक सगृहीत किये गये हैं ? उन नाटको से आपको शिक्षा मिलती है ?

उत्तर—'आदर्श और समस्याए' में जैसे कि पुस्तक के नाम से ही स्पष्ट है प्रस्तुत पुस्तक में तीन नाटक हैं। तीनो नाटक एकाकी

न तो खान की सुध है और न घरबार की। केवल अपनी प्रयोगशाला की ही धुन में मस्त हैं। दिन के अलावा रात भी बहुधा प्रयोगशाला में ही काटते हैं। घर पर बीवी, बहन, माता एक तरह से प्राय सभी हैं। वेतन भी कोई कम नहीं। मासिक पाँच सौ। कोई-ऐसा वैसा ऐब नहीं। सब कुछ होते भी उनके पास हृदय नहीं है। प्रबोध बुद्धि के पीछे हृदय को भूल जाता है। उनकी बहू उनके इस कार्य से बहुत असन्तुष्ट हो जाती है। क्योंकि प्राय स्त्रियां मातृ-हृदय प्राप्त करना चाहती हैं। पर प्रबोध इस काम में विभा का साथ नहीं देता। साल भर यों ही गुजर गया। आखिर एक दिन विभा से नहीं रहा गया और उसने प्रयोगशाला जाते हुए अपने स्वामी से कह दिया—यही!—जो उस हृदय की बात थी। प्रबोध विभा के हृदय तक तब भी नहीं पहुंच पाये। अंत में एक दिन विभा मायके जाने के लिये तैयार होती है। प्रबोध रोकता है, पर फिर भी विभा नहीं रुकती। वह मायके चली ही जाती है।

मायके जाकर उसकी अपनी सहेली जया से ससुराल से पत्रों आने की बात होती है बातचीत में विभा का हृदय स्त्री-सारल्य के कारण पुन पिघल जाता है और उसे अपनी भूल मालूम होती है।

प्रश्न—'आदर्श और समस्याएं' मे किस तरह के, कितने नाटक संगृहीत किये गये हैं ? उन नाटकों से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

'आदर्श और समस्याएं' में जैसे कि पुस्तक के नाम ... पुस्तक में तीन नाटक हैं। तीनों नाटक एकांकी

है प्रथम 'भीष्म-प्रतिज्ञा' नामक ऐतिहासिक आदर्श-मूलक एकांकी है द्वितीय एवं तृतीय दोनों सामाजिक समस्या सम्बन्धी एकांकी नाटक हैं।

प्रथम में हमें यह शिक्षा मिलती है कि—'आत्मबलिदान से बढ़कर संसार में कोई धर्म नहीं। स्वार्थ त्याग ही शांति एवं परम सुख का मूल है। स्वार्थ के बलिदान से मनुष्य की जय होती है सभ्यता आगे बढ़ती है।

दूसरी शिक्षा इससे यह मिलती है कि कर्त्तव्य पालन न करने में संसार का सुख तुच्छ है।

द्वितीय नाटक मे हमें यह शिक्षा मिलती है कि—'मनुष्य की कीमत किताबी अक्ल में नहीं है। हर व्यक्ति को व्यावहारिक ज्ञान भी होना चाहिए। जब तक मनुष्य उचित व्यावहारिक शिक्षा नहीं पा लेता तब तक इस दुनिया में उसका कोई मूल्य नहीं। चाहे मनुष्य कितना ही सुशिक्षित और सुसंस्कृत क्यो न हो जाय, किंतु जब तक वह अपना व्यक्तित्व खोकर समाज के आर्थिक या राजनीतिक संगठन का एक निष्प्राण पुर्जा नहीं बन जाता तब तक समाज की दृष्टि में उस का कोई मूल्य नहीं।

तृतीय नाटक में हमें यह शिक्षा मिलती है कि—'पारिवारिक सुख की प्राप्ति के लिये ज्ञान के साथ प्रेम की भी आवश्यकता है। केवल मस्तिष्क हो और हृदय न हो तो कोई भी व्यक्ति पारिवारिक सुख का उपभोग नहीं कर सकता।

विशेष कर स्त्री चाहती है प्रेम। स्त्री का जन्मजात स्वभाव मातृहृदय प्राप्त करना है इसलिए पुरुष को

स्त्री की इच्छा में हार्दिक सहयोग दे, तभी दम्पति का जीवन सुख से बीत सकता है।

प्र०—प्रसंगनिर्देश पूर्वक अधोलिखित गद्यांश में किन्हीं दो की सरल हिंदी में व्याख्या करो।

(क) इस पृथ्वी तल पर नारी की प्रतिमा की फिर से प्रतिष्ठा हो। सिंहासन पर नारी की निर्वासित क्षमता फिर से स्थापित हो, पुरुष, स्त्री को उसका न्याय से प्राप्त अधिकार फेर दे।

(ख) इन साढे पाच घण्टों में मैंने पहली बार दुनिया देखी है। मालूम होता है, अब तक मैंने जो कुछ सीखा था, वह सब गलत है। मैं चाहे कितना ही सुशिक्षित और सुसंस्कृत क्यों न होऊँ जब तक अपना व्यक्तित्व खोकर समाज के आर्थिक या राजनीतिक संगठन का एक निष्प्राण पुर्जा न बन जाऊँ, तब तक समाज की दृष्टि में मेरा कोई भी मूल्य नहीं।

(ग) क्या पूछ सकती हूं कि मेरे प्रति आपकी यह विमुखता कब तक बनी रहेगी ? आज एक साल होने को आया है आपने कभी मेरी सुध तक नहीं ली। प्रयोगशाला और परीक्षण में ही तल्लीन हैं।

उत्तर—[सुविधा के लिए यहाँ तीनों की व्याख्या दी जा रही है।]

(क) यह 'आदर्श और समस्याएँ' के भीष्म-प्रतिज्ञा नामक एकाकी नाटक का उद्धृत अंश है।

काशी नरेश की बड़ी कन्या अम्बा परशुराम से भीष्म की प्रतिज्ञा तोड़ने के लिए कहती है। जब परशुराम ने पूछा—तुम

ऐसा क्यो चाहती हो ? तब उत्तर में अम्बा कहती है स्त्री ही प्रभु है। अगर भीष्म अपनी प्रतिज्ञा आजन्म निभा ले तो इसका अर्थ यह हो जाता है कि पुरुष ही प्रभु है। विश्व मे नारी-शक्ति तुच्छ है उसकी महिमा प्रतिष्ठित नहीं हो सकती। किंतु देव, ऐसा तो अब तक नहीं हुआ यद्यपि भगवान् शङ्कर ने कामदेव को भस्म कर दिया तथापि उनको भी नारी शक्ति की महिमा माननी पडी। किंतु यह देवव्रत तो नारी का कोई भी मूल्य नहीं रखता। इसलिए भगवन्! आपसे इतना ही निवेदन है कि आप न्याय से प्राप्त अधिकार को लौटा दें, हमारा छीना हुआ सिंहासन पुन हमें दिला दें। नारी के आगे सब ने सिर झुकाया है। जब विश्वामित्र जैसे तपस्वी का भी तप भग हो सकता है तब देव, क्या यह तुच्छ व्यक्ति देवव्रत का व्रत भग नहीं हो सकता ? यह तो नारी-शक्ति में बडे कलङ्क की बात है।

(ख) 'आदर्श एव समस्याएँ' नामक नाटय सग्रह पुस्तक के द्वितीय एकाकी का यह उद्धृत अंश है।

सात इण्टरव्यू में से चार इण्टरव्यू में जब विनय असफल हो जाता है तब यह अपने पिता को पत्र लिखता है कि – पिता जी। सचमुच दुनिया को आज मैंने पहली बार देखा है। किताबी ज्ञान से दुनिया मे जीना मुश्किल है । दुनिया में जीने के लिए कला की आवश्यक्ता नहीं, ४२० की आवश्यक्ता है। जो ४२० जानता है वही दुनिया में रोटी खाता है और कलाकार इस दुनिया में भूखा मर हैं। आज की दुनिया में कला का कोई मूल्य नहीं, मूल्य है भापण एव चालबाजी का। व्यावहारिकता के बिना

दु सह है। आज की दुनिया में मनुष्य की कीमत व्यावहारिक से है। समाज मे अगर कोई व्यक्ति प्रतिष्ठित होना चाहता है वह पहले व्यावहारिक शिक्षा ग्रहण कर ले।

(ग) प्रस्तुत गद्यांश 'आदर्श और समस्याएँ' के अवि एकांकी 'वैज्ञानिक की पत्नी' का उद्धृत अंश है। साल भर लम्बी अवधि की प्रतीक्षा में बैठ रहने पर भी जब विभा प्रबोध से तनिक भी प्रेम नहीं मिल सका तब आखिर एक अपने हृदय की बात को प्रबोध से विभा कह ही देती है कि—क्या मैं यह पूछ सकती हूँ कि आखिर और कब तक मुझे प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ? आप का एक परीक्षण समाप्त होते ही दूसरा परीक्षण शुरू हो जाता है। नाथ, यह तो बता दीजिए कि आप कब मेरी ओर कृपा दृष्टि करेंगे। आपने तो अपनी प्रयोगशाला के चक्कर में मुझे भुला ही दिया। क्या कभी इस अभागिनी का ख्याल भी नहीं करेंगे ? मैं आपसे बंगला नहीं चाहती, मोटर नहीं चाहती, चाहती एकमात्र वही हूँ जो कि स्त्री का जन्मजात ·कार है और वह है प्रेम।

प्र०—टिप्पणी लिखिए—एकांकी नाटक, नाटक, रूपक ·निका, पर्दा।

उ०—एकांकी नाटक—एक अंक का नाटक जो कि एक छोटी कहानी की भांति पढ़ने या देखने के अन्तर पाठक या दर्शक के मस्तिष्क पर एक ही भाव की छाप डालें।

नाटक—वह दृश्य भाग है जिसकी कथा प्रसिद्ध, मनोहर या उज्ज्वल हो, जिसका नायक राजा, कोई देवता या कोई

विर्ताश हो। जिसमें शृङ्गार या वीर रस में से कोई प्रधान हो रव बाकी रस गौण हो। पाँच या सात अंक हों पर इससे अधिक नहीं।

रूपक—नाटक का असली नाम रूपक है। संस्कृत में नाटक की परिभाषा रूपक की ही परिभाषा है। नाटक रूपक का एक भेद मात्र है पर आजकल रूपक की जगह नाटक ही प्रयोग करते हैं।

यवनिका—रंगस्थल में जो सबसे आगे वाला पर्दा होता है उसे यवनिका कहते हैं। जिसके उठने से नाटक शुरू होता है और जिसके गिरने से नाटक समाप्त होता है।

पर्दा—यवनिका के अतिरिक्त रंगस्थल में जितने दृश्य दिखलाए जाते हैं उन सब को पर्दा कहते हैं।

प्र०—निम्नलिखित पात्रों में से किसी एक का संक्षेप में चरित्र-चित्रण करें—देवव्रत, विनय, विभा।

उ०—[सुविधानुसार तीनों का चरित्र-चित्रण कर दिया जाता है।]

देवव्रत—देवव्रत एक धीरोदात्त नायक है। शारीरिक गठन के साथ साथ जिसका मानसिक गठन भी अत्यन्त सुन्दर है। आत्मबलिदान उसका मूलमन्त्र है। कर्तव्य के सामने अपनी इच्छाओं को हँसते हँसते विसर्जन कर देने वाला एक दिलदार युवक है। वैयक्तिक सुख को दबा कर वह सार्वजनिक ... स्वागत करने वाला है। पिता की अवस्था से ...

कामकाज में बड़ी शिथिलता आती देख वह सद्रूप अपनी इच्छाओं का बलिदान दे कर राजपाट के कामकाज में सहाय हुआ। वह कहता है—'नहीं, मैं पागल नहीं हूँ। मैंने पिता को प्रसन्न करके सारे देवों को सन्तुष्ट किया है।

पिता धर्म पिता स्वर्ग पिता हि परमं तप।
पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवता॥

अपनी दृढ प्रतिज्ञा (आजन्म अविवाहित रहना) पर वह यावज्जीवन दृढ रहता है। उसकी दृढ प्रतिज्ञा के निभाने के लिये हम उनके लिये भी यह कह सकते हैं कि—

चन्द्र टरै सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार।
पै दृढ देवव्रत को, टरै न सत्य विचार॥

अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिये उन्हें अपने गुरु परशुराम से लोहा भी लेना पड़ा किन्तु इसके लिये वे तनिक भी विचलित नहीं हुए। अपनी नैतिक एवं चारित्रिक शक्ति के बल पर उसने भीष्म पितामह की उपाधि पाई।

विनय—एम० ए० पास एक कालिज का लड़का जिसे दुनियादारी का कोई ज्ञान नहीं—नौकरी के लिये ५—७ जगह प्रार्थनापत्र भेजता है। इण्टरव्यू में जब वह सब जगह से अयोग्य सिद्ध होता है तब उसे दुनियादारी का ज्ञान होता है। पहले वह व्यावहारिक ज्ञान से बिलकुल अनभिज्ञ था किंतु ४-५ भेंट में कहीं भी जब सफल नहीं हुआ तब जा कर उसे कुछ-कुछ व्यावहारिक ज्ञान का आभास मिलता है। लड़का—युवक—कलाकार है। संगीत, चित्रकला, अभिनय आदि विषयों में सम्पूर्ण

कालेज का नेतृत्व करने वाला। किताबी अध्ययन उस के पास बहुत अधिक है। किंतु समाज में किस तरह आना चाहिये यह वह नहीं जानता। पहले तो वह सत्यभाषी था किंतु इण्टरव्यू के बाद उसे पता लगा कि आजकल की दुनिया सत्य पर नहीं है। दुनिया में जीवित रहने के लिये दुनिया का एक निष्प्राण पुर्जा बन कर ही जीना होगा। नहीं तो आज की दुनिया में मनुष्य की कीमत नहीं। किन्तु वह दुनिया के इस गन्दे—दूषित रीति रिवाज से परे हो जाता है, उसे वह घृणित समझता है।

विभा—२३ वर्ष की एक उच्च कुल की युवती है। वह युवती है इसलिये युवती का एक हृदय उसके पास मौजूद है। युवतियाँ प्राय प्रेम चाहती हैं। किंतु दुर्भाग्य से उसकी इस पहुची हुई अवस्था में भी वह चीज नहीं मिलती है। उसका हृदय उस भूमि के समान है जिसमे केवल बीज बोने भर की आवश्यकता है दुर्भाग्य से बीज बोने वाला कृषक अपनी ही धुन में मस्त है। हरेक युवती माता बनना चाहती है। विभा भी यही चाहती थी किन्तु उसे मातृ हृदय प्राप्त करने की कोई आशा नहीं दिखलाई पडती। महीनों प्रतीक्षा में बैठी रहती है पर अन्त तक उससे रहा नहीं जाता और एक दिन वह आदर्श भ्रष्ट हो ही जाती है। पर इतना होते हुए भी वह मातृ हृदय प्राप्त करने के फेर में पथभ्रष्टा नहीं होती है। विभा कुछ उद्दन स्वभाव की जान पडती है। सहनशीलता की मात्रा - है। अपने रहन-सहन के ढग पर एव बात चीत

उससे उसकी सास नाराज सी दीख पडती है, किंतु इसमें गहरी दृष्टि से एव मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखने पर विभा का कोई दोष नहीं दिखलाई पडता। यह स्वभाव-सिद्ध है कि जिसे प्रियवस्तु न मिले तो वह असन्तुष्ट रहता है।

प्रश्न—क "आदर्श और समस्याए" पुस्तक का नाम कहाँ तक ठीक है ?

(ख) 'आदर्श और समस्याएँ" नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं।

उत्तर—(क) "आदर्श और समस्याएँ" पुस्तक का नाम इसलिए उपयुक्त एव सुन्दर है कि इस में तीन नाटक दो धारा के सकलित किए गए हैं। प्रथम एकाकी 'भीष्म प्रतिज्ञा हमारे सामने एक आदर्श उपस्थित करता है एव द्वितीय तथा तृतीय एकाकी नाटक (मनुष्य की कीमत और वैज्ञानिक की पत्नी हमारे सामने दो सामाजिक समस्याए उपस्थित करते हैं। एक व्यावहारिक समस्या का है तो दूसरा पारिवारिक समस्या का समस्या मूलक दो नाटक रहने के कारण पुस्तक के नामकरण में भी देखिए बहुवचन 'समस्याए' का प्रयोग किया गया है। आदर्श मूलक एक नाटक है इसलिये आदर्श शब्द प्रयोग करके सम्पादक ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है।

(ख) 'आदर्श और समस्याए' पुस्तक के लेखक कोई एक व्यक्ति नहीं हैं। इसमें तो तीन नाटककारों के तीन एकाकी नाटकों का सग्रह किया गया है। पहले में कुछ काट-छाँट भी गई है जो सम्पादक का ढङ्ग है। तीनों नाटकों के क्रमशः

लेखक श्री द्विजेन्द्रलाल राय, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार एवं श्री पृथ्वीनाथ शर्मा हैं। श्री पृथ्वीनाथ शर्मा ही इस पुस्तक के संपादक हैं।

प्रश्न—"आदर्श और समस्याएं" नामक नाटक में आपको कौन सा नाटक अच्छा लगता है और क्यों ?

उत्तर प्रस्तुत पुस्तक के तीनों नाटकों में हमें 'भीष्म-प्रतिज्ञा' सबसे अच्छा लगता है। अच्छा लगने का कारण कथा प्रसिद्ध एवं कल्पना की रंगीन तूलिका में रंगा होना है। भारत के प्राय सभी व्यक्ति 'भीष्म प्रतिज्ञा' की कथा को जानते हैं इसलिए कथा को समझने में कोई दिक्कत नहीं पड़ती। दूसरी बात नाटक में वीररस की प्रधानता है एवं साथ ही साथ प्राय सभी रस गौण रूप में मौजूद ही हैं। तीसरी बात—भारत सदा से आदर्श के पीछे मरता आ रहा है आदर्श की रक्षा करना भारत के लिए आदर की वस्तु है। और इसी आदर्श को 'भीष्म प्रतिज्ञा' में नाटककार ने चित्रित किया है। चरित्र चित्रण करते हुए हरेक पात्र का नाटककार ने ध्यान रक्खा है जो पात्र जिस योग्यता का है उसीके अनुसार उस पात्र का वार्तालाप कराया है। नाटक का सारा गुण भीष्म प्रतिज्ञा में प्राय दीख पड़ता है। यह रंग भूमि के लिए भी उपयुक्त है। जो कि नाटक नाम को सार्थक करता है। नाटक सरल भाषा में लिखे जाने के कारण बहुत प्रचलित हो गया है। परन्तु नाटक में एक चीज का होना बहुत ही आवश्यक है। है पात्रों के अन्दर घात-प्रतिघात का दिग्दर्शन बड़ी खूबी के साथ शुरू से अन्त तक ...

है। जिस कारण नाटक बहुत ही रोचक बन पड़ा है। वार्तालाप शिष्ट एवं रोचक है। यानि मूलतः 'भीष्म प्रतिज्ञा' सामान्य पढ़े लिखे से लेकर बड़े-बड़े विद्वानों तक की पठनीय एवं दर्शनीय वस्तु बन गई है। इन्हीं सब कारणों से हमारी दृष्टि में 'भीष्म प्रतिज्ञा' नाटक ही और दोनों नाटकों से सुन्दर मालूम पड़ता है।

चतुर्थ पत्र

चुनी हुई कहानियाँ

प्रश्न—'मुक्तिमार्ग' कहानी को संक्षेप में लिखकर लेखक की जीवनी पर प्रकाश डालो।

उत्तर—सिपाही को अपनी लाल पगड़ी, स्त्री को अपने आभूषण और डाक्टर को अपने मरीज़ों पर जो गर्व होता है, वही किसान को अपने हरे-भरे खेत को देखकर होता है।

झींगुर जब अपने गन्ने की खेत देखता था तो उसकी आँखें खिल जाती थी। खेत तो तीन बीघा ही था किन्तु उसीमे से छै सौ रुपयों की प्राप्ति की आशा थी, उसके बैल बूढ़े हो गए थे अगर गन्ना महँगे में बिक गये तो नये बैल खरीद लिए जायँगे, ऐसा झींगुर सोच रहा था।

झींगुर उद्दण्ड स्वभाव का नवयुवक था। करीब-करीब गाँव के सभी लोगों से वह लड़ चुका था। एक दिन अपने खेत में वह खड़ा हुआ था लड़का उसकी गोद मे था। उसी समय भेड़ों का एक झुण्ड उसके खेत की ओर आता हुआ दिखाई पड़ा। वह सोचने लगाये भेड़ें तो बुद्ध की हैं। वह कितना चोर आदमी है,

किसी के साथ मुरौवत करना तो यह जानता ही नहीं और मुफ्त से तो दुगुना दाम माँगता है। वह ऐसा सोच ही रहा था कि भेड़ें खेत के पास आ गईं। झींगुर ने चिल्ला कर कहा— ओ बुद्धू, देखता नहीं, उधर से क्यों भेड़ें ले जा रहा है ?"

बुद्धू ने नम्रतापूर्वक कहा—भाई बाँध पर से भेड़ें निकल जायँगी और उधर से जाऊँगा तो दो मील का चक्कर पड़ जायगा।"

झींगुर बोला—चक्कर पड़ जायगा इसका मतलब यह नहीं कि मैं अपना खेत बर्बाद करवा लूँ। तुझे धन का बहुत अभिमान हो गया है। मैं चूहड़ चमार नहीं कि तेरे रोब से डर जाऊं, लौटा ले जा इनको। बुद्धू ने आरजू मिन्नत की आज ले जाने दो, आग से कभी भी नहीं लाऊँगा।"

मगर झींगुर ने जरा भी नहीं सुनी, बुद्धू भी नहीं चाहता था कि झींगुर के मामूली झाँसे में आकर लौट जाऊँ। अगर इस तरह लौटने लगा तो भेड़ें चराना ही मुश्किल हो जायगा।"

तब तक १६ भेड़ें खेत में चली गई थीं। झींगुर से यह देखा न जा सका। वह हाथ में डंडा लेकर खेत में उतर पड़ा और बड़ी बेरहमी से भेड़ों को पीटने लगा। किसी की टाँग टूटी और किसी की कमर। भेड़ें बेचारी चिल्ला चिल्लाकर इधर उधर भागने लगीं। बुद्धू चुपचाप सब कुछ देखता रहा। झींगुर ने गरज कर कहा— "भले आदमी की तरह लौट जाओ फिर इधर से कभी न आना"। बुद्धू अपनी घायल भेड़ों की ओर देखता हुआ बोला झींगुर तुमने बहुत बुरा किया है। तुम्हें पछताना पड़ेगा।

वह ऐसा कह कर चला गया, इधर जब गाँव वालों को यह बात मालूम हुई तो वे लोग झींगुर को समझाने लगे— बुद्धू आदमी है। तुमने उससे व्यर्थ बै

होता है। आप अपनी प्रत्येक कहानी के द्वारा कोई न कोई... या शिक्षा जरूर देते हैं।

३–भगवतीचरण वर्मा ने इलाहबाद से वकालत पास ... तभी से साहित्य-सेवा करने लगे। आपने हिन्दी को पतन, चि... लेखा, इन्स्टाल मैण्ट, मानव और प्रेम सङ्गीत आदि रचनाओं... सुशोभित किया है। आपकी भाषा हिन्दुस्तानी मगर सरस है... है। वाक्य लम्बे हो जाने पर भी प्रवाह बना रहता है। आप... और अगरेज़ी शब्दो का खुल कर व्यवहार करते हैं। आप... कहानियो का प्लॉट और वर्णन करने का ढङ्ग अपना ही है।

४–श्री जैनेन्द्रकुमार हिन्दी कहानी-साहित्य के उज्ज्वल रत्न हैं... आपने कहानी-साहित्य को नई शैली, नए मुहावरे और ... विचारों से पूर्ण किया है। आप पैदा तो अलीगढ़ में हुए थे ... रहते दिल्ली में ही रहे हैं। आपका एकमात्र उद्देश्य साहित्य-सेवा... है। आप उच्चकोटि के उपन्यास लेखक भी हैं।

आपकी एक रात, वातायन, स्पर्द्धा, नीलम देश की राजकन्या... परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, फाँसी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

५—सत्यवती मलिक—आप श्रीनगर निवासी हैं। आपका... बगला भाषा और चित्रकला से अधिक लगाव है। ... रचना है दो फूल।

७—चन्द्रगुप्त जी विद्यालङ्कार पश्चिमोत्तर पञ्जाब के एक गाँव
पन्न हुए थे परन्तु इनकी शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल काँगड़ी में हुई।
शैशव से ही साहित्यिक अभिरुचि थे। आपने विश्व
की साहित्य का अच्छा अध्ययन किया हुआ है। आपकी
क कहानियों का अनुवाद अंगरेजी बंगला, गुजराती, मराठ
उर्दू आदि भाषाओं में हो गया है। आपकी कहानियों की
शैली निराली और मनोवैज्ञानिक होती है। आपने कहानी-
हित्य को अमावस, भय का राज्य, चन्द्रकला और नाटक-
हित्य को अशोक, काफ़िर और रेवा जैसी सुन्दर रचनाएँ
हैं।

८—श्री वात्स्यायन सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० हीरानन्द शास्त्री के
हैं। आपकी पढ़ाई लिखाई लाहौर में हुई। आपने हिन्दी
हित्य में 'अज्ञेय' के नाम से पदार्पण किया। आप कलकत्ता के
शाल भारत' के प्रधान संपादक भी रह चुके हैं। आपकी
ानी और कविता बहुत गम्भीर और सरस होती हैं। आपकी
लेखन-शैली बिलकुल विचित्र प्रकार की है। कथानक भी आप
पने ही ढङ्ग के चुनते हैं।

गल्प-संग्रह में विपथगा, उपन्यास में शेखर और कविता में
ग्नदूत और चिंता आपकी रचनाएँ हैं।

प्रश्न—कलङ्क और बदला की कहानी लिखकर उसके गुण
ों को बताओ।

उत्तर-मार्टिन और उसकी दोस्त ग्रिस वर्षा में खड़े हुए टीले
भीग रहे थे। ग्रिस ने मार्टिन को कहा तुम्हें भी
दि कर देना होगा मार्टिन। नहीं तो शत्रुओं को

एक बना बनाया मकान रहने के लिए मिल जायगा।" मार्टिन
कहा—'अगर इसको नष्ट करने से ही काम हो सकता है तो ए
करना क्या जरूरी है ?"

क्रिस ने समझा कि मार्टिन अपने विशाल भवन का मोह
रहा है। क्रिस को मार्टिन की बात बुरी लगी। वह वहाँ
खिन्न होकर चली गई।

उधर मार्टिन अपना षडयन्त्र सदस्य बनाने के लिये चला
और इधर सेना में अफवाह फैल गई कि वह विद्रोही है, कायर है
मार्टिन जब अपने काम से लौट रहा था तो एक बूढ़ी को रोते हु
देखा। उसने उसे अपने घर चलने को कहा। बाकी लोगों को
उसने वहाँ चलने को आमन्त्रण दिया किन्तु कोई भी तैयार न
हुआ। मार्टिन ने तीनों घोड़ों को जिन पर सामान लाद रखा
घर लेकर चला आया। उस सामान को उसने घर की बीच व
कोठरी में एक बड़ा सा गढ़ा खोदकर गाड़ दिया। और उस गड्ढे
एक पतली सी नाली खोदकर रस्सी बाहर ले गया। ऊपर से
वगैरह डाल दिए जिससे कोई देख न सके।

उधर क्रिस को गाँव के लोगों ने बताया कि मार्टिन साम
वगैरह ले आया है। शायद वह यहीं रहना चाहता है। क्रि
घोड़ी पर चढ़कर सीधे मार्टिन के घर पहुँची और उससे पूछा—

"मैं क्या सुन रही हूँ मार्टिन !"

मार्टिन बोला—ठीक ही सुन रही हैं।

क्रिस गुस्से में उसे 'कायर' कहकर छावनी की तरफ चली
और थोड़ी देर के बाद ही कुछ सैनिकों के दल ने मार्टिन को

रे लिया। मार्टिन ने अपराध पूछा तो सिपाहियों ने कहा कि तुम
ायर हो। तुम को मृत्यु-दण्ड दिया जायगा।

मार्टिन जेल में बन्द कर दिया गया। बहुत मुश्किल से तैयार
रके उसने एक सिपाही से क्रिस को पत्र लिखकर भेजा।

इधर मार्टिन के मकान की तरफ क्रिस जा रही थी कि उसने
खा—मार्टिन का प्यारा दोस्त साइमन हाथ में पिस्तौल लिए एक
स्सी में आग लगा रहा है। क्रिस उससे बातें कर रही थी कि
ारा का सारा मकान जिसमें शत्रुओं के सात सौ सैनिक ठहरे
ए थे, उड़ गया। क्रिस हैरान रह गई। उसने पूछा यह तुमने
ब सोचा था? साइमन बोला—यह षड्यन्त्र मेरा नहीं, मार्टिन
ा था। क्रिस सन्न रह गई। वहाँ से भागी। इधर मार्टिन
थ स्थान पर लाकर खड़ा कर दिया गया। हजारों आदमी उस
श्य को देखने के लिए खड़े थे। वहाँ की रीति थी कि कायर को
ीने के बजाय पीठ पर गोली मारी जाती थी। सैनिकों ने उसे
ाँध कर गोली चला दी। वह झटका देकर घूम गया। उसी समय
क्रिस्टाबेल भी आ गई। उसके हाथ में मार्टिन की मुक्ति का पत्र
ा। क्रिस के वहाँ पहुँचते पहुचते मार्टिन समाप्त हो चुका था।
क्रिस्टाबल के मुँह से आह भरी आवाज निकली—'अकलङ्क!'
ौर वहीं गिर पड़ी।

इस कहानी का कथानक बहुत सुन्दर है और आदि से अन्त
क उसे कुशलतापूर्वक निभाया गया है। मार्टिन और क्रिस दोनों
कट्टर देशभक्त और वीर हैं। क्रिस वीर होते हुए भी ..
ही किन्तु मार्टिन बड़ा भारी समझदार और कूटनीतिज्ञ

जिस की गलती और जल्दबाजी से ही बेचारे मार्टिन की जान बची जाती है। स्त्रियो मे जो स्वाभाविक दुर्बलता होती है उसका इस में अच्छा प्रमाण मिलता है। कहानी में दोष किसी तरह का नहीं। यह सर्वाङ्ग सुन्दर कहानी है।

बदला—देश भर में भीषण अकाल पडा हुआ था। गाव के लोगों का ख्याल था कि ईश्वर उन पर नाराज है। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था। मोती बेचारा भी चुपचाप घर मे पडा था। ज़मींदार को मालगुज़ारी देनी थी। उसके पास कुछ भी शेष नहीं रह गया था। उसने अपनी एकमात्र जायदाद बछिया को बेचकर बम्बई जाने की सोची। अपनी पत्नी सोना को उसके घर पहुचा दिया।

मोती ने अपनी बछियावाली को तिवारी जी के हाथों ७०) में बेच दिया और बम्बई चला गया।

एक दिन आवारा की तरह घूमते हुए वह एक डैरी फार्म की ओर चला गया। वहा अपने जैसे ही गरीब आदमी से मालूम किया तो ज्ञात हुआ कि नौकरी मिल जायगी। वह साहब के सामने पेश किया गया और वहा पर नौकर हो गया, कुछ दिनों के बाद उसने इतने पैसे एकत्रित कर लिए कि अपनी 'डरी' खोल दी। और थोड़े दिनों के बाद वह उस 'डेरी' को एक सेठ के हाथों एक लाख रुपयों मे बेचकर घर चल पडा। घर पर आकर मोती ने मकान बनवाना शुरु कर दिया। उसे मालूम हुआ कि जमींदार आजकल बहुत बुरी अवस्था में हैं। अगले दिन वह गाय नीलाम हो रहा था। जिमीदार के पास इतना पैसा नहीं था कि वह उसे अपने हाथ में रख सकता। मोती को मालूम हुआ तो वह भागा हुआ जमींदार के यहां पहुचा। उसकी बुरी हालत हो रही थी।

ने कहा—लीजिए जमींदार साहब ! आपके चरणों में एक लाख रुपए समर्पित हैं। जमींदार हैरान हो कर मोती की तरफ देखने लगा।

मोती की कृपा से उस जमींदार की इज्जत बच गई।

गद्य चयनिका

प्रश्न—अपनी पुस्तक गद्य-चयनिका की भूमिका का सारांश लिखिये—

उत्तर—संसार की अन्य वस्तुओं के समान भाषा भी निरन्तर बदलती रहती है। जो रूप हिंदी का अब है वह ५० साल पहिले न था, और अब से यह ५० वर्ष बाद न मिलेगा। एक समय ऐसा भी था जब कि हिंदी नाम की कोई भाषा ही नहीं थी। इस की उत्पत्ति कब हुई, इस विषय में विद्वानों में बहुत से मतभेद हैं। प्रसिद्ध भाषातत्वज्ञ सर जार्ज ग्रियर्सन ने हिंदी भाषा के इतिहास को इस प्रकार बाँटा है—

१	७००	ई०	से	१२००	तक	चारण काल
२	१५४०		से	१७००	तक	महान काल
३	१७००	ई०	से	१८००	तक	शुष्क काल
४	१८०२		से	अब	तक	आधुनिक काल

हिंदी-साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान प० रामचन्द्र शुक्ल ने इस प्रकार लिखा है—

१ आदि काल	वीरगाथा काल	स० १०५० से	
२ पूर्व मध्यकाल	भक्तिकाल	स० १३७५ से	

३ उत्तरमध्यकाल रीतिकाल स० १६०० से अब तक
४ आधुनिक काल गद्य काल १६६० से अब तक

इस काल विभाग से यह तो विदित है कि उन कालों में उन न विषयों की प्रचुरता रही होगी। यद्यपि अन्य विषयों की रचना भी किसी न किसी रूप में प्रत्येक काल में रहती है, परन्तु जिस विषय की रचना प्रधान होती है उसी नाम से उस पुकारन लगते हैं। जैसे आधुनिक काल गद्य-काल कहा जाता है परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि कविता आदि की रचना इस काल में नहीं हुई परन्तु इसका अभिप्राय यह है कि इस काल में अधिकतर रचना गद्य की ही हुई है।

सबसे पहली गद्य-रचना हमें गोरखनाथ की मिलती है। उसके बाद श्री विट्ठलनाथ रचित शृगार रस-मण्डल नामक रचना उपलब्ध है। "चौरासी वैष्णवों की वार्ता" आदि अनेक ग्रंथ मिलते हैं। इसी समय (स० १६८०) जटमल द्वारा लिखित गोरा बादल की कथा लिखी मिलती है जिस में खड़ी बोली की पुट पर्याप्त मात्रा में मिलती है। इस प्रकार अन्य कई ग्रंथ पद्य मिश्रित गद्य भाषा में निकले। उत्तरीय भारत में अंगरेजी राज्य फैलने के साथ साथ हिंदी के गद्य का भी थोडा थोडा विकास शुरू हो गया। इस समय के लेखक चतुष्टय (सदा सुख लाल, इंशा अल्लाखाँ, लल्लूलाल और सदलमिश्र) ने वास्तविक गद्य की नींव डाली, इन्होंने सुखसागर, रानी केतकी की कहानी तथा प्रेम सागर आदि गद्य-ग्रन्थ लिखे।

इसके ६० साल बाद तक गद्य में कोई विशेष ग्रन्थ नहीं लिखे गये। यद्यपि सरकारी अदालतों में उर्दू को आश्रय मिल

हिंदी की उन्नति में कुछ रुकावट अवश्य पड़ी तो भी हिन्दी भाषा मी अपने प्रयत्न करते ही रहे। बनारस से 'बनारस अखबार, सुधारक", आगरा से "बुद्धिप्रकाश" आदि अखबारों का प्रकाशन आरम्भ हो गया। गुजराती होते हुए भी महर्षि दयानन्द ने हिन्दी में अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा, जिससे कि हिन्दी को बहुत लाभ हुआ। कुछ लोग (राजा लक्ष्मणसिंह आदि) तो उर्दू शब्दों का बहिष्कार करने के पक्ष में भी थे। फिर राजा लक्ष्मणसिंह ने शुद्ध हिन्दी में अनुवाद किया।

यद्यपि इस प्रकार गद्य-ग्रंथों का तांता सा बंध गया था, फिर भी भाषा पर कोई नियन्त्रण न था। अपने जीवन काल में भारतेन्दु ने इस कमी को सुन्दर रूप से पूरा किया आपने कितने ही ग्रंथों का अनुवाद किया और स्वयं भी लिखे। आपके काल में आपकी प्रेरणा से अनेक पत्र निकलने लगे और हिंदी-गद्य का रूप परिमार्जित हो गया। बंगला के सुन्दर ग्रन्थों का अनुवाद होने लगा जिससे कि साहित्य भण्डार की कमी पूरी होने लगी। गद्य के रूप का कुछ परिमार्जन होने पर भी अभी उसमें व्याकरण सम्बन्धी अनेक अशुद्धियों पर लोग ध्यान ही न देते थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस विषय पर अथक परिश्रम किया और गद्य का आधुनिक रूप बहुत कुछ रूप में उन्हीं की कृपा का फल है। इसके बाद श्री बाबू श्यामसुन्दर दास, पद्मसिंह शर्मा, बनारसी दास चतुर्वेदी, गणेश शङ्कर विद्यार्थी, प्रेम चन्द तथा रामचन्द्र शुक्ल आदि कितने ही विद्वानों ने हिंदी के को सुन्दर रत्नों से भर दिया। खड़ीसा आदि की लहर ... गई। अब तो खुसरो तथा ...

अनेक मुसलमान भाई भी हिंदी में सहयोग दे रहे हैं, इनमें ज़्यादा वगश मिर्ज़ा, अज़ीम बेग चगताई तथा अख्तर हुसैन रायपुरी के नाम उल्लेखनीय हैं।

अब तो हिंदी में दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अब तो एक नया प्रश्न सामने है कि हिंदी मे सस्कृत के शब्द अधिक हों या फारसी के। दोनों पक्ष के लोग अपने २ प्रयत्न कर रहे हैं। परन्तु यह तो स्पष्ट ही है कि राष्ट्र-भाषा वही हो सकती है जिसे कि देश के अधिकांश प्रांत समझ सकते हों। देखें इस झगड़े का भविष्य कैसा रहता है।

प्रश्न—अपनी पाठ्य-पुस्तक 'गद्य चयनिका' के राजा लक्ष्मणसिंह, भारतेंदु हरिश्चन्द्र, पद्मसिंह शर्मा, रामचन्द्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, लेखकों का संक्षिप्त जीवन चरित्र लिखो।

राजा लक्ष्मणसिंह

उत्तर—आपका जन्म सम्वत् १८८३ तथा मृत्यु सम्वत् १९५६ में हुई, आपने बहुत दिन तक इटावा में डिप्टी कलक्टर के पद पर काम किया। हिंदी की जो सेवा आपने की वह चिरस्मरणीय रहेगी। आप कठिन उर्दू शब्दों के विरोधी तथा संस्कृत-मिश्रित हिंदी के पक्षपाती थे। यद्यपि आपकी भाषा में कहीं कहीं ब्रजभाषा के ठेठ शब्दों का प्रयोग मिलता है, परन्तु फिर भी अधिकांश रूप में आपका गद्य परिमार्जित था। उस हिंदी के लिये, जो समय क्रान्ति का था, उस समय पर आपने हिंदी की सेवा कर पथ-प्रदर्शन का काम किया। आपने अभिज्ञान शाकुन्तला आदि ग्रन्थों का सुंदर अनुवाद किया।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र

आपका जन्म सम्वत १६०७ मे हुआ था। आपके पिता का नाम गोपालचद्र (गिरधारीदास) था। पिता के भाव होने के कारण आप भी बचपन से ही कविता करने लगे थे। आपने कितने ही ग्रन्थो का अनुवाद किया और कितने ही मौलिक ग्रथ लिखे। इन दिनों उर्दू-मिश्रित तथा संस्कृत मिश्रित हिन्दी का झगड़ा चल रहा था। आपने संस्कृत मिश्रित हिन्दी को अपनाया।

'कवि वचन सुधा' आदि तीन पत्रिकाए आपने निकाली थी। हिन्दी गद्य का महत्वपूर्ण परिमार्जन करने के कारण आपको आधुनिक हिंदी का जन्मदाता कहा जाता है। ३५ वर्ष की स्वल्प आयु मे आपने जितने अधिक प्रशसनीय काम किये उतना काम शायद ही किसी ने किया हो। आपका स्वर्गवास संवत १६४२ मे हुआ।

पद्मसिंह शर्म्मा

आपका जन्म सवत् १६३३ में नायक नगला नाम का ग्राम जिला बिजनौर मे हुआ था। आप हिंदी, संस्कृत तथा फारसी के विशेषज्ञ थे। पुस्तकों के सग्रह का शौक अपूर्व था। आपने हिंदी-जगत् मे तुलनात्मक समालोचना का ढग सबसे पहले चलाया। आपकी भाषा मे संस्कृत तथा उर्दू के शब्दो का सुन्दर सामञ्जस्य दिखाई देता है। आपकी भाषा उछल कूद से भरी होने पर भी प्रभावपूर्ण है। आपकी भाषा की यदि कुछ पक्तिया लेकर बाहर निकाल कर रख दो जाँय तो व स्पष्ट मालूम हो जाय कि ये पंक्तियां शर्मा जी की हैं आपके लेखों में आपके व्यक्तित्व की छाप रहती है। आपका बिहारी सतसई पर लिखा

भाष्य" हिंदी-साहित्य की स्थायी शोभा है। इसी कृति पर आप को मंगलाप्रसाद पारितोषक मिला था। मुज़फ्फरपुर में होने वाले अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन के आप प्रधान थे। आपका अधिक जीवन अपने गाव में तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में व्यतीत हुआ। सम्वत् १९८९ में आप का स्वर्गवास हो गया।

रामचन्द्र शुक्ल

आपका जन्म वस्ती जिले में हुआ था। आधुनिक समालोचकों में आपका स्थान सर्वप्रथम है। आप प्रारम्भ में कुछ दिन तक किसी सरकारी पद पर भी काम करते रहे थे। अंत में आप बनारस विश्वविद्यालय में हिंदी-विभाग के अध्यक्ष नियुक्त हो गये। आलोचनात्मक तथा गवेषणात्मक साहित्य की जो कमी मन की आंखों में खटकती थी, उसको आप ... "लाइफ आफ एशिया" नामक अंगरेजी पुस्तक का हिंदी अनुवाद भी किया था। आप ब्रजभाषा तथा हिंदी दोनों पर समान रूप से अधिकार रखते थे। आपकी लेखन शैली अपने ढंग की निराली है उस पर आपके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। आपको "चिन्तामणि" नामक प्रबन्ध-संग्रह पर मंगला... पारितोषिक भी मिला था। हिंदी-साहित्य का इतिहास ... सर्वोत्कृष्ट रचना है। हिंदी के दुर्भाग्य से कुछ दिन हुए आपका स्वर्गवास हो गया।

जयशङ्कर प्रसाद

आपका जन्म सम्वत् १९४७ में काशी में हुआ था

हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी के विद्वान् थे, उर्दू पर भी आपका अधिकार था। आप ने कविता, नाटक तथा कहानी प्रत्येक विषय में बहुत कुछ लिखा है। हिन्दी में छायावाद तथा भिन्न तुकान्त कविता के निर्माता आप ही समझे जाते हैं।

आपकी भाषा साधारण पाठक के लिये क्लिष्ट अवश्य है, क्योंकि स्थान स्थान पर संस्कृत के दुरूह शब्दों की भरमार मिलती है, किन्तु फिर भी भाषा सुन्दर तथा परिमार्जित है। आप के नाटकों में से विशाख, अजातशत्रु तथा स्कन्दगुप्त के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। तितली और कङ्काल आप के प्रसिद्ध उपन्यास हैं। आपका कामायनी नामक महाकाव्य हिन्दी-साहित्य में अपूर्व ग्रन्थ है, हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से इस महाकाव्य पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिला है। हमारे दुर्भाग्य से कुछ दिन हुए आपका स्वर्गवास हो गया है।

प्रश्न—निम्नलिखित सन्दर्भों की व्याख्या करो तथा उनके अर्थ भी बताओ।

(अ) जातीय गुणों या अवगुणों को सरकारी कानून घास या जड़ पेड़ की तरह नष्ट-भ्रष्ट नहीं कर सकते, वे किसी और रास्ते में न सिर्फ उमड़ आयेंगे वरन पहले से ज्यादा ताजगी और हरियाली की हालत में हो जायेंगे। जब तक किसी जाति व प्रत्येक व्यक्ति में मौलिक सुधार न किया जाए, तब तक ऊँचे दर्जे का देशानुराग और सर्वसाधारण के हित की वाँच्छा केवल कानून के बदलने से, या नये कानून के जारी करने से नहीं हो सकती।

(अ) हा, तू अपने कारण सम्राटों के सिर बड़े बड़े राज्य तहस नहस करा डालता है। मनुष्य को धोखे मे डालता है कि तुझे देव मुकुट में लगाकर वह देव अपने वश में कर सकता है ? सुन्दरियों की सहज पर भी अपनी कृत्रिमता से पानी फेरता है।

(इ) नक्षत्र चिरन्तन हैं, तो हम भी वैसे क्यों नहीं मनुष्य का यह आनन्दोत्सव कोई आज का नहीं है। इसे युग, युगान्तर के युगान्तर बीत चुके हैं। कितने उत्पात में, उलट पुलट में, कितने ध्वंस के चितानल मे घूमना फिर आज तक जीवित है। इसके जीवन की फूलझड़ी निरन्तर को आभूषित कर रही है।

(ई) आप मनोहर सुख के फन्दे में फस कर जातीय कर्तव्य मत भूलिये। सब प्रकार की वासनाओं और से विरक्त होकर इस समय केवल वीरव्रत धारण का मेरा मोह छोड़ दीजिये। भारत की महिलाएं स्वार्थ सत्य का सहारा करना नहीं चाहतीं। आर्य महिलाओं के समस्त संसार की सारी सम्पत्तियों से बढ़कर सती अमूल्य धन है।

उत्तर—(अ) "आत्मनिर्भरता" नामक लेख से उद्धरण लिया गया है—

सरकार व कानून जातीय गुणों और दुर्गुणों को नहीं कर सकते। (उन्हें जड़ से नहीं मिटा सकते) यदि तरह उनका बाह्य रूप नष्ट भी कर दिया जाय तो वे पहले अधिक शक्ति और नवीनता के साथ उत्पन्न हो जावेंगे।

नों के साथ मुरौवत करना तो यह जानता ही नहीं और मुझ से दुगुना दाम माँगता है। वह ऐसा सोच ही रहा था कि भेड़ें के पास आ गईं। झींगुर ने चिल्ला कर कहा—ओ बुड्ढे, रा नहीं, इधर से क्यों भेड़ें ले जा रहा है?"

बुद्धू ने नम्रतापूर्वक कहा—भाई बाँध पर से भेड़ें निकल गा और चक्कर से जाऊँगा तो दो मील का चक्कर पड़ जायगा।"

झींगुर बोला—चक्कर पड़ जायगा इसका मतलब यह नहीं मैं अपना खेत बर्बाद करवा लूँ। तुम्हें धन का बहुत अभिमान गया है। मैं चूहड़ चमार नहीं कि तेरे रोब से डर जाऊँ, लौटा जा इनको। बुद्धू ने आरज़ू मिन्नत की आज ले जाने दो, र से कभी भी नहीं लाऊँगा।"

मगर झींगुर ने ज़रा भी नहीं सुनी, बुद्धू भी नहीं चाहता कि झींगुर के मामूली झाँसे में आकर लौट जाऊँ। अगर ार लौटने लगा तो भेड़ें चराना ही मुश्किल हो जायगा।"

तब तक १६ भेड़ें खेत में चली गई थीं। झींगुर ने यह देखा था मचा। वह हाथ में डंडा लेकर खेत में कूद पड़ा और बड़ी मी से भेड़ों को पीटने लगा। किसी की टाँग टूटी और किसी र कमर। भेड़ें बेचारी चिल्ला चिल्लाकर इधर उधर भागने लगीं। द्धू चुपचाप खड़ा कुछ देखता रहा। झींगुर ने गरज कर कहा—ब अच्छी तरह लौट जाओ फिर इधर से कभी न आना"।

बुद्धू अपनी घायल भेड़ों की ओर देखता हुआ बोला झींगुर ने ज़ुल्म किया है। तुम्हें पछताना पड़ेगा।

बुद्धू, घर चला गया, इधर जब गाँव वालों को यह मालूम हुआ तो लोग झींगुर को समझाने लगे—"देखो भाई द्धू बड़ा झगड़ालू आदमी है। तुमने उसका व्यर्थ ही

ही मनुष्य का आनन्दोत्सव भी अनन्त काल का है, आज का
इस तरह मनुष्य को आनन्द मनाते सैकड़ो युग बीत गये
संसार के विस्टतम परिवर्तनो में, उत्पातों में, विनाशकारी
में भी यह मानव अचल रहा है, जीवित रहा है। मनुष्य
जीवन के आनन्दोत्सव अनन्त को सदा से ही
करते आये हैं।

ई) सरदार चूडावत युद्ध के लिये जा रहे हैं। तीन
दिन ही पहले आई हुई पत्नी से विदा ले रहे हैं। पत्नी
लिये उत्साहित करती हुई कहती हैं—

आप इस क्षणभंगुर मीठे सुख के जाल में फंस कर
जातीय कर्तव्य न भूलें। इस समय तो सब प्रकार
और वासनाओं का ध्यान छोड कर आप को केवल युद्ध का
करना चाहिये। आपको मेरा मोह नहीं करना चाहिये
भारत की वीर रमणियां केवल अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिये
का त्याग करना कभी भी स्वीकार नहीं कर सकतीं। आर्य
नाओं के लिये सतीत्व धन के सामने संसार की सारी
उतियाँ बिलकुल तुच्छ हैं।

प्रश्न—न्यायकारी तथा मुण्डमाल इन दोनों कहानियों
आप क्या शिक्षा ग्रहण करते हैं? संक्षेप में लिखो।

उत्तर—न्यायमन्त्री कहानी से पहली ... ने
... की प्राप्ति होती है। वृद्ध ब्राह्मण
परन्तु फिर भी द्वार पर अतिथि ...
... मल खिल उठता है। यह हमें ...

समझता है। निर्धन होते हुए भी उसकी सेवा में यथाशक्ति कमी नहीं करता।

दूसरी शिक्षा गुण-ग्राहकता है। राजा अशोक शिशुपाल की बातों से प्रभावित हो जाता है। उसे मन में दृढ़ निश्चय हो जाता है कि यह मनुष्य अवश्य ही न्याय का डंका बजा देगा। राजधानी में पहुंचते ही वह शिशुपाल को बुलवाता है। और राजमुद्रा देकर उसे न्याय मन्त्री के पद पर नियुक्त कर देता में जब राजा अपराधी के रूप में पेश होकर न्यायमन्त्री आता है और न्याय मन्त्री फांसी का दण्ड सुना देता है अदालत में कोलाहल मच जाता है। बहुत से मनुष्य को मारने के लिये तैयार हो जाते हैं तो उस समय को शांत कर देता है क्योंकि वह समझता है कि कर रहा है। यह राजा की गुणग्राहकता है।

तीसरी शिक्षा है ठीक

चाहिये । पत्नी का या सम्पत्ति का लोभ हमारे मार्ग में बाधक नहीं होना चाहिये । अभी चूडावत के विवाह को चार ही दिन हुए कि युद्ध का आह्वान होता है वह युद्ध के लिये चल देता है। प्रेम के महत्त्व को समझता है परन्तु उसे युद्ध के मार्ग का रोड़ा बनने देना नहीं चाहता । उस के आगे उसकी पत्नी सामने आती है, यह वीरता की साक्षात् प्रतिमा है एक नारी का हृदय हुए भी वह अपने पति को युद्ध में भेजती है। वह कहती है भारत की महिलाएं अपने स्वार्थ के लिये कभी भी सत्य का गला घोंटना पसन्द नहीं करतीं, सतीत्व ही उनका अमूल्य धन है।

इस से भी आगे जब वह यह समझती है कि कहीं उसका प्रेम पति को कर्त्तव्य मार्ग से च्युत न कर दे तो वह तलवार से अपना सिर उतार कर पति के पास भिजवा देती है, जिसे पा कर उसका पति मतवाला हो कर शत्रुओं में भगदड़ मचा देता है। यह कहानी आदि से अन्त तक कर्त्तव्य भावना से भरी हुई है। व्यक्ति का समाज के लिये बलि कर देना यही इस की मुख्य शिक्षा है।

प्रश्न—भाषा की ... स्वतन्त्रता ने अधि

ाभिमान के स्थान पर दूसरों को प्रसन्न करने की प्रवृत्ति को
ा करती है। भाषा के उस महत्व को ध्यान में रखकर ही
आयर्लैंड ने राष्ट्रीय स्वाधीनता से अधिक महत्त्व भाषा की
गुति को दिया था। इसी महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इङ्गलैंड
प्रतिनिधि ने मौलिकभाषा में ही हस्ताक्षर किये थे। राष्ट्रीय
ाधीनता के छिन जाने पर भी हमारे पास भाषा की स्वतन्त्रता
अवशिष्ट है जिस से कि हम उन्नति कर सकते हैं, यही
बलाने के लिये दक्षिण अफ्रीका के जनरल बोथा ने जार्ज के
र अपनी डच भाषा में ही बोलना स्वीकार किया था।

इस के अतिरिक्त भाषा का जाति की संस्कृति के साथ
ा गहरा सम्बन्ध होता है। राष्ट्रीय स्वाधीनता बिना अपनी
स्कृति और सभ्यता के किसी काम की नहीं होती। स्वाधीनता
भाषा अच्छी है, हम भाषा से स्वाधीनता प्राप्त कर सकते हैं,
षा देश का जीवन है, उसका ऐश्वर्य है। इस लिये राष्ट्रीय स्वत-
ता से भी अधिक महत्त्व भाषा की स्वतन्त्रता को है।

प्रश्न—संक्षेप से लिखो कि कुणाल ने अपने नेत्र दुबारा
े प्राप्त किये।

उत्तर—राजा की आज्ञा से रानी तिष्यरक्षिता बन्दी बना
गई। प्राण दण्ड देने के लिये दो भृत्य उसे सिंह के पिंजरे
पास ले जाते हैं। अपनी मृत्यु को सोच कर रानी व्याकुल हो
ती है। सहसा कुणाल प्रकट होता है और रानी तिष्य-
ता के स्थान पर स्वयं सिंह के पिंजरे के पास जाता है। वह
ने प्राण देकर भी रानी के प्राण बचाना चाहता है।
ता को प्रणाम कर फिर शीघ्रता से पिंजरे के

परन्तु अशोक की आज्ञा पालन कर फिर रुक जाता है। ...
माता को छोड़ने के लिये कहता है और उसके न छोड़े जाने प
अपने प्राण देने को उद्यत हो जाता है। रानी छोड़ दी जाती
उसका हृदय पश्चात्ताप तथा प्रेम से भर जाता है। वह
से कुणाल के नेत्रों के लिये प्रार्थना करती है, भिक्षुओं सहित मह
त्मा यश प्रकट होते हैं इस प्रकार अपनी दया तथा प्रेम के कार
कुणाल गये हुए नेत्र फिर से प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न अपनी पुस्तक के आधार पर 'नल दमयन्ती पुन
मिलन, पुत्रशोक, मेले का ऊट श्री कृष्ण, करुणा, शकुन्तला की
विदा-इन लेखों का साराश लिखो।

नल दमयन्ती

विदर्भ देश में भीमसेन नामक एक राजा था। उस
कन्या दमयन्ती रूप तथा गुण में अद्वितीया थी। उसका विव
नल नामक राजा से हुआ। राजा नल से उसे दो सन्तानें हुई
पुत्र, एक पुत्री। नल भाई पुष्कर से जुए में हार कर वन चल
था। लड़के तथा लड़की को उन के मामा के यहाँ भेज दिया
दमयन्ती पतिव्रता स्त्री थी। वह कैसे उस का साथ छोड़ सक
थी। नल के मना करने पर भी वह उसके साथ वन में गई।
नल दमयन्ती को इस प्रकार विपत्ति में न डालना चाहता था, इस
लिये एक दिन उसे सोता छोड़ कर उसकी आधी साड़ी अपने आप
पहन कर वन में चला गया। उस सुनसान वन में अपने को
अकेला पाकर दमयन्ती बहुत घबराई। वह उठी ही थी कि एक
विशालकाय अजगर ने उसे घेर लिया। दूर से आने वाले एक

किया। उसने दूसरी बार फिर जुआ खेला। इस बार वह जीत गया और उसके वे दिन फिर लौट आये।

"पुनर्मिलन"

असुरों का संहार कर लौटते हुए दुष्यन्त और मातलि दर्शन करने की इच्छा से आश्रम के अन्दर घुस जाते हैं। दुष्यन्त ने सुना कि कोई स्त्री बालक को कह रही है कि ऐसी चपलता मत कर। इतने में ही एक बालक शेर के साथ खेलता दिखाई देता है। दोनों स्त्रिया उसे ऐसा करने से मना करती हैं परन्तु वह नहीं मानता। एक स्त्री उसके खेलने के लिये मिट्टी का मोर ले आती है। उन स्त्रियों के कहने पर दुष्यन्त बालक को शेर के साथ खेलने से मना करता है, बालक उसका कहना मान लेता है। यह ऋषिकुमार नहीं है अपितु क्षत्रिय का बालक है यह जान कर दुष्यन्त की उत्कण्ठा बढ़ती जाती है। दुष्यन्त के पूछने पर एक स्त्री कहती है वह पत्नी-त्यागी पुरुष का नाम नहीं लेती। यह सुन कर राजा की उत्सुकता और भी अधिक हो जाती है।

बच्चे का तवीज गिर जाता है, राजा उठाने को झुकता है कि वे स्त्रिया मना करने लगती हैं क्योंकि इसे बालक के माता पिता के सिवाय और कोई नहीं उठा सकता, यदि उठावे तो यह तवीज़ सर्प बन कर उसे काट लेता है। परन्तु राजा उनकी बातों का ध्यान न कर उस तवीज को उठा लेता है। उस आदमी को दुष्यन्त समझकर वे स्त्रिया शकुंतला को सूचना देने जाती हैं। इधर बालक को जब राजा ने अपनी गोद में उठाया तो वह कहने लगा कि तुम मेरे पिता नहीं, मेरा पिता तो दुष्यन्त है, मैं

अपनी माँ के पास जाऊगा। राजा और भी अधिक चकित हो जाता है।

इतने में ही शकुंतला तपस्विनी के वेष में राजा के पास आती है। राजा उसके पैरों पर गिर पडता है और उससे क्षमा मागने लगता है। शकुन्तला पति को उठाकर कहती है कि यह आपका नहीं अपितु मेरा ही दोष है। इतने मे इधर मातलि भी आ जाता है। स्त्री तथा पुत्र के मिलने पर राजा को बधाई देता है। वे सब ऋषि कश्यप के पास जाते हैं। ऋषि सब को आशीर्वाद देते हैं। इस प्रकार दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है, जिस से कि सब में अपार आनन्द छा जाता है।

पुत्र शोक

श्मशान का दृश्य है। हरिश्चन्द्र श्मशान का डोम है, आधा कफन माँगना उसका काम है। एक दिन रोहिताश्व को सर्प डस लेता है शैव्या अपने इकलौते बेटे को लिये हुए रात के समय श्मशान मे आती है। वह तरह तरह के विलाप करती है जिसे सुनकर हरिश्चन्द्र का हृदय पिघल जाता है।

स्त्री को इस प्रकार विलाप करते देख कर उसे भी पत्नी तथा पुत्र की याद आ जाती है। धीरे धीरे शव के पास जाकर उसे पहचानने का प्रयत्न करता है। पहचान लेने पर उसके दुख का कोई ठिकाना नहीं रहता। वह मन ही मन अपने धर्म को धिक्कारने लगता है। वह धर्म को ढोंग समझता है। शोक के कारण आत्महत्या करना चाहता है परन्तु सहसा धर्म का वचन उसके सामने फिर आ खडा होता है। वह मरना छोड कर आधा कफन मागने के लिये तैयार हो जाता है।

शैव्या भी दुःख के कारण आत्महत्या करना चाहती है। पेड़ की आड़ में से हरिश्चन्द्र उसे धर्म का उपदेश देते हैं। शैव्या रुक जाती है धर्म के अनुसार हरिश्चन्द्र आधा कफन मांगने के लिये हाथ बढ़ाते हैं आकाश से पुष्पवृष्टि होने लगती है। कुछ आकृति और कुछ स्वर दोनो की सहायता से शैव्या अपने पति को पहचान लेती है पहचान कर अब उसका शोक भी अधिक बढ़ जाता है। उसके पास कर देने के लिये आधा कपड़ा भी नहीं है। विवश होकर शैव्या उसी आधे कम्बल को फाड़ने के लिये हाथ बढ़ाती है। आकाश से फिर पुष्पवृष्टि होती है। भगवान दर्शन देते हैं, रोहिताश्व जीवित हो जाता है। वे फिर अपना राज्य सम्हाल लेते हैं।

'मेले का ऊंट"

एक लेखक ने सम्पादक के नाम पत्र लिखते हुए उसमें मोहन मेले का वर्णन किया है—

मुझे आपके दृष्टिकोण पर बड़ा दुःख होता है। मेले में यदि १ पैसे की कचोड़ी ४ पैसे मे बिकने लगे तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं। शोक तो इस बात का है कि आपने और सब वस्तुएं देखीं और उन पर समालोचना भी लिखी परन्तु ऊँट को न देखा। बङ्गाल के लोगों के लिये यह एक विचित्र पशु है, इस लिये वे इस पर हँसते थे। मैं भी अपनी मां की तरफ में उधर कुछ सुनने के लिये जा पहुँचा। मारवाड़ियों को देखकर ऊँट ने कहना शुरू किया—

'मेरा इतिहास बहुत पुराना है, तुम बच्चे हो, इसलिये नहीं जानते। तुम्हारे बाप दादा मुझे अच्छी तरह जानते थे। अब

पचास साल पहले यहाँ भी रेल न थी तब मैं ही तो तुम्हें यहा लाता था। तुम्हारी माता तथा नानियाँ मेरी ही सवारी करती थीं। आज नई नई चीजों के होने से तुम भले ही मुझ में श्रद्धा न रक्खो परन्तु मैं तो अपना प्यार नहीं भूला सकता क्योंकि मैंने बहुत दिन तक अपनी इस लम्बी पीठ पर पानी ढो ढो कर तुम्हें पिलाया है। आज तुम भाग के नशे में ये सब बातें कैसे याद रख सकते हो ?"

इतना मैं सब कुछ सुनता रहा परन्तु भाँग की निंदा सहना मेरे लिये आसान काम न था। मैं बीच में ही बोल उठा—

'अधिक मत बको यह कलकत्ता शहर अब पागल शहर नहीं है जो तुम्हें ईश्वर का ही अवतार समझ ले। दुनिया बदल रही है आज की बात कल नहीं रहेगी। कल जो कपड़ा भी पहनना न जानते थे वह आज संसार के राजा बने हुए हैं फिर मारवाड़ी ही क्या सदा के लिये ऊँट के ही गुण गाते रहें। अब भी यदि अपना भला चाहो तो मारवाड़ियों के गुण गाओ नहीं तो वे अपनी एसोसिएशन (सभा) में प्रस्ताव पास कर तुम्हें बाहर निकाल देंगे।"

श्रीकृष्ण

भगवान् कृष्ण का जन्म आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व हुआ था। जन्माष्टमी का पुण्य त्योहार प्रतिवर्ष हम उसकी याद दिलाता है। चारों ओर अनर्थ हो रहा है इस लिये उन के जन्म की आवश्यकता अब महाभारत के समय से भी अधिक अपने अपने आदर्शों को लेकर सैकड़ों जातियों में उन्नति परन्तु हमारे पास श्रीकृष्ण जैसा सर्वांगपूर्ण

हम उन्नति नहीं कर सके। इस को सोचने पर बडा आश्चर्य होता है।

हमारी अवनति का प्रधान कारण यह कि हम आदर्शों का अनुकरण नहीं करते। यदि करते हैं तो गीतागोविंद के श्रीकृष्ण का, महाभारत के श्रीकृष्ण का नहीं। श्रीकृष्ण के चरित्र को अच्छी तरह समझ कर और उस पर चल कर यदि हम उन्नति करना चाहें तो आसानी से कर सकते हैं। आज सब से बडी कमी यही है कि भारत नेताओं से तो भरा पड़ा है परन्तु अनुयायी दिखाई नहीं देता। जनरल तो हैं पर सिपाही नहीं। कोई किसी के पीछे नहीं चलना चाहता, सब लोग नेतृत्व की चिंता में हैं।

महायुद्ध की सब तैयारी हो चुकी थी। सन्धि के सब प्रयत्न निष्फल हो चुके थे। सन्धि करने वाले को दुर्योधन से अपमान के सिवाय कुछ मिलने की आशा न थी परन्तु फिर भी श्रीकृष्ण दूत बनकर दुर्योधन के पास गये। दुर्योधन ने सोचा कि श्रीकृष्ण को यदि किसी प्रकार अपने वश मे कर लू तो फिर मेरी विजय में कुछ भी सन्देह नहीं हो सकता, परन्तु श्रीकृष्ण कब उसके वश में आने वाले थे।

जैसे श्रीकृष्ण को पहले से ही आशा थी, सन्धि का प्रस्ताव स्वीकृत न हुआ। श्रीकृष्ण उस के वश में तो क्या होते, उन्होंने खूब फटकारा। इस पर दुर्योधन ने उन्हें कैद करने की सोची भोजन के बहाने उन्हें घर पर कैद करने का निश्चय पक्का हो गया। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि द्वारा सब कुछ जानते हुए भी भगवान उसके यहाँ गये। वहा भी उन्होंने उसे सन्धि [illegible] समझाया परन्तु उस पर कुछ प्रभाव न हुआ भोजन के

लिये मना कर भगवान् बाहर निकलने लगे तो उस ने उन्हें कैद करने का प्रयत्न किया परन्तु उन के अलौकिक तेज के सामने वह न ठहर सका।

लोकसंग्रह के तत्त्व को जानते हुए भी भगवान् ने कभी निरपराधी को अपराधी या धर्म को अधर्म कह कर संग्रह की चेष्टा न की। यदि हमारे विद्यार्थी तथा नेता भगवान् श्रीकृष्ण के जीवन का अनुसरण करें तो शीघ्र ही सफल सकते हैं। परमात्मा सब को सुबुद्धि दें।

करुणा

करुणा भी दुख का एक भेद है। कार्य कारण सम्बन्ध के ज्ञान हो जाने पर इसका उदय होता है। शुद्ध हृदय होने से बच्चा अपने जैसा सब का समझता है, इस लिये मा के झूठ मूठ रोने पर तथा किसी आदमी द्वारा बहिन आदि के मारे जाने पर भी बच्चे प्राय रो पड़ते हैं। बच्चे के रोने को हम करुणा कह सकते हैं।

परिणाम के विचार से क्रोध को हम करुणा का विरोधी कह सकते हैं। क्रोध से किसी की हानि होती है करुणा से भलाई। सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य के सुख दुख एक दूसरे के साथ जुड़े रहते हैं। वह एक दूसरे के दुख तथा सुख से दुखी और सुखी होने लगता है। दूसरो के सुख से सुखी होने की अपेक्षा दूसरों के दुखो से दुखित होने का नियम अधिक व्यापक है। हम अज्ञात मनुष्य को भी दुखी देख कर दुखित हो जाते हैं, भले ही किसी कारण बाद में हमारा दुख कम हो जाय, परन्तु हम किसी को सुखी देखते ही सुखी नहीं हो

जाते, यदि हमारा उस के साथ घनिष्ठ मम्बन्ध न हो। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि दूसरों के दुःखों से दुःखी होने का नियम अधिक व्यापक है। दुःखी होने के भाव को दूसरे शब्दों में हम करुणा कहते हैं। यह तो स्वाभाविक ही है कि साधारण व्यक्ति की अपेक्षा हमें परिचित व्यक्ति पर अधिक करुणा होती है।

संसार में प्राणी मात्र का उद्देश्य सुख है इस लिये जिससे सुख हो वही कर्म उत्तम है। बहुत से मनुष्य कभी कभी उल्टा काम कर देते हैं परन्तु किसी के अनिष्ट की इच्छा से नहीं अपितु लोक-हित की इच्छा से। कहीं कहीं शास्त्र में भी ऐसे विशेष स्थानों पर, जहां झूठ बोलने से कोई लोक-हित का काम होता है, झूठ बोलने की आज्ञा दी गई है। वह झूठ बोलना वास्तव में बुरा भी नहीं।

करुणा और श्रद्धा का आपस में सम्बन्ध तो स्पष्ट है ... हम देखते हैं कि खिन्न मनुष्य के हृदय में करुणा करने ... के लिये श्रद्धा का भाव उत्पन्न होता है। अतः यह भी ... ही है कि श्रद्धा का विषय किसी न किसी रूप में सात्विक ... ही है।

बुद्धि दो वस्तुओं को पृथक पृथक दिखला देगी, चुनाव करना मनोवेग का ही काम है, स्मृति, अनुमान तथा बुद्धि आदि अन्तःकरण की प्रक्रिया मनोवेग की सहायिका मात्र हैं। यह तो कहा जा चुका है कि करुणा का प्रधान विषय दूसरे का दुख भी करुणा के अन्तर्गत ही समझना चाहिये। प्रिय के दूर चले जाने पर उसके सुख दुःख के विषय में शङ्का बनी रहती है, उपस्थित

ने पर नहीं। कभी कभी ऐसे स्थानों में हमें प्रिय के विषय में
निष्ट की आशङ्का तक हो जाती है। जैसी आशङ्का कि प्राय
तिवियोगिनी स्त्रियों को हो जाती है।

शोक भी किसी सीमा तक करुणा के अन्तर्गत हो जाता
मनुष्य का प्राय सारे ससार में कोई सरोकार नहीं होता।
तने मनुष्यों के साथ उसका ससर्ग होता है उतना ही उसका
सार है। उसमें किसी प्रकार की कमी हो जाय अथवा किसी के
ति कर्तव्य पालन में वह स्वय कोई कमी कर दे तो याद में उसे
ही शोक होता है।

समाज की स्थिति के लिये करुणा का होना आवश्यक है।
माज का अपना अलग है। हमारी करुणा केवल अपनी रक्षा
लिये, अपने स्वार्थ के लिये ही नहीं होती अपितु सब पर
ती है। यदि स्वार्थ के लिये ही होती तो हमारी करुणा किसी
र्बल पर अथवा अबला पर न होकर किसी बलिष्ठ सैनिक पर
हुआ करती, परन्तु देखा जाता है कि हमारी करुणा अधिकतर
र्बल पर ही होती है। यही कारण है कि किसी अबला को
पत्ति में देख कर हमारा हृदय पिघल उठता है।

करुणा बदले में करुणा नहीं चाहती जैसा कि क्रोध और
में होता है। करुणा के स्थान पर श्रद्धा तो मिलती है,
रुणा नहीं। मनुष्य का देश काल सम्बन्धी ज्ञान बहुत थोडा
परन्तु स्मृति और अनुमान इस ज्ञान को व्यापक बनाने की
करते हैं। किसी को पिटते देखकर जब दया आती है,
हमें यह स्मृति होती है कि यह तो बडा भारी अपराधी है,
हमारी करुणा उसके लिये कम हो जाती है।

से हमें अपने मनोवेगों के अनुसार कार्य करते रहना चाहिये कभी-कभी ऐसे स्थान भी आते हैं जब हमें अपने मनोवेगों प नियन्त्रण करना होता है। आवश्यकता, नियम तथा न्याय तीं ऐसे प्रधान स्थान हैं जहाँ हमें करुणापूर्ण मनोवेगों को द कर अपना कार्य करना होता है। दया रहते हुए भी आवश्यक्त वश बुड्ढे नौकर को अलग करना पडता है, दया मन में र हुए भी नियम के कारण अपना काम करना पडता है जैसे रा हरिश्चन्द्र ने शैव्या से आधा कफन मागा था। दया रहते भी एक अफसर किसी पर न्याय के कारण १०००) की नालि करने को विवश है। उसे कर्तव्य निभाना पडता है। यह दूस बात है कि ऋणदाता माफ कर दे या न्यायकर्ता अपनी जेब उतना रुपया टाल दे।

करुणा का द्वार विश्वात्मा ने प्रत्येक प्राणी के लि खोल रखा है, परन्तु वह इतनी आसानी से नहीं मिल सकती जितनी आसानी से हम चाहते हैं।

शकुन्तला की विदा

शकुन्तला से गधर्व विवाह करके दुष्यन्त राजधानी लौ जाते हैं। शकुन्तला की दोनों सखिया इस विषय में उस पिता कण्व की आज्ञा लेने के विषय में सोच रही हैं कि सहस क्रुद्ध हुए दुर्वासा ऋषि का शब्द सुनाई देता है। दुर्वासा शकुन्तल से कहता है कि जिस के ध्यान में मग्न हो कर तूने मेरा उचि सत्कार नहीं किया वह शीघ्र ही तुझे भूल जायेगा। यह सुनते ही दोनों सखिया उस के स्वागत के लिये सामग्री ले आती हैं। दुर्वास शाप में कुछ कमी कर देते हैं।

वे इस समाचार को शकुन्तला से छिपाये हुए ही कुटी
ओर बढ़ने लगीं। महर्षि कण्व ने लौटने पर जब यह
चार सुना तो उन्हें भी अत्यंत प्रसन्नता हुई। उन्होंने शकुंतला
विदा करने के लिये सब सामग्री तैयार करने की आज्ञा दी।
सखियां दुःखमिश्रित सुख से तैयार करने लगीं। शकुन्तला
के वियोग को मन में सोच कर दुःखी होने लगा।
यों ने ऐसे शुभ अवसर पर दुःखी होना तथा रोना ठीक
। पुत्री वियोग से व्याकुल महर्षि कण्व ने भी
से शकुन्तला को विदा दी। अग्नि की प्रदक्षिणा कर तथा
ने हाथों से पाले हुए वृक्षों से विदा होकर शकुन्तला ने
रव तथा शारद्वत नाम के विद्यार्थियों के साथ यहाँ से
न किया। सरोवर के पास जाकर महर्षि लौटने लगे और
ने अपने शिष्य से राजा के लिये यह सन्देश दिया—राजन्!
आचार वाले हम तपस्वियों का तथा अपने उच्चकुल की रीति
ध्यान में रखकर शकुन्तला के साथ अन्य रानियों जैसा व्यवहार
ना। तुम स्वयं समझदार हो, आगे क्या कहूँ।"

पुत्री! अपने से बड़ों का आदर करना, दास तथा
उचित व्यवहार करना, अपनी सौतों के साथ
ना तथा यदि राजा कभी कुछ अनुचित भी कह दे
क ध्यान न देना।'

अन्य बड़े बड़े तपस्वियों ने भी यही
न कहा कि अब वीर सन्तान उत्पन्न
न पति के साथ वृद्ध अवस्था में
न्तला के चले जाने पर सब लोग लौट

शोकग्रस्त थे। पुत्री पराया धन है यह कह कर कण्व ने अपने शोकभरे हृदय को आश्वासन दिया।

पाचवाँ पत्र

वीर और वीरांगनाएँ

प्रश्न—भगवान् कृष्ण के जन्म का वर्णन संक्षेप से लिखो।

उ०—उग्रसेन ने अपने छोटे भाई देवक की कन्या देवकी का विवाह यदुवंशी क्षत्रिय कुमार वसुदेव से कर दिया। कहते हैं कि उस रथ को जिस पर देवकी तथा वसुदेव बैठे थे, कंस स्वयं हाँक रहा था। उसी समय आकाशवाणी हुई कि जिस बहिन को तू इतने प्रेम से विदा कर रहा है उसी के गर्भ से उत्पन्न बालक तेरे नाश का कारण होगा। यह सुनकर पहले तो कंस देवकी को मारने के लिये तैयार होगया परन्तु अंत में वसुदेव के इस वचन पर, कि इसके गर्भ से जो सन्तान होगी, उसे हम तुम्हें सौंप दिया करेंगे, उसका क्रोध शांत हो गया। फिर उसने दोनों को कारावास में बन्द कर दिया। देवकी के जो भी सन्तान होती अपने प्रण के अनुसार वसुदेव उसे कंस को सौंप देते। इस प्रकार कंस ने देवकी की सात सन्तानों को मार दिया।

जब आठवाँ पुत्र उत्पन्न हुआ तो भाद्रपद की अष्टमी थी। पुत्र का सुंदर मुँह देखकर वसुदेव अपना प्रण भूल गया। रात्रि का समय था, पहरेदार सोये हुए थे, दरवाजे खुले हुए थे

देव पुत्र को गोद में लेकर चुपचाप वहाँ से निकल गया। ना को पार कर गोकुल में नन्द के घर सौंप आया और उसके हाँ से उसी दिन उत्पन्न हुई पुत्री को ले आया। गोकुल में त्पत्ति पर आनन्द मनाये गए। बालक का नाम श्रीकृष्ण रखा । देवकी से इस लड़की को लेकर कंस ने मार डाला।

प्रश्न—कंस ने कृष्ण को मारने के लिये क्या २ उपाय और अन्त में कंस किस प्रकार मारा गया, उसकी विशद वेचना कीजिये।

उत्तर—बलराम और श्रीकृष्ण दोनों ही नन्द के यहां पले। वे यौवनावस्था में पदार्पण करने लगे तभी उनका यश चारों र फैलने लगा। उन्होंने समय समय पर गोपालों को कितनी विपत्तियों से बचाया। सब लोगों के हृदय में यह शङ्का हो कि ये गोप नहीं अपितु राजकुमार हैं। उड़ते उड़ते यह माचार कंस के कानों तक भी पहुचा। कंस ने कितने ही त्य तथा मल्लयुद्ध विशारद पहलवान उन्हें मारने के लिये , परन्तु उन्हें उल्टा जान से हाथ धोने पड़े।

अन्त में कोई उपाय न देख कर कंस ने षड्यन्त्र रचा। ने अक्रूर द्वारा श्रीकृष्ण तथा बलराम को मथुरा बुलाया। ना भाई आये। चाणूर तथा मुष्टिक नामक दो पहलवानों से का मल्लयुद्ध होने लगा यद्यपि दोनों भाई अल्पवयस्क थे तो भी इन दोनों पहलवानों को मार डाला।

अब तो कंस के क्रोध में आहुति पड़ गई। उसने वसुदेव सार उन्हें कैद करने का आदेश दिया। कंस का यह कहना था कि श्रीकृष्ण ने सिंहासन पर चढ़कर उसे नीचे खींच लिया

बाल पकड कर उसे पृथ्वी पर दे मारा, जिससे कि क्षण भर में
स्वर्ग लोक सिधार गया।

प्रश्न—सुदामा का परिचय देते हुए यह लिखिये कि श्री
ने किस प्रकार उनकी अभिलाषा पूर्ण की।

उत्तर—सुदामा श्रीकृष्ण के बचपन के सहपाठी थे। दों
साथ ही साथ गुरु सान्दीपन के पास शिक्षा पाई थी। शिक्षा
श्रीकृष्ण ने तो राज्य का कार्य सम्भाला और निर्धन
अपने घर चले गये। विद्वान् होते हुए भी सुदामा अत्यन्त
थे। एक दिन अपनी स्त्री के बार बार कहने पर सुदामा श्री
के पास कुछ सहायता की आशा से आये। उस समय श्री
द्वारिका के राजा थे। जिस समय सुदामा द्वारिका में पहुंचे
श्रीकृष्ण उस समय महल में पलङ्ग पर लेटे हुए आराम कर
थे। सुदामा बिना किसी रुकावट के अन्दर चले गये।

अपने मित्र को आया देख कर श्रीकृष्ण को बडा
हुआ। उसकी निर्धनता की दशा पर उन्होंने दुःख प्रकट कि
अपने हाथों से उसके पैर धोये। दो दिन तक सुदामा वहां
श्रीकृष्ण ने उनका बडा स्वागत किया। तीसरे दिन सुदामा
लौट गये। लौटते समय उन्हें श्रीकृष्ण ने कुछ भी न दिया था
से वे निराश होकर लौट गये। घर पहुँच कर देखा तो झोंपडी
स्थान पर सुन्दर भवन था। सब कुछ परिवर्तित हो गया
श्रीकृष्ण ने यद्यपि सुदामा को कुछ नहीं दिया, परन्तु उसके लौ
से पहले ही उन्होंने वहां सब कुछ भिजवा दिया था। सुदामा
देख कर चकित रह गये।

प्रश्न—अपनी पुस्तक के आधार पर श्रीकृष्ण द्वारा वर्णित गीता के ज्ञान का साराश लिखो।

उ०—जब अर्जुन क्षत्रिय धर्म को छोड मोह में फँस कर लडने से मना करने लगा तब श्रीकृष्ण ने जो उपदेश दिया था वह गीता नाम से प्रसिद्ध है। उसका साराश यों है—

अर्जुन युद्ध से विमुख होना क्षत्रिय का कर्तव्य नहीं। यह शरीर तो नश्वर है, केवल आत्मा अमर है। आत्मा न कभी मरती है न कभी नष्ट होती है। उस आत्मा को न शस्त्र काट सकता है, न आग जला सकती है, न पानी गला सकता है। क्षत्रिय के लिये युद्ध से उत्तम कोई वस्तु नहीं। युद्ध निस्वार्थ भावना से, फल की आशा छोड कर केवल कर्तव्य समझ कर करना चाहिये।

विषयों को नियन्त्रण में रखना ही सच्चा तप है। सुख दु:ख की परवाह न करके इन्द्रियों को वश में रख कर जो काम करता है उसे मोक्ष पद प्राप्त होता है। कर्म करना आवश्यक है ? इस संसार में कर्म के बन्धन से कोई नहीं छूट सकता। मैं भी तो कर्म करता हूँ, परन्तु मनुष्य को सब काम ईश्वरार्पण करके करने चाहिए तब जीव पाप में नहीं फँस सकते जैसे कि पानी में रहता हुआ भी कमल का पत्ता उस से पृथक् रहता है। फलेच्छायुक्त कर्म का त्याग ही सच्चा सन्यास है। अपने अपने कर्मों को करने से ही मनुष्य सिद्धि प्राप्त करता है। इस प्रकार श्रीकृष्ण के उपदेश से अर्जुन का मोह नष्ट हो गया।

प्रश्न—पाडवों को वारणावत भेजने में दुर्योधन का अभिप्राय क्या था ? वह अपने उद्देश्य में कैसे असफल हुआ युक्तियुक्त विवेचना करो।

उत्तर—पाण्डु की मृत्यु के बाद अन्धा धृतराष्ट्र सिंहासन पर बैठा। जब युधिष्ठिर योग्य हो गया तो धृतराष्ट्र ने उसे राज्य सौंप दिया क्योंकि राजा स्वयं अंधा था वह राज्य का प्रबन्ध सुचारु रूप करने में असमर्थ था वास्तव में सिंहासन का अधिकारी युधिष्ठिर ही था। इस बात से दुर्योधन कुढ़ने लगा। अत शकुनि आदि की मन्त्रणा से धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को वारणावत भेजना स्वीकार कर लिया। उनके ठहरने के लिये, जो भवन बनाया गया था वह लाख का बना हुआ था जो कि अग्नि छूते ही क्षण भर में जल सकता था। यह सब काम दुर्योधन के विश्वस्त पुरोचन नामक कारीगर ने किया था। कृष्णा चतुर्दशी के दिन भवन में आग लगाने का आदेश भी दुर्योधन ने दिया हुआ था।

युधिष्ठर माता पिता तथा भाइयों सहित वहाँ पहुँच गया। कुछ दिनों के बाद विदुर का एक गुप्तचर वहाँ गया और उसने युधिष्ठिर को सब भेद बता दिया। विदुर के कहने से अंदर एक सुरंग तैयार हो गई थी। जिससे कि युधिष्ठिर आदि बच सकते थे। कृष्णा चतुर्दशी के दिन कुंती ने ब्राह्मणों को न्योता दिया था। उसी दिन उनके यहा भिक्षा मागने के लिये एक भीलनी भी आई। जिसके साथ उसके पांच पुत्र थे। रात्रि को जब भवन में अग्नि लग गई पांडव तो वहा से चले गये परन्तु पुत्रों सहित भीलनी जल कर मर गई। इस प्रकार दुर्योधन ने पाण्डवों को मारने के लिये वारणावत भेजा था, परन्तु विदुर की कुशलता से पाण्डव बच गये।

प्रश्न—द्रौपदी के स्वयंवर का वर्णन लिखो साथ ही यह भी लिखो कि पाण्डवों को क्या लाभ हुआ ?

उत्तर—लाक्षागृह से बच कर पाण्डव कुछ दिन तक वन घूमते रहे। ये एक स्थान पर ठहरे हुए थे कि उन्हो ने द्रौपदी स्वयंवर का समाचार सुना।

स्वयंवर का समाचार सुन कर पाँचों भाई ब्राह्मण के वेश में पञ्चाल देश की ओर चल पड़े। मार्ग में उन्हें चित्रसेन नामक गन्धर्व मिला। अर्जुन ने उसे हरा कर अपना मित्र बना लिया। फिर वे पचाल राजा के पण्डाल में गये जहां कि स्वयम्वर के लिये सब राजा लोग बैठे हुए थे। स्वयम्वर की शर्त यह थी कि जो राजा ऊपर खम्भे में लटकी हुई मछली की आंख को नीचे रक्खे हुए तेल के कुण्ड में से देखकर निशाना लगायेगा उसी के गले में द्रौपदी जयमाल डालेगी। सब राजा बारी बारी उठे परन्तु कोई भी निशाना न लगा सका। सब के बाद कर्ण उठा, ज्यों ही वह खम्भे के पास पहुंचा कि द्रौपदी ने कहा कि मैं सूत पुत्र के साथ विवाह न करूंगी। बेचारा लजा कर बैठ गया। अन्त में ब्राह्मण वेषधारी अर्जुन उठा। उसने लक्ष्य को ठीक प्रकार बींध दिया। द्रौपदी ने उसके गले में जयमाल डाल दी। जो राजा लड़ने आये उन्हें उसने बाणों से घायल करना शुरू कर दिया। अंत में श्रीकृष्ण ने सबको समझा कर शान्त कर दिया।

स्वयम्बर हो जाने पर जब द्रौपदी को यह मालूम हुआ कि यह ब्राह्मण वेषधारी अर्जुन है तो उसके आनन्द का कोई ठिकाना न रहा। द्रुपद ने धन आदि देने के अतिरिक्त धृतराष्ट्र पर इस बात का प्रभाव डाला कि वह पाण्डवों का राज्य उन्हें

वापिस दे दे। धृतराष्ट्र ने भी देखा कि अब तो पाडवों की बहुत बढ़ गई है, इसलिये उन्हें राज्य दे देना उचित है अ को सुयोग्य पत्नी मिली जो सच्ची क्षत्राणी थी। घबराना जान ही न थी। इस स्वयम्वर के कारण ही पाडवो को खोया हु राज्य वापिस मिला था। द्रुपद जैसे शक्तिशाली राजा से उस सम्बन्ध स्थापित हो गया। इस स्वयम्वर के यही दो बड़े ल पाडवो को पहुँचे।

प्रश्न—पाडवों के वनवास के कारण की विवेचना क हुए यह भी लिखो कि पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास के दिन का बिताये तथा अन्त म किस प्रकार प्रकट हुए ?

उत्तर—द्रौपदी के स्वयम्वर के बाद द्रुपद तथा अन्य राजा के कथनानुसार धृतराष्ट्र को पाडवों को आधा राज्य दे पड़ा। इन्द्रप्रस्थ के सुनसान जङ्गल को उन्होंने ऐसे ढङ्ग से आबा किया कि उसकी शोभा देख कर दुर्योधन मन ही मन चिढ़ लगा। उससे उनका सुख देखा न गया। उसने अपने पिता क तैयार कर युधिष्ठिर के पास जुए का निमन्त्रण भेज दिया पाडवों के दिन विपरीत थे, इसलिये बिना किसी हिचक युधिष्ठिर ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। जुए में युधिष्ठिर ने राज्य तथा चारों भाइयों सहित द्रौपदी को भी हार दिया। दुर्योधन ने द्रौपदी का अपमान करना चाहा। जिस पर भरी सभा में द्रौपदी ने उन्हें फटकार बताई, अन्त में फिर किसी तरह पाण्डवों को उनका आधा राज्य मिल गया, परन्तु दुर्योधन न फिर दूसरी बार जूआ खेलने का प्रस्ताव रक्खा। शर्त यह ठहरी हारने वाला १२ वर्ष पर्यन्त वन म रहे तथा १ वर्ष अज्ञातवास

करे। यदि अज्ञात वर्ष के अन्दर उसका पता मालूम चल जाय तो उन्हें फिर १२ वर्ष वनवास करना होगा। धूर्त शकुनि के सामने युधिष्ठिर की एक न चली दुबारा फिर राज्य-पाट हार गया। अब द्रौपदी सहित पाचो भाई वन मे चले गये।

वन मे जाकर अर्जुन ने तपस्या करके देवताओ को प्रसन्न कर कितने ही दिव्यास्त्र प्राप्त किये। १२ वर्ष बीत जाने पर उन्होंने राजा विराट के यहा गुप्तवास करने का परामर्श किया। वेष बदल कर पाचों भाई विराट के यहा नौकर हो गये। द्रौपदी भी दासी बन कर वहीं रहने लगी। अर्जुन बृहन्नला नाम से राजा की पुत्री को संगीत सिखाने की नौकरी पर नियुक्त था। अज्ञातवास की अवधि बीत जाने पर कौरवों ने भारी सेना लेकर विराट पर आक्रमण कर दिया। राजा की सारी गाए छीन कर वे चलने लगे। अर्जुन उत्तर का सारथी बन कर युद्ध भूमि में गया। शाल्मली वृक्ष से अपने शस्त्र उतार कर अर्जुन ने युद्ध करना शुरू किया तथा उत्तर ने सारथी का काम, अर्जुन के सामने कोई भी महारथी न ठहर सका। उस साधारण से आदमी को इस प्रकार लड़ते देखकर कौरवों को विश्वास हो गया कि अर्जुन ही है। जब विराट को यह मालूम हुआ तो उसके हर्ष का पारावार न रहा उसने सब अपराधो के लिये क्षमा मागी।

प्र०—पाण्डवो को युद्ध की शरण क्यों लेनी पडी? इसकी विवेचना करते हुए यह भी प्रतिपादित करो कि इस युद्ध का अधिक दायित्व किस पर था?

उ०—अज्ञातवास के पश्चात् पाडवों ने आधा राज्य वापिस मॉगा तो दुर्योधन ने स्पष्ट

सन्धि के प्रयत्न विफल हो गये। युद्ध के परिणाम को सोचते हुए कृष्ण तथा पाडव युद्ध के पक्ष में न थे, वे किसी भी शर्त पर सन्धि करने को तैयार थे। अन्त में इस युद्ध से बचने के लिए भगवान कृष्ण स्वय दूत बन कर दुर्योधन के पास गये परन्तु उसने बिना युद्ध के पाँच गाँव तो दूर रहा, सुई भर ज़मीन भी देने से इन्कार कर दिया। जब कृष्ण निराश लौट आये तो पाडवों ने युद्ध की घोषणा कर दी।

दोनों ओर की सेनाएँ युद्ध क्षेत्र में आ डटीं। श्री कृष्ण ने अर्जुन का रथ दोनों सेनाओं के बीच में लाकर खड़ा कर दिया। सामने सब सबन्धियों को खड़ा देख कर अर्जुन को मोह उत्पन्न हो गया, उसने लड़ने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। इस पर भगवान ने उसकी अकर्मण्यता दूर करने के लिये जो उपदेश दिया वह गीता नाम से प्रसिद्ध है।

अर्जुन का मोह दूर हो गया। उसने ऐसी वीरता से युद्ध किया कि भीष्म तथा कर्ण जैसे महारथी मारे गये। अन्त में विजय पाडवों की ओर रही। पाँडवों को उनका न्यायोचित अधिकार न मिलना ही युद्ध का कारण था। इस युद्ध का पूर्ण दायित्व दुर्योधन पर ही था।

प्र०—दिल्ली के अधिपति औरगजेब ने शिवा जी को कैद करने तथा मार डालने के लिये क्या २ उपाय किये उनका वर्णन करते हुए उनके शाही दरबार से भागने की घटना का वर्णन करो।

उ०—शिवाजी ने एक छोटा स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर ... । उनके उदय को देखकर बीजापुर का सुलतान तथा दिल्ली

सम्राट् औरंगजेब दोनों ही जलने लगे। शिवाजी का दमन करने के लिये अफजलखाँ को भेजा गया। जब अफजलखाँ किले के समीप आया तो शिवाजी ने उसके पास संधि के लिये दूत भेजा। सन्धि करने के लिये दोनों का मिलना निश्चय हुआ, संधि में यह भी तय पाया कि मिलने के समय दोनों में से कोई भी शस्त्र धारण कर न आये। शिवाजी बहुत होशियार थे, व अफजलखां की चाल को समझ गये। ठीक समय पर दोनो निश्चित स्थान पर मिलने के लिये गये, ज्यों ही अफजलखाँ ने चाहा कि शिवाजी की छाती में तलवार घोंप कर उनका काम तमाम करदे त्योंही शिवाजी ने बघनखे से उसका पेट चीर दिया। क्षण भर में ही अफजलखाँ यमलोक पहुच गया।

अब शिवाजी को रोकने के लिए शाइस्ताखाँ भेजा गया। उसके साथ बडी भारी सेना थी। युद्ध में उसकी सेना का जीतना मुश्किल था। अतः शिवाजी ने नीति से काम लिया। जब रात के समय शाइस्ताखाँ अपने मित्रो सहित पूना के महल मे बेहोश पडा था, तब उन्होंने कुछ सैनिको के साथ, जो कि बरातियों के वेश में थे, महल पर आक्रमण कर दिया शाइस्ताखाँ अगुली कटा कर किसी तरह प्राण बचा कर भागा। कितने ही मुगल सैनिक पकडे गये, कितने ही मारे गये।

शाइस्ताखां की दुर्दशा का हाल सुन कर औरंगजेब के क्रोध का कोई ठिकाना न रहा। उसने राजा जयसिंह को विशाल सेना के साथ शिवाजी को वश में करने के लिये भेजा। राजा जयसिंह ने शिवाजी को कहला भेजा कि यदि आप संधि कर लें तो मैं आपको दरबार में ऊँचा पद

शिवाजी ने सधि का प्रस्ताव मान लिया । उन दिनों दिल्ली में दरबार की तैयारी हो रही थी । अपने पुत्र सम्भाजी के साथ शिवाजी दरबार में पहुँचे । परन्तु वहाँ उचित सत्कार न हुआ। अब वे मनमें पछता रहे थे और किसी प्रकार बचकर निकल जाने का उपाय सोच रहे थे । उनके ऊपर सख्त पहरा रखने की आज्ञा दी गई थी ।

शिवाजी ने बीमारी का बहाना किया । बाद में अच्छा होने के उपलक्ष्य में मन्दिरों तथा मस्जिदों मे मिठाई भिजवाना शुरु किया । एक दिन अवसर पा कर अपने पुत्र के साथ मिठाई के एक टोकरे में बैठ कर शिवाजी वहाँ से भाग निकले । अन्त मे सन्यासी के वेष में घूमते हुए वे दक्षिण पहुच गये ।

प्र०—अति सक्षिप्त रूप से शिवाजी की राज्य-व्यवस्था का वर्णन करो ।

उ०—शिवा जी ने अपने राज्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये चार विभागों में बाट दिया था । वे विभाग निम्न लिखित हैं—

(१) अष्ट प्रधान मण्डल (२) मुल्की व्यवस्था (३) दुर्ग (४) सेना ।

१. अष्टप्रधान-मण्डल—एक समिति थी जिस के ८ सभासद थे । इन सभासदों अथवा मन्त्रियों के अधिकार पृथक् पृथक् थे, जिस के अनुसार वे राज्य व्यवस्था करते थे ।

२ मुल्की व्यवस्था—राज्यांतर्गत भूमि की नाप कराकर भूमि की किस्म के अनुसार उसका कर निश्चित करना इसी

भा के अधीन था। लगान समय के लिये आधुनिक पटवारियों की तरह आदमी नियुक्त कर व्यवस्था को ठीक रखने के लिये राज्य को प्रान्तों में, प्रांतों को तर्फों में, तर्फों को मौज़ों में बाँट दिया था।

३. दुर्गों की रक्षा का भार सेनापति के हाथ में था। शिवा जी की मृत्यु से पूर्व उनके अधिकार में २८० किले थे। किले की रक्षा के लिये पृथक् ३ आदमी नियुक्त थे।

४ सेना दो प्रकार की थी, घुड़सवार और पैदल। सेना पर कड़ा नियन्त्रण रखा जाता था, जिस से कि कोई सैनिक किसी स्त्री या निर्धन पुरुष को सता न सके। सैनिकों का स्त्रियों को साथ रखना निषिद्ध था। लूट का धन कोई सैनिक अपने अधिकार में न रख सकता था। इस प्रकार चार विभाग बना देने से उनके राज्य का काम बड़ी उत्तमता से चलता था। उनके व्यवस्थित राज्य में प्रजा को कुछ भी कष्ट न था।

प्र०—शिवाजी के चरित्र की समालोचना करो।

उ० भारतीय इतिहास में शिवाजी का महत्वपूर्ण स्थान है। जिस समय वे उत्पन्न हुए, उस समय चारों ओर मुग़लों की विजयपताका फहरा रही थी। शिवा जी प्रारम्भ से ही स्वतन्त्रता के अभिलाषी थे। बचपन में माता के दूध के साथ तथा दादा कोंणदेव द्वारा जो स्वतन्त्रता का प्रेम हृदय में स्थान बना चुका था, वह समय पाकर भड़क उठा। लोगों को अत्याचारी मनुष्यों के हाथों से छुड़ाना उन्होंने कर्तव्य समझा हुआ था। वीर तथा साहसी होने के अतिरिक्त वे नीतिज्ञ भी थे। चतुरता से अपने पिता को कैद से छुड़ाना तथा शाही

दरबार की कैद में से अपने पुत्र के साथ निकल आना उनकी चतुरता के उदाहरण हैं। वे साहस का नीति के साथ ही प्रयोग करते थे, दुष्ट अफजलखां को बघनखे से मारना तथा शाइस्ताखां की सेना का रात में हमला कर नष्ट करना, उनकी कार्य-कुशलता तथा अवसरवादिता का प्रबल प्रमाण हैं। वे किसी भी समय किंकर्तव्य विमूढ़ होना नहीं जानते थे।

जैसे वे वीर थे वैसे ही धर्म-परायण भी थे, उन्होंने अपने सैनिकों को दुर्बलों तथा स्त्रियों को छेड़ना मना किया हुआ था। एक लूटमार में एक सुन्दरी उनके हाथ लगी तो उन्होंने आदर सहित उसे उसके घर पहुँचा दिया। दूसरे की स्त्रियों को वे माता तथा बहिन के समान समझते थे।

उनका दृष्टिकोण उदार था। जैसे वे हिंदू धर्म का आदर करते थे और उसके लिये अपने प्राण तक देने को तैयार रहते थे वैसे ही वे दूसरों के धर्म का भी यथोचित आदर सत्कार करते थे। उनका वैर किसी धर्म से न था अपितु अत्याचार से था। बहुत से मुसलमान उनकी सेना में थे। अपने अन्तिम जीवन तक उन्होंने स्वाभिमान को नहीं छोड़ा। हमें उनके जीवन से अनेक शिक्षाएं मिलती हैं।

प्र०—पृथ्वीराज के प्रति संयोगिता के अनुराग का कारण लिखते हुए उसके स्वयम्वर का वर्णन करो।

उ०—जयचन्द तथा पृथ्वीराज बचपन में अपने नाना अनङ्गपाल के पास देहली में रहा करते थे। जयचन्द बड़ा और पृथ्वीराज आयु में उससे छोटा था। संयोगिता का जन्म देहली में हुआ था। उसके बचपन का अधिक भाग पृथ्वीराज के

ास ही व्यतीत हुआ था। वह बड़े प्रेम से उसे रामायण आदि
ोरगाथाए सुनाया करता था। प्रेम का प्रथम अकुर यहीं
त्पन्न हो चुका था। बाद मे नृत्य सिखाने वाली स्त्री से
थ्वीराज की वीरता सुनकर उसका निश्चय दृढ हो गया। धीरे
ीरे उसकी इस अभिलाषा का पता माता पिता को भी लगा,
िन्तु माता क तैयार हो जाने पर भी पिता तैयार न हुआ।
सी समय पृथ्वीराज ने गौरी को हराया जिससे कि उसकी
ीरता की धाक और भी जम गई। पृथ्वीराज की वीरता से सयोगिता
स पर मुग्ध हो गई, उसने प्रत्येक दशा में उसे पति बनाने का
िश्चय किया।

जयचद ने सयोगिता के विवाह के लिए स्वयम्बर रचा।
सने पृथ्वीराज तथा समरसिंह को छोडकर सब क पास
िमन्त्रण भेजा। सयोगिता की माता क गुप्तचर द्वारा पृथ्वीराज
ो सब कुछ मालूम हो चुका था। वह अपने निश्चस्त सैनिकों
े साथ वहा पास ही छिपा हुआ था। सयोगिता ने दरवाजे पर
टके हुए पृथ्वीराज क चित्र के गले में माला डाल दी। जयचन्द
हुत क्रुद्ध हुआ। दोनो ओर की सेनाओ मे युद्ध होने लगा,
ृथ्वीराज सयोगिता को लेकर दिल्ली पहुच गया।

प्र०—सक्षिप्त रूप से गौरी के अन्तिम आक्रमण का वर्णन
करते हुए उसके परिणाम की विवेचना करो।

उ०–गौरी दूसरी बार युद्ध मे सफल न हो सका। वह
कैद कर लिया गया उसने फिर भारत पर आक्रमण न करने
की प्रतिज्ञा की, पृथ्वीराज ने उसे छोड दिया। तीसरी
जयचन्द की सहायता पा कर गौरी ने फिर हमला

पृथ्वीराज को इस आक्रमण की सम्भावना भी न थी। गृह-कलह से उसकी शक्ति वैसे ही क्षीण हो चुकी थी। संयोगिता तथा पृथ्वीराज वेष बदल कर जयचन्द के पास गये परन्तु उसने शत्रु का पक्ष छोड़ने से मना कर दिया। विवश होकर दोनों लौट आये। युद्ध शुरू हुआ, हजारों वीरों को मारने के बाद वीर समरसिंह धराशायी हो गये। पृथ्वीराज की मार के सामने शत्रु भागने लगे। अन्त में सायंकाल के समय पृथ्वीराज मारे गए। अगले दिन संयोगिता ने पति का स्थान सम्हाला, शर्म के कारण जयचन्द युद्ध से हट गया। विजय संयोगिता के हाथ रही। उसी दिन वह भी पति को चिता के साथ सती हो गई। अब दिल्ली का सिंहासन गौरी के हाथ में आया। परस्पर की फूट से दिल्ली का सिंहासन सदा के लिये शत्रुओं के हाथों में चला गया, जिसका परिणाम यह हुआ कि हम आज तक भी पराधीनता में फँसकर दुख भोग रहे हैं।

प्र०—पृथ्वीराज तथा जयचन्द के चरित्र की तुलना करते हुए यह लिखिए कि आपको किसका चरित्र पसन्द है?

उ०—पृथ्वीराज तथा जयचन्द का बचपन उनके नाना अनङ्गपाल के पास ही व्यतीत हुआ था। दोनों का शिक्षण तथा लालन-पालन भी समान रूप से हुआ। आयु में बड़ा होने के कारण जयचन्द अपने को दिल्ली के सिंहासन का अधिकारी समझता था। यद्यपि दोनों समान रूप से वीरता के उपासक थे परन्तु फिर भी दोनों के स्वभाव में आकाश-पाताल का अन्तर था। पृथ्वीराज वीर होने के साथ ही स्वातन्त्र्यप्रिय तथा कर्मठ तथा। जयचन्द विलासी तथा अकर्मण्य था। पृथ्वीराज में

[दि]ल्ली]मे अधिक होने के कारण जयचन्द सदा ही मन मे चिढ़ता था।

पृथ्वीराज की वीरता का प्रथम उदाहरण गौरी को परास्त के समय मिलता है। दूसरा उदाहरण जयचन्द के सामने वीरता पूर्वक सयोगिता क हरण के समय मिलता है। मे वह गौरी को बन्दी बना कर भी छोड देता है इससे उसके [स्वभ]ाव का पता लगता है। उसे प्रजा की भलाई का सदा विचार है। देश क सामने वह अपना राज्य भी छोड़ने को तैयार है। गौरी के अन्तिम आक्रमण क समय वह जयचन्द से [कह]ता है कि तुम्हे यदि दिल्ली के सिंहासन की अभिलाषा है ले परन्तु शत्रु का साथ छोड दो। अन्त में स्वातन्त्र्य प्रेम के [लि]ए मर कर अमर पद प्राप्त कर लेता है।

जयचद इसक विपरीत है। वह जिस किसी भी उपाय से [रा]ज्य] लेना चाहता है। अपने स्वार्थ के सामने देश को सदा [के लि]ये परतन्त्रता के पाश में जकड कर अपने माथे पर अपयश [का से]हरा बाध लेता है। दोनो के स्वभाव एक दूसरे क विपरीत [हैं। प्र]त्यक देश-प्रेमी पृथ्वीराज के चरित्र की प्रशसा करने में [गौरव] का अनुभव करता है। उसका चरित्र स्तुत्य है।

प्र०—दुर्गावती का परिचय तथा उसक विवाह की घटना [लिखो]। उत्तर सक्षिप्त होना चाहिए।

उत्तर-दुर्गावती राजा शालिवाहन की कन्या थी। उसका [पिता] प्रतापी तथा अभिमानी राजा था। वह महोबा नामक [नगर] का अधिपति था। दुर्गावती के रूप की प्रशसा चारों [ओर फै]ल चुकी थी। बड़े बड़े राजा उससे विवाह करा

गया, परन्तु दिल्ली सम्राट् इब्राहीम लोदी ने तभी उसके सरदारों
यहां से भगा दिया। इसी बात से क्रुद्ध होकर बाबर ने भारत
आक्रमण किया। इब्राहीम ने आगे बढ़ कर आक्रमण कर सा
किया, परन्तु मारा गया।

अब बाबर दिल्ली का सम्राट् बन गया। राणा संग्राम
को किसी भी विदेशी का राज्य पसन्द न था। उन्होंने
राजपूतों को इकट्ठा कर बाबर के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। रा
की वीर सेना के साथ बाबर की सेना ठहर न सकी।
परास्त हुआ, परन्तु राजपूतों ने उनका पीछा न किया। बा
ने फिर दूसरी बार तय्यारी करने के बाद हमला किया। रा
संग्रामसिंह ने फिर मुकाबला किया। वह स्वयं वीर था।
घाव उसके शरीर पर लगे हुए थे। परन्तु इस बार
बाबर की सेना के सामने राणा की सेना ठहर न सकी। रा
परास्त होकर मेवाड़ की ओर भागे जहाँ अंत में
हो गई।

प्रश्न—अकबर की विजयों का संक्षिप्त सा वर्णन
सिद्ध करो कि मुगल साम्राज्य का वास्तविक स्था
अकबर ही था।

उत्तर—यद्यपि भारत में मुगल-साम्राज्य का बीजारो
करने वाला बाबर ही था। परन्तु आयु के थोड़ा होने के का
वह उसकी जड़ों को सुदृढ़ न बना सका। हुमायूँ के हाथों
शासन आने पर तो मुगल साम्राज्य की नींव और भी खोख
हो गई एवं हुमायूँ के विरोधी सूरवंश के द्वारा तो उसका बिल
अन्त ही हो गया। बस अकबर ने ही फिर नये सिरे से इस

सेना की ओर इसके अंगों को दृढ़ बनाया। पानीपत की लड़ाई के बाद उसने ग्वालियर, अजमेर, जौनपुर और ...वा पर भी पूरा अधिकार कर लिया। सन् १५६ में उसने ...वाना को भी अपने कब्जे में कर लिया। उस के बाद अब- ...ने यशस्वी राजपूतों को वश में करने के लिये उन में विवाह ...म्बन्ध जोड़ने की नई नीति को जन्म दिया। उस ने स्वयं ...र की राजकुमारी से विवाह किया। और अपने राज्य के ...ऊँचे पदों पर राजपूतों को बैठाया, केवल एक मेवाड़ को ...ड़ कर सभी राजपूत राज्य उसके अधिकार में हो गये।

मेवाड़ के विषय में वह जीवन के अन्तिम दिनों तक ...असफल ही रहा। वहाँ आत्म-गौरव सम्पन्न महाराणा प्रताप ...उसकी दाल न गलने दी। सन् १५६६ में अकबर ने रणथम्भौर, ...कालिंजर के किले पर भी अपना अधिकार कर लिया। सन १५७३ ...गुजरात भी उसके हाथ में आ गया और सन १५७६ में ...उसने अपने प्रमुख सेनापति टोडरमल द्वारा बंगाल तथा बिहार ...पर भी विजय पाई। सन १५७६ में काबुल पर भी हाथ साफ ...किया। और काश्मीर को भी अपने शिकंजे में कस लिया। सन ...१५८६ से १५६५ के बीच में उसने, सिंध, उड़ीसा और कंधार ...को भी अपने अधिकार में कर लिया। उत्तर भारत के आधिपत्य ...के उपरान्त उसने दक्षिण की ओर मुँह किया तथा अपने पुत्र ...मुराद के सेनापतित्व में अहमद नगर को जीतने के लिये एक ...विशाल सेना भेजी। अहमद नगर की महारानी चाँद बीबी ...की मार ने तो मुगलों को सफेद सींग ही दिखाये। परन्तु अकबर ...कि भाग्य ही बड़ा था। कुछ थोड़े दिनों बाद ही निराशा

दिन आशा के सुरम्य दिवसों में बदल गये। और सन् १६०
अहमद नगर भी अकबर के हाथों में आ ही गया। बस,
भांति अकबर का सितारा चमकता गया और बस उसने उ
उजड़ाये मुग़ल साम्राज्य को पूरी तरह बसा लिया।
अकबर ही मुग़ल साम्राज्य का स्थापक है।

प्र०—जहांगीर कौन था ? उसके शासन की विशेष
नाओं का उल्लेख करो।

उत्तर—जहांगीर का वास्तविक नाम सलीम था।
१६०५ में अकबर की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा। यद्यपि
अकबर के शासन काल में बड़ा निर्दयी और बागी था पर
सिंहासनपर बैठते ही इसके स्वभाव में आकाश पाताल का अ
हो गया। इसने नये ही ढंग का शासन चलाया। दंड वि
में भी बहुत परिवर्तन किये। कर एव चुगिया हटा दीं।
नाजायज़ राज्य-कर शिथिल कर दिये, स्थान स्थान
न्यायालय, औषधालयों का निर्माण किया। उसने न्याय के लि
बड़ा ही विचित्र और सुन्दर ढग बनाया। अपने महल के पा
एक ज़ंजीर लटकवा दी, कोई ग़रीब, अमीर, दुखी सुखी, कि
भी समय में उस ज़ंजीर की घंटी को बजाकर अपना न्याय क
सकता था। उसका हृदय सब के लिए एक सा था।
सब की पुकार सुनता था। इसने अपने पित
के राज्य को इसी भांति बनाये रक्खा। इसके बड़े बेटे खुसर
ने इसके विरुद्ध विद्रोह किया। परन्तु इसने बड़े सुचारु रूप
उसे शांत करा दिया। इसी खुसरो को आश्रय देने के अपराध
उसने सिक्ख गुरु अर्जुन देव को भी मृत्यु दण्ड दिया। इस मृत

ड का इतिहास में वडा महत्व है । इसी के प्रतिकार स्वरूप एक र्मिक सम्प्रदाय प्रबल सैनिक शक्ति के रूप में वदल गया । दूसरा द्रोह शाहजहा खुर्रम ने किया । परन्तु शीघ्र ही शात हो गया र अपने अपराध की क्षमा माग ली । तीसरा विद्रोह महावतखा किया, परन्तु अन्त ने उसे भी ठडा होना पडा । अहमद नगर भी विद्रोह की आग जली, परन्तु शीघ्र ही शात कर दी गइ ी के समय मे सर टामस का भारत में आगमन हुआ ।

प्र०—शाहजहा द्वारा गद्दी प्राप्त करने का उल्लेख करते हुए खो कि उसके शासन काल म कला कौशल को किस प्रकार न्नति मिली ?

उ०—जिस समय जहागीर की मृत्यु हुई, उस समय ाहजहा दक्षिण में था । इसके ससुर ने एक रोज एक सवार इस ात की सूचना देने के लिये शाहजहा के पास भेजा । खबर पाते ी शाहजहा वहा से चल पडा । आते ही उसने गद्दी पर अधिकार र लिया । शहरयार तथा गद्दी के अन्य अधिकारियों को मरवा ाला ।

शाहजहा को इमारतें आदि बनवाने का बडा शौक था । ला कौशल की ओर राजा का प्रेम देख कर प्रजा को भी इस पथ में दिलचस्पी हो गई । शाहजहा ने स्वय ऐसी विशाल तथा ंय इमारतें बनवाई कि जो आज भी गौरव से सिर ऊँचा किए डी हैं । उसने १ करोड रुपये की लागत से तख्तताऊस बनवाया, सी पर बैठ कर सम्राट् दरबार किया करता था । दिल्ली का लाल ला और उस किले में दीवाने आम और और दीवाने सीके बनवाये हुए हैं । दिल्ली की जामा मस्जि

चौक नामक बाजार भी उसी के शासन-काल में बनवाये गये। सब से ऊपर उसने आगरे का ताजमहल बनवाया जो कि संसार के सात आश्चर्यों में से एक है। यह इमारत संगमर्मर की है। इस इमारत के बनने में २२ वर्ष लगे थे।

प्र०—औरंगज़ेब ने किन युक्तियों से राज्य प्राप्त किया? इसका उल्लेख करते हुए उसके चरित्र की समालोचना कीजिये।

उ०—जब बादशाह शाहजहां बीमार पड़ा तो यह बात चारों ओर फैल गई। उसके सारे लड़के, जो कि भिन्न भिन्न प्रान्तों के सूबेदार थे, अपनी सेना लेकर राज्य पर अधिकार करने के लिये चल पड़े। शुजा, दारा की सेना से परास्त होकर भाग गया। औरंगज़ेब ने चालाकी से मुराद को अपनी ओर मिला लिया। दारा शिकोह जो कि गद्दी का वास्तविक अधिकारी था और आगरा में ही रहता था, सेना लेकर आगे आया, थोड़ा सा कम पैदा हो जाने के कारण भगदड़ पड़ गई। विजयी हुआ, दारा परास्त होकर भाग गया। पिला कर कैद कर लिया।

इन सब बातों के अतिरिक्त उसमें बड़ा भारी दोष यह था कि वह कट्टर मुसलमान था। सारे राज्य को मुसलमान बनाने की प्रबल अभिलाषा उसमें विद्यमान थी, इस लिये उसने चारों ओर के प्रदेशों में हिन्दुओं पर जजिया आदि विशेष टैक्स लगा दिये थे। मन्दिरों का बनवाना बन्द कर दिया था। जिस तरह अशोक की मृत्यु के पश्चात् उस का विशाल साम्राज्य छिन्न भिन्न हो गया था और बौद्ध धर्म का प्रभाव भी भारत में कम हो गया था। इसी तरह औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद हुआ। यही कारण है कि अन्त समय में औरंगजेब को हार्दिक क्लेश उठाना पड़ा था जो कि उस के पत्र से स्पष्ट हो जाता है।

प्रश्न—एक छोटे से वंश मे उत्पन्न हो कर भी नादिरशाह ने किस प्रकार उन्नति की, इस की विवेचना करो।

उ०—यद्यपि ठीक है कि नादिरशाह एक छोटे से घराने में, जिस का पेशा बकरी की खाल से बनी हुई टोपियाँ बेच कर निर्वाह करना था, जन्म हुआ था, फिर भी उस ने अपनी योग्यता द्वारा धीरे धीरे बादशाह का ऊँचा पद प्राप्त किया। चार वर्ष तक डाकुओं के फन्दे में रहने के बाद जब इसे छुटकारा मिला तो यह डाकुओं के शक्तिशाली दल में सम्मिलित हो गया। अंत में इस दल का नेता बन कर इस ने खुरासान के अफगानों पर आक्रमण किया और उन्हें जीत लिया। तहमास्प ने इसे अपने राज्य में अच्छे पद पर नियुक्त कर दिया। नादिरशाह ने उस के तमाम शत्रुओं को वहां से भगा दिया। इस सेवा के बदले में नादिरशाह को आधा राज्य मिला। तहमास्प के बाद उस का पुत्र गद्दी पर बैठा, मृत्यु के पश्चात् नादिरशाह ने गद्दी पर अधिकार कर

स ने धीरे धीरे ईरान आदि को जीत दिल्ली पर आक्रमण किया। स के आक्रमण को लोग भूल नहीं सकते। उस का शासन बड़ा कठोर था लोग अब भी उस की नादिरशाही को याद करते हैं।

साधारण ज्ञान

प्रश्न १— आज की दुनिया क्या है ?

उत्तर—आज की दुनिया में और पुराने जमाने में जमीन आस मान का अन्तर हो गया है। पुरानी दुनिया में मनुष्य का जीवन सादा था, उस की माग बहुत कम थी। उसे जिन-जिन बातों की जरूरत थी वह खुद पैदा कर लेता था या उसे गाँव वाले मिल कर बना लेते थे। खाने के लिये धान्य गाँव में पैदा होता था। वह जो पहनता था वे कपडे भी अपने ही हाथ के कते और बुने हुए होते थे। यदि उसे किसी दूसरे गाँव जाना होता तो वह बैल गाडी पर चढ़ कर जाता था। परन्तु आज की दुनिया में इतना परिवर्तन हो गया है कि यदि आज पुराने जमाने के आदमी जीवित होते तो उन्हें विश्वास न होता उन सब बातो पर, जिन को देख कर हमें कोई आश्चर्य नहीं होता। आज हमारी माँग बड़ी विस्तृत हो गई है। हमारे खाने की चीजें भी तरह २ की बनने लग गई हैं। कई नये २ विज्ञान के आविष्कार हमारी आँखों के सामने हैं जैसे मोटर, रेल, हवाई, जहाज। इन आविष्कारों से एक देश दूसरे से बहुत नजदीक आ गया है। पहिले यदि भारतवर्ष से इगलैण्ड जाने के लिये दो-तीन महीने लगते थे उस से बहुत ही कम समय में वह यात्रा समाप्त की जा

।

जैसे २ यातायात के साधन बढ़ते जा रहे हैं, नई २ चीजें बनती जा रही हैं वैसे ही हमारा जीवन भी बहुत पेचीदा होता जाता है। जो चीजें हम उपयोग में लाते हैं, हमें पता नहीं कि वे कैसे बनती हैं, और उनके बनने में किन २ बातों की जरूरत लगती है। हम समाचार पत्रों में खबरें पढ़ते हैं, रेडियो द्वारा गाने सुनते हैं, तब भी साधारण लोगों को यह नहीं मालूम कि ये बातें कैसे होती हैं। इसीलिये हम कहते हैं कि हमारा जीवन पेचीदा हो गया है। मनुष्य एक प्रकार से मशीन बन गया है।

इसलिये पुरानी दुनिया में और आज की दुनिया में नीचे लिखे अनुसार भेद है —

(१) पहिले का जीवन सादा था।

(२) उन की माँग बहुत कम थी और वे माँग की पूर्ति खुद कर लेते थे।

(३) उन के यातायात के साधन भी सादे थे।

(४) वे बहुत कुछ अंश में स्वतन्त्र थे, मतलब यह कि दूसरे की चीजों पर निर्भर न थे।

परन्तु आज सभी बातें विपरीत हैं। हम हर बात में एक दूसरे पर निर्भर हैं।

(५) देशों की परस्पराश्रितता — जैसे प्रत्येक मनुष्य दूसरे पर निर्भर है उसी प्रकार प्रत्येक देश भी किसी न किसी बात में दूसरे देश पर निर्भर है। इस का कारण यह कि आज के मनुष्य को इतनी चीजों की आवश्यकता होती है कि जो उसके देश में पैदा नहीं होतीं और उन चीजों को बाहर से मँगाना पड़ता है। देश की भौगोलिक परि-

काफी असर होता है। उदाहरण के तौर पर ले लीजिये भारतवर्ष और इगलैण्ड। भारत कृषिप्रधान देश है और इगलैण्ड व्यवसाय प्रधान। इगलैण्ड गेहूँ और कपास इतने परिमाण में पैदा नहीं करता कि उस का काम चल सके। ये चीजें वह भारत से मगवाता है और इन के बदले में वह बना-बनाया माल भारत भेज देता है जो भारत में नहीं बनता। यानि बने-बनाये माल के लिये भारत इगलैण्ड पर आश्रित है और इगलैण्ड गेहूँ, कपास और अन्य कच्चे माल के लिये भारत पर आश्रित है। इसी प्रकार प्रत्येक देश एक दूसरे पर आश्रित है।

यह भी अकसर होता है कि एक देश की परिस्थिति का असर दूसरे देश पर पडता है। समझ लीजिये कि वर्षा की कमी से अमेरिका मे अकाल पडा और गेहूं बिल्कुल पैदा नहीं हुआ। इस का मतलब यह होता है कि सारे ससार में जितना गेहूँ प्रतिवर्ष पैदा होता है उससे अकाल की वजह से कम गेहूँ पैदा हुआ। इसका परिणाम यह होगा कि गेहूँ की कीमत बढ जायगी और ...सानों को अधिक फायदा होगा जहाँ गेहू की फसल ...।

... व्यक्तिगत जायदाद की नींव कैसे पडी और ... हुआ?

... गया है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। ... में एक ऐसा भी वक्त था जब कि न तो ... न पोलीस, जिससे मनुष्यों की रक्षा हो ... यह होता था कि हमेशा लूटमार ... समाज एक बुरी हालत में जीवन

मनुष्य की आवश्यकताएँ सीमित होने हुए भी वह दूसरों की चीजों को हड़पने की कोशिश में रहता था। उन रोकने के लिए भी कोई साधन नहीं थे। इसलिए धीरे २ कानून बनने लगे जिनसे व्यक्तिगत जायदाद की नींव पड़ी। यह बात मान ली गई है कि (१) जिस वस्तु पर किसी व्यक्ति का अधिकार हो जाय वह उसी की समझी जाय। (२) कानून के अन्दर रह कर प्रत्येक व्यक्ति को कमा कर इकट्ठा करने का अधिकार है। (३) पिता की मृत्यु के बाद उसके पुत्र ही उनके वारिस समझे जाएँ।

इन सिद्धान्तों का परिणाम अच्छा भी हुआ और बुरा भी। जो पुरुष बहुत महत्वाकांक्षी निकले उन्होंने बड़े शक्तिशाली साम्राज्य जीत लिए और दूसरे देशों की स्वतन्त्रता को भी नष्ट कर डाला।

प्रश्न ३—निम्नलिखित पर संक्षेप में टिप्पणियां (नोट) लिखिये—

(१) साम्राज्यवाद।
(२) फासिज्म और नाजीइज्म।
(३) अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्रीयसंघ।
(४) साम्यवाद।

(१) साम्राज्यवाद—संक्षिप्त में साम्राज्यवाद का मतलब यह है कि अपने कमजोर और पिछड़े हुए देशों पर जबरन अपना प्रभुत्व स्थापित करना और जीते हुए देश को अपने देश के लिए हर प्रकार से चूसना। जब योरुप के देशों में राष्ट्रीयता के भाव जागृत हुए तब वहाँ के लोग अपने २ देश को उन्नत और

प्रगतिशील बनाने की कोशिश करने लगे। उनकी देशभक्ति यह तक हो गई कि अपने देश को उन्नत बनाने के लिए वे लोग दूसरे देशो को भी अपने अधिकार में करने में अग्रसर हो गये। साम्राज्यवाद उग्र राष्ट्रीयता का परिणाम है।

(२) अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में योरुप में बड़े आविष्कार हुए उनका परिणाम यह हुआ कि वहाँ के उद्योग धन्धों में एक बड़ी जबर्दस्त क्रान्ति हो गई। बड़े २ कारखाने खुलने लगे और प्रत्येक प्रकार का तैयार किया हुआ माल बाहर के देशो को भेजा जाने लगा। व्यवसाय प्रधान देशों में बड़ी प्रतिस्पर्द्धा बढ़ गई खास कर बना बनाया माल बेचने के बाजारों में यह प्रतिस्पर्द्धा इतनी बढ़ी कि उन देशों को अपना बाजार सुरक्षित रखने के लिए कई देश जीतने पड़े। इससे बड़े २ साम्राज्यों का विस्तार हुआ। आज इङ्गलैण्ड का सबसे बड़ा साम्राज्य है वह इसीलिए कि इङ्गलैण्ड का बना बनाया सामान साम्राज्यवासी ... बेचे और बदले में उनको पक्का माल बनाने के लिए कच्चा मिलता रहा।

साम्राज्यवाद के फलस्वरूप कुछ बड़ी २ लड़ाइयाँ हुई ... -१८ का महायुद्ध एक बड़ा साम्राज्यवादी युद्ध था। आज का महायुद्ध भी एक प्रकार का बड़ा साम्राज्यवादी युद्ध है।

(३) फासिज्म और नाजीज्म—फासिज्म का जन्म इटली में और नाजीज्म का जन्म जर्मनी में हुआ। ये दो वाद भी उग्र राष्ट्रीयता के परिणाम हैं। यहाँ पर फौज का बोल-बाला है। इटली में मुसोलिनी और जर्मनी में हिटलर तानाशाह हैं। वे अपने देश में चाहे जो कर सकते हैं। विचार स्वातन्त्र्य और व्यक्ति

वतन्त्रता को उन्होंने दवा डाला है । फासिज्म और नाजीज्म ा मूल सिद्धान्त यह है कि मनुष्य का काम स्टेट के लिए आ है, स्टेट मनुष्य के लिए नहीं है । मनुष्य की हत्वाकांक्षा की पूर्ति भी स्टेट के द्वारा ही होती है, सलिए मनुष्य को चाहिए कि वह अपना सब कुछ स्टेट को र्पण कर दें।

इन दोनों वादों का जन्म १९१४—१८ के महायुद्ध के श्चात् हुआ। वर्साई की सन्धि से इटली और जर्मनी नाखुश े। उनकी साम्राज्य लिप्सा अब बहुत प्रबल हो गई । न्होंने अपनी सैनिक शक्ति इतनी बढा ली कि आज ससार को एक बडे भारी खतरे का भय हो गया । उन्हीं की बुद्धिमत्ता का परिणाम है कि आज दुनिया में युद्ध की प्रचण्ड ज्वाला जल रही है।

(४) अन्तर्जातीय राष्ट्रसघ—१९१४ के महायुद्ध के बाद सब बडे राष्ट्रों ने यह ठहराया कि दुनिया में शान्ति स्थापित करने के लिये एक ऐसी सस्था कायम की जाय कि जो देशों के परस्पर झगडो का शान्ति पूर्वक निर्णय कर दे, इससे उनका ख्याल था कि ससार से युद्ध को हमेशा के लिये निर्वासित कर दिया जायगा।

इसलिये जैनेवा (स्विटजरलैंड) में अन्तर्जातीय राष्ट्र-सघ की स्थापना की गई । यह बात १९१९ की थी । राष्ट्रसघ का काम १९३० तक अच्छी तरह चलता रहा । और सघ ने कई झगडों को निपटा भी दिया, लोक सेवा के भी कई काम भी किये ।

१६३० के बाद राष्ट्र-संघ दिनों-दिन निर्बल होता
प्रारम्भ से ही अमेरिका राष्ट्रसङ्घ का सदस्य नहीं बना था
फिर राष्ट्रसङ्घ के मातहत कोई सैनिक सरकार नहीं थी जो
बगावत करने वाले राष्ट्र को कुचल सकती । यही कारण
कि जब जापान ने मंचूरिया पर १६३१-३२ में चढ़ाई की
राष्ट्रसङ्घ कुछ न कर सका। वही हालत तब हुई जब इटली
एबीसीनिया पर धावा बोला। इटली से आर्थिक सम्ब
विच्छेद कर दिया गया था। परन्तु यह एक राष्ट्र की स्वाधीन
नष्ट होने से नहीं बचा सका। और अब तो राष्ट्रसङ्घ की के
याद ही रह गई हैं—जब से दूसरे ससार-व्यापी युद्ध का प्रार
हुआ है।

(४) साम्यवाद—अक्तूबर १६१७ में रूस में भारी सा
जिक और राजनैतिक क्रांति हुई, वही साम्यवाद के नाम से
प्रसिद्ध है। रूस में आज किसान और मज़दूरों का राज्य
वहाँ न तो कोई गरीब है और न कोई धनवान। सब को
भर खाना मिलता है। जो काम नहीं कर सकता उसे
भूखों रहना पड़ता है। व्यक्तिगत सम्पत्ति यहाँ जब्त कर ली
हैं और उत्पत्ति के सभी साधन जैसे—फैक्टरी, जमीन इत्य
सभी सरकार ने अपने अधीन कर लिये हैं अब धीरे २ व्यक्ति
व्यापार करने की स्वाधीनता दी गई है।

रूस के साम्यवादी किसानों के कारण राष्ट्र की आय
बढ़ गई है और धीरे-धीरे रूस एक उन्नत देश बनता चला
रहा हैं।

प्रश्न ४—वर्तमान महायुद्ध के कारण बतलाओ

ह भी समझाओ कि युद्ध प्रारम्भ करने की जिम्मेवारी किस
र है?

उत्तर—(१) स० १९३३-३४ मे हिटलर जर्मनी का तानाशाह
ा बैठा। स० १९१६ की वर्साई की सन्धि में जर्मनी बुरी तरह
चल दिया गया था। उसका सारा साम्राज्य छीन लिया गया
, हिटलर ने उस की सन्धि को मटियामेट करने के लिये और
र्मनी का प्रभुत्व सारे ससार पर स्थापित करने के लिये युद्ध की
ारी उसी दिन से करनी प्रारम्भ कर दी जिस दिन वह जर्मनी
भाग्य-निर्माता बना।

(२) इसी उद्देश्य की पूर्ति में उसने मार्च १९३६ में राइन
ड म अपनी सेना भेज दी और उसको अवैकिने अधिकार में कर
या। तब १९३९ में आस्ट्रिया और जैकोस्लोविया पर भी
ना अधिकार जमा लिया।

(३) इन सब कारणो से मित्र-राष्ट्र जर्मन की नीति से
हुत नाराज़ हो गये। इतने ही में जर्मनी ने पोलैण्ड को यह
। पेश की कि वह पोलिश कौरडार और डन्जिग जर्मनी के
ले कर दे और यदि उस ने ऐसा करने से इनकार किया तो
नी जबर्दस्ती उस से ये छीन लेगा। इङ्गलैण्ड और फ्रास ने
ण्ड को इस बात का विश्वास दिलाया कि उस की स्वतन्त्रता
ता हर हालत मे की जायगी और जर्मनी को भी साफ शब्दों
र दिया कि यदि उसने पोलैण्ड पर आक्रमण किया तो इग्लैंड
फ्रास को मजबूरन जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की
।

इसी बीच में जर्मनी ने रूस से अग त, स० १६३६ में सधि कर ली और सितम्बर १६३६ को पोलैंड पर आक्रमण कर दिया। इङ्गलैंड और फ्रांस ने भी ३ सितम्बर १६३६ को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

ऊपर की बातो से यह बात साफ जानी जाती है कि युद्ध को प्रारम्भ करने का उत्तरदायित्व जर्मनी पर ही है।

प्रश्न—युद्ध की प्रगति पर एक नोट लिखो और यह भी बतलाओ कि जर्मनी ने किन-किन देशों की स्वतन्त्रता नष्ट कर दिया।

उत्तर—(१) सितम्बर सन् १६३६ में पोलैंड पर जर्मनी ने पूरा अधिकार कर लिया। रूस ने भी पोलैंड पर आक्रमण कर उस देश को दो भागो मे विभाजित कर दिया। सन् १६३६ में और कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं हुई, सिवाय इसके कि रूस और फिनलैंड में भी युद्ध छिड गया और फरवरी १६४० में सन्धि भी हो गई।

(२) सन् १६४० युद्ध की दृष्टि से महत्त्व का रहा। फ्रां... र्मनी ने डेन्मार्क और नार्वे पर भी अधिकार कर लिया और और जून मे बेल्जियम, हालैंड और फ्रांस का भी पतन हो गया। सेना की प्रगति बिजली की रफ्तार बनी रही और कुछ ही युद्ध कर जर्मन सेना पैरिस पहुँच गई। फ्रांस में पेता के मातहत नया मन्त्रिमण्डल बना और जर्मनी से आरमिस्टि... (समझौता हो गया। इसके फलस्वरूप फ्रांस दो विभागो में विभाजित कर दिया गया। एक भाग तो जर्मन के अधीन रहा और दूसरा फ्रांस के अधीन। फ्रांस की इतनी जल्दी हार

लिया में तहलका मच गया। ब्रिटिश सेना जो फ्रांस की मदद के
त आई थी, डैन्मार्क से बड़ी कामयाबी के साथ इङ्गलैंड वापिस
। गई।

इसी बीच इङ्गलैण्ड पर भी जर्मनी ने भयङ्कर हवाई आक्र-
ण किये।

इटली ने भी मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा
र दी।

(३) सन् १९४१ मे जर्मनी ने रूमानिया, बलगेरिया, यूगो-
'विया और ग्रीस पर भी अपना अधिकार कर लिया। क्रीट पर
जर्मनी ने हमला करके सफलता प्राप्त की। लीबिया में इटली को
हार खानी पड़ी। उसका पूर्वीय साम्राज्य (एबीसीनिया
रिह पर भी ब्रिटिश फौजो का कब्जा हो गया।

२२ जून १९४१ में जर्मनों ने रूस पर भी एक दम आक्रमण
किया यह युद्ध अभी जारी है।

नोट - अब जापान भी लड़ाई में कूद पड़ा है और थोड़े
समय मे उसने मित्र-राष्ट्रों को काफी क्षति पहुचा दी।

जर्मनी के पतन के बाद जापान की बारी आई जापान को
बुरी तरह कुचल डाला गया १९४१ मे ही रूस और जर्मनी
सन्धि टूट गई जर्मन ने रूस पर आक्रमण कर दिया फलत
भग एक वर्ष के प्रयत्न से रूस ने जर्मन को मार भगाया
मित्र सेना ने भी जर्मन को कुचल कर जर्मनी पर अधिकार
लिया।

प्रश्न ६—निम्नलिखित पर संक्षेप में नोट लि

(१) मनुष्य सामाजिक प्राणी है।

(२) नागरिक।
(३) सम्मिलित परिवार।

उत्तर—(१) मनुष्य सामाजिक प्राणी है—मनुष्य अकेला नहीं रह सकता। वह समाज में रहता है और अपनी आवश्यकताओं के लिये वह एक दूसरे पर आश्रित है—इसीलिए कहा गया है कि मनुष्य समाजिक प्राणी है।

उदाहरण के तौर पर लीजिये एक आदमी को अन्न की, कपडों की, किताबों और अन्य कई वस्तुओं की जरूरत होती है। ये सब वह अकेले पैदा नहीं कर सकता और न वह सब बना सकता है। इन सब के लिये उसको दूसरे व्यक्तियों के ऊपर निर्भर रहना पडता है। ये ये सब अकेले नहीं बना सकता। इसीलिए मनुष्य-समाज में रहता और सामाजिक प्राणी के नाम से पुकारा जाता है।

(२) नागरिक—समाज में रहने वाला प्रत्येक पुरुष और ... नागरिक है अच्छे नागरिक वे हैं जो अपने कार्यों से दूसरे ... पहुँचाते हैं और बुरे वे जो दूसरों को कष्ट पहुचाते हैं। ... का कर्तव्य है कि वह सफाई और शान्ति से और कानून की आज्ञा में रहे। उसका यह भी कर्तव्य है कि वह अपने देश के लिये वही कार्य करे जिस से देश का फायदा हो। जैसे उसके कर्तव्य हैं वैसे उसको अधिकार भी हैं उसका अधिकार है कि कानून के अनुसार उसकी हर बात में सुनवाई हो और देश का सारा काम उसके प्रतिनिधियों द्वारा ही हो।

(३) सम्मिलित परिवार—समाज में व्यक्ति का क... । कुछ व्यक्तियों से परिवार बनता है और कुछ परिवा...

(२) नागरिक।

(३) सम्मिलित परिवार।

उत्तर—(१) मनुष्य सामाजिक प्राणी है—मनुष्य अकेला नहीं रह सकता। वह समाज में रहता है और अपनी आवश्यकताओं के लिये वह एक दूसरे पर आश्रित है—इसीलिए कहा गया है कि मनुष्य समाजिक प्राणी है।

उदाहरण के तौर पर लीजिये एक आदमी को अन्न की, कपड़ों की, किताबों और अन्य कई वस्तुओं की जरूरत होती है। ये सब वह अकेले पैदा नहीं कर सकता और न वह सब व[illegible] सकता है। इन सब के लिये उसको दूसरे व्यक्तियों के ऊपर निर्भर रहना पड़ता है। वे ये सब अकेले नहीं बना सकता। इसीलिये मनुष्य-समाज में रहता और सामाजिक प्राणी के नाम से पुकारा जाता है।

(२) नागरिक—समाज में रहने वाला प्रत्येक पुरुष और स्त्री नागरिक है अच्छे नागरिक वे हैं जो अपने कार्यों से दूसरे को फायदा पहुँचाते हैं और बुरे वे जो दूसरों को कष्ट पहुचाते हैं। प[illegible] नागरिक का कर्तव्य है कि वह सफाई और शान्ति से और कानून की आज्ञा में रहे। उसका यह भी कर्तव्य है कि वह अपने देश के लिये वही कार्य करे जिस से देश का फायदा हो। जैसे उसके कर्तव्य हैं वैसे उसको अधिकार भी हैं उसका अधिकार है कि कानून के अनुसार उसकी हर बात में सुनवाई हो और देश का [illegible] उसके प्रतिनिधियों द्वारा ही हो।

[illegible]) सम्मिलित परिवार—समाज में व्यक्ति का कार्य [illegible] कुछ व्यक्तियों से परिवार बनता है और कुछ परिवार

मिल कर सम्मिलित परिवार बनता है भारत में सम्मिलित परिवार की तो प्रथा अभी तक जारी है योरुप में प्राय विवाह कर पति-पत्नी अलग हो जाते हैं और अपना नया परिवार बना लेते हैं। परन्तु अपने यहा या तो एक पिता के पाच पुत्र क्यों न हों वे सब एक ही जगह रहते हैं। पाचों पुत्रों का विवाह हो जाने के बाद और उनके भी यहा लडके-लडकी हो जाने के बाद भी सब एक ही जगह रहते हैं। इसी को सम्मिलित परिवार कहते हैं।

परिवार के मुखिया (अकसर पिता) के पास परिवार की आय जमा होती रहती है और परिवार का खर्च भी वही चलाता है। परन्तु एक बात देखी गई है कि इस प्रथा से घर में शान्ति नहीं रहती और हमेशा कलह मचा रहता है। मनुष्यों की रुचि और प्रवृत्तियो में भेद होने के कारण एक साथ रहना कठिन हो जाता है और यही कलह का खास कारण है।

प्रश्न ७—भारतवर्ष के गाव के जीवन का वर्णन कीजिये। ग्राम पचायतों का भी अपने उत्तर में उल्लेख कीजिये।

उत्तर—भारत में १ ० में से ८५ मनुष्य गाव में रहते हैं। इस लिये देश की सामाजिक, राजनितिक और आर्थिक व्यवस्था में गाव का खास महत्व है। भारत के गाँव को बाहर से बहुत कुछ चीजों की आवश्यकता होती है। प्राय उन्हें जो चाहिये वह सभी गाँव में ही तैयार हो जाती हैं।

गाँव में कुछ कच्चे और कुछ पक्के मकान होते हैं और घरों और खेतों से घिरा हुआ होता है। गाँव के लोग किसान होते हैं और उनका धन्धा खेती का होता अलावा गाँव में बढई, तरखान, लोहार, धुनिया,

(२) नागरिक।

(३) सम्मिलित परिवार।

उत्तर—(१) मनुष्य सामाजिक प्राणी है—मनुष्य अकेला नहीं रह सकता। वह समाज में रहता है और अपनी आवश्यकताओं के लिये वह एक दूसरे पर आश्रित है—इसीलिए कहा गया है कि मनुष्य समाजिक प्राणी है।

उदाहरण के तौर पर लीजिये एक आदमी को अन्न की कपड़ों की, किताबों और अन्य कई वस्तुओं की जरूरत होती है ये सब वह अकेले पैदा नहीं कर सकता और न वह सब व[illegible] सकता है। इन सब के लिये उसको दूसरे व्यक्तियों के ऊपर नि[illegible] रहना पड़ता है। वे ये सब अकेले नहीं बना सकता। इसीलि[illegible] मनुष्य-समाज में रहता और सामाजिक प्राणी के नाम से पुकार[illegible] जाता है।

(२) नागरिक—समाज में रहने वाला प्रत्येक पुरुष औ[illegible] स्त्री नागरिक है अच्छे नागरिक वे हैं जो अपने कार्यों से दूसरे क[illegible] फायदा पहुँचाते हैं और बुरे वे जो दूसरो को कष्ट पहुचाते हैं। प[illegible] नागरिक का कर्तव्य है कि वह सफाई और शान्ति से और कानू[illegible] की आज्ञा में रहे। उसका यह भी कर्तव्य है कि वह अपने देश [illegible] लिये वही कार्य करे जिस से देश का फायदा हो। जैसे उस[illegible] कर्तव्य हैं वैसे उसको अधिकार भी हैं उसका अधिकार है [illegible] कानून के अनुसार उसकी हर बात में सुनवाई हो और देश क[illegible] सारा काम उसके प्रतिनिधियों द्वारा ही हो।

(३) सम्मिलित परिवार—समाज में व्यक्ति का काफ[illegible] महत्व है। कुछ व्यक्तियों से परिवार बनता है और कुछ परिवा[illegible]

मिल कर सम्मिलित परिवार बनता है भारत में सम्मिलित परिवार की तो प्रथा अभी तक जारी है योरुप में प्राय विवाह कर पति-पत्नी अलग हो जाते हैं और अपना नया परिवार बना लेते हैं। परन्तु अपने यहा या तो एक पिता के पाच पुत्र क्यों न हों वे सब एक ही जगह रहते हैं। पाचों पुत्रों का विवाह हो जाने के बाद और उनके भी यहा लडके-लडकी हो जाने क बाद भी सब एक ही जगह रहते हैं। इसी को सम्मिलित परिवार कहते हैं।

परिवार के मुखिया (अकसर पिता) के पास परिवार की आय जमा होती रहती है और परिवार का खर्च भी वही चलाता है। परन्तु एक बात देखी गई है कि इस प्रथा से घर में शान्ति नही रहती और हमेशा कलह मचा रहता है। मनुष्यों की रुचि और प्रवृत्तियो में भेद होने के कारण एक साथ रहना कठिन हो जाता है और यही कलह का खास कारण है।

प्रश्न ७—भारतवर्ष के गाव के जीवन का वर्णन कीजिये। ग्राम पचायतों का भी अपने उत्तर में उल्लेख कीजिये।

उत्तर—भारत में १ ० में से ८५ मनुष्य गाव में रहते हैं। इस लिये देश की सामाजिक, राजनितिक और आर्थिक व्यवस्था में गाव का खास महत्व है। भारत क गाँव को बाहर से बहुत कुछ चीजों की आवश्यकता होती है। प्राय उन्हें जो चाहिये वह सभी गाँव में ही तैयार हो जाती हैं।

गाँव में कुछ कच्चे और कुछ पक्के मकान होते हैं और घरों और खेतों से घिरा हुआ होता है। गाँव के लोग अकसर किसान होते हैं और उनका धन्धा खेती का होता है कि... अलावा गाँव में बढई, तरखान, लोहार, धुनिया, जुलाह...

रहते हैं। नाई, कहार, चमार, बनिया और ब्राह्मण भी आदि काल से रहते आए हैं गाँव में अकसर काम अनाज से ही चलता है, रुपये पैसे का बहुत कम उपयोग किया जाता है। नाई, ब्राह्मण लोहार आदि को भी गाँव वाले अपने अनाज का कुछ हिस्सा दिया करते हैं।

गाँव में भी किसान दो प्रकार के होते हैं एक तो वह जो भूमि के खुद मालिक हैं और दूसरे वह जो जमींदारों की जमीन मजदूरी पर जोतते हैं। इन्हें मजदूर किसान कहते हैं।

मजदूर किसान के अतिरिक्त दूसरे ऐसे भी मजदूर होते हैं जो फसल काटने में और बोने में मदद करते हैं।

मौरूसी जिमींदार वे किसान हैं जो किसी जमीन को १८ साल लगातार जोतते आये हैं। ये न तो जमीन से हटाये ही सकते हैं और न इनके लगान में वृद्धि की जा सकती है।

गाँव का सामाजिक जीवन बिल्कुल सादा है। शिक्षा क से लोग पुरानी प्रथाओं को ही महत्त्व देते हैं। इसीलि में ब्राह्मण का अपेक्षाकृत अधिक मान रहता है। वह गाँ लों की जन्म-पत्री तैयार करता है और उनके ब्याह-शाद कराता है।

गाँव के जीवन में पचायत का महत्वपूर्ण स्थान है ये ही गाँव में झगड़े वगैरह का निर्णय करती हैं। पञ्चों का चुना गाँव वाले ही करते हैं। उन्हें दीवानी और कुछ फौजदारी अधिकार भी हैं। पिछले कुछ वर्षों में पञ्चायतें धीरे २ लुप्त होती ज परन्तु अब कई प्रांतों में फिर वह कायम की ज

रही है। प्रजातन्त्र शासन-प्रणाली में भारत की ग्राम—पञ्चायतों का विशेष महत्व होगा।

गाँव के कार्यकर्ताओं में नम्बरदार, चौकीदार, पटवारी, जैलदार खास हैं। जिला कलेक्टर प्रत्येक गाँव म नम्बरदार नियुक्त करता है। उसका काम गाँव मे शान्ति रखना और कर जमा करना है। गाँव मे चौकीदार पुलिस का काम करता है। पटवारी का काम ज़मीन का हिसाब किताब रखना है। वह ज़मीन के कर का भी हिसाब रखता है। गाँव में पटवारी का बड़ा रोब रहता है। अनेक गाव क ऊपर एक जैलदार हुआ करता है। उसका काम गावो क कार्यकर्ताओं पर निगरानी रखना होता है।

प्रश्न ८—जिला क्या है ? उसकी रचना और शासन पर एक नोट लिखो।

उत्तर—राज-शासन मे जिला एक महत्व रखता है। पाँच गावों पर एक पटवारी रहता है। ४० गावो पर एक जैलदार और १०० गावों का एक थाना बनाया जाता है। करीब थानों की एक तहसील होती है। ऐसी ३-४ तहसीलों से एक जिला बनता है।

ज़िले का मुखिया डिप्टी कमिश्नर होता है। उसे कलैक्टर भी कहते हैं। वह प्रान्त क गवर्नर द्वारा नियुक्त किया जाता है और प्राय भारतीय सिविल सर्विस मे से लिया जाता है। वह जिला मैजिस्ट्रेट का भी काम करता है। जिसमे शान्ति रखना, लगान जमा करना, न्याय, म्यूनीसिपैलिटी, जिला बोर्ड का काम वगैरह उसके काम हैं।

पोलीस के काम के लिये प्रत्येक जिले में एक ज़िला पोलीस सुपरिन्टैण्डैण्ट उसका एक डिप्टी, कुछ इन्स्पेक्टर सब इन्स्पेक्टर और सिपाही रहते हैं।

जिला बोर्डों की स्थापना लार्ड मेयो के समय में हुई थी। पहिले उसके सदस्य नामजद किये जाते थे परन्तु अब निर्वाचन की प्रथा कायम कर दी गई हैं ज़िला बोर्डों का काम, सड़कें बनवाना, बाग लगवाना, स्कूल हस्पताल आदि कामों का संचालन करना है जिला बोर्ड अपना बजट खुद बनाते हैं। परन्तु उसकी स्वीकृति सरकार द्वारा होती है।

प्रश्न ६—नगर समितिया कितने प्रकार की हैं ? उनके कार्य क्या क्या हैं ?

उत्तर—नगर समितिया तीन प्रकार की होती हैं—

(१) म्यूनीसिपैलिटियाँ—ये नगरों का प्रबन्ध करने के लिये प्रत्येक बड़े नगर में एक म्युनीसिपैलिटी होती है।

( ) [illegible]पोरेशन—इनका अकसर बहुत बड़े शहरों के लिये [illegible]गठन किया जाता है। भारत के सिर्फ चार बड़े शहरों में [illegible] कायम है—बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, और करांची [illegible] भी बनने वाला है।

(३) [illegible]पोरेशन के संचालन का कार्य मेयर एल्डर मैन आदि क[illegible] हैं। मेयर का निर्वाचन प्रति वर्ष किया जाता है।

स्माल टाउन कमेटी—बहुत छोटे नगरों या कसबों में स्माल टाउन कमेटिया स्थापित की जाती हैं।

नगर समितियों के कार्य—शहर की सफाई, प्रकाश, सड़कें, [illegible] आदि स्थापित करना है।

इन सब कमेटियों की देख-भाल के लिये स्थानीय स्वराज्य मन्त्री की नियुक्ति प्रत्येक प्रान्त में की जाती है।

प्रश्न १०—भारतवर्ष का साधारण परिचय दो।

भारतवर्ष बहुत बड़ा देश है। जन सख्या में इसका दूसरा नम्बर है। यहाँ गर्म से गर्म ठण्डे से ठण्डा जलवायु मिलता है। हर प्रकार की पैदायश होती है यहाँ कई जातियाँ हैं और कई धर्म है। करीब *०० प्रकार की बोलियाँ बोली जाती हैं। इतना होते हुए भी राजनीतिक दृष्टि से भारत एक है।

प्रश्न ११—भारत मन्त्री और भारत-मन्त्री की कौंसिल के बारे मे तुम क्या जानते हो?

उत्तर—भारत के भाग्य का निर्णय करने का अधिकार ब्रिटेन की पार्लियामेंट को है। भारतवर्ष का पूरा काम चलाने के लिए भारत सचिव (सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इण्डिया) की जिम्मेदारी है। यह ब्रिटिश मन्त्री मण्डल का भी सदस्य होता है और भारत सम्बन्धी सभी बातों के लिये पार्लियामेंट के सामने जिम्मेदार होता है। वायसराय भारत सचिव की आज्ञा का पालन करता है और उसे भारत की सभी मुख्य बातें सूचित करता रहता है।

भारत मन्त्री की सहायता के लिये दो मन्त्री एक हाई कमिश्नर नियुक्त होता है। इनके अलावा एक भारत कौंसिल का भी निर्माण किया गया है जो भारत मन्त्री को भारत सम्बन्धी सभी मामलों में सहायता देती है। इस कौंसिल में ८ से १२ तक सदस्य होते हैं। १८

प्रश्न १२—भारतवर्ष के केन्द्रीय शासन पर एक नोट लिखो। उसमें यह भी विशेष रूप से बतलाओ कि वायसराय के क्या क्या अधिकार है ?

उत्तर—भारतीय शासन का मुखिया वायसराय है। उसको ५ साल के लिये मुकर्रर किया जाता है और बड़े योग्य पुरुष की ही इस पद पर नियुक्ति की जाती है।

वायसराय की सहायता के लिये एक कार्य-समिति नियुक्त की जाती है जिसका प्रधान वायसराय होता है। इस कार्य समिति में कुल ८ सदस्य होते हैं। उनमें से केवल ३ भारतीय होते है। काम अक्सर बहुसम्मति से होता है, परन्तु वायसराय कार्य-समिति के प्रस्तावों को ठुकरा भी सकता है।

व्यवस्थापिका सभा के सम्बन्ध में वायसराय के [illegible]—वह असैम्बली और कौंसिल आफ स्टेट में भाषण दे [illegible] है। उनके अधिवेशन उसकी अनुमति से ही बुलाये जाते हैं। चुनाव भी उसकी अनुमति से होता है। वह असैम्बली के किये हुए बिल को कानून बनने से रोक सकता है। वह [illegible] भी जारी कर सकता है जिन की मुद्दत ६ मास होती है [illegible] में वायसराय को इतने अधिकार हैं जितने शायद ही दुनिया किसी को होंगे।

सन् १९३५ के शासन विधान के अनुसार केन्द्रीय शासन में भी कई परिवर्तन होने वाले थे, परन्तु युद्ध के छिड जाने के कारण वे परिवर्तन नहीं हो सके।

प्रश्न १३—सन १९३५ के सघ शासन विधान के अनुसार

जो व्यवस्थापिका सभाएं कायम की जाने वाली थीं उन पर संक्षेप में नोट लिखो।

उत्तर—केन्द्रीय संघ का काम दो सभाओं के सुपुर्द किया गया था—(१) कौंसिल आफ स्टेट और (२) फेडरल असेम्बली।

(१) कौंसिल आफ स्टेट—कुल सदस्य २६० रखे गये। जिसमें से १५६ ब्रिटिश भारत के प्रतिनिधि, और १०४ सदस्य देशी रियासतों के। प्रति तीसरे वर्ष एक तिहाई सदस्यों का नया निर्वाचन करना निश्चित हुआ था।

(२) फेडरल असेम्बली—इस में कुल ३७५ सदस्य निश्चित किये गये थे इन में से २५० अंग्रेजी भारत के और १२५ देशी रियासतों के। असेम्बली का भविष्य काल पांच साल का रखा गया था।

इन सभाओं में चुनाव साम्प्रदायिक पद्धति पर ही होना था। यह उम्मीद की गई थी कि हिन्दू हिन्दू को ही मत (वोट) दें, और मुसलमान मुसलमान को देशी रियासतों के प्रतिनिधि राजा महाराजा द्वारा ही नामजद किये जाने वाले थे।

व्यवस्थापिका सभाओं को निम्नलिखित विषयों पर कानून बनाने का अधिकार दिया गया था—(१) भारत की आन्तरिक रक्षा (२) बाह्य मामले (३) मुद्रा (४) रेलवे (५) डाक और तार (६) आय कर।

प्रश्न १४—आजकल प्रान्त का शासन किस प्रकार होता है? यह भी बताओ कि व्यावहारिक रूप में वह कहाँ तक हुआ है।

उत्तर—सन् १९३५ का शासन विधान दो विभागों में विभाजित किया जा सकता है, एक तो केन्द्र के लिये और दूसरा प्रान्तो क लिये। इस शासन विधान के अनुसार केन्द्रीय सरकार तो बनी नहीं। प्रान्त में अवश्य आजकल सन् १९३५ के ही अनुसार काम चल रहा है।

भारत को ११ प्रान्तों में विभाजित किया गया, जो गवर्नरों के प्रान्त के नाम से कहे जाते हैं। इन के अतिरिक्त ब्रिटिश बलोचिस्तान, दिल्ली, अजमेर, मारवाड, और कुर्ग ये चीफ कमिश्नरों के प्रान्त कहे जाते हैं।

गवर्नर—प्रत्येक प्रात का मुखिया गवर्नर होता है उसकी नियुक्ति सम्राट द्वारा होती है। अपने विशेष अधिकारों को छोडकर वह प्रत्येक बात में अपने मन्त्री-मण्डल की सहायता ? सम्मति से काम करता है उस के विशेष अधिकार में —शाति कायम रखना और अल्पमतों के अधिकारों रक्षा करना है। उसे वायसराय की तरह मन्त्री मण्डल को ... करने (तोडने) के और आर्डीनेन्स जारी करने के भी ...िकार हैं।

मन्त्री-मण्डल—प्रांतों के शासन पर व्यवस्थापिका सभा का पूरा नियन्त्रण है। व्यवस्थापिका सभा के बहुमत वाली पार्टी के नेता को गवर्नर मत्री-मडल बनाने के लिए निमन्त्रित करता है और उसी की सम्मति से गवर्नर ४ से १२ तक मन्त्री नियुक्त करता है। प्रधान मन्त्री या प्रीमियर इस मण्डल का नेता होता है। व्यवस्थापिका सभा यदि अविश्वास का प्रस्ताव पास कर, दे तो मन्त्री-मण्डल को अपना त्यागपत्र देना पडता है और

गवर्नर फिर उस पार्टी के नेता को मन्त्री-मण्डल बनाने के लिए बुलाता है जिसका व्यवस्थापिका सभा मे बहुमत होता है। मंत्री-मंडल के ही ऊपर प्रांत के पूरे शासन का भार रहता है।

व्यवस्थापिका सभाएँ—मद्रास, बम्बई, बंगाल, युक्तप्रांत, बिहार, आसाम में दो सभाएँ हैं, बाकी प्रांतों में सिर्फ एक ही व्यवस्थापिका सभा है। इन दो क्रमशः लेजिस्लेटिव कौंसिल और लेजिस्लेटिव असेंबली कहते हैं। इन का निर्वाचन साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व के आधार पर होता है।

सभाओं का अधिवेशन बुलाने का और स्थगित करने का अधिकार गवर्नर को है। असेंबली का निर्वाचन ५ वर्ष के लिये होता है। कौंसिल के एक-तिहाई सदस्यों का चुनाव प्रति तीन वर्षों के बाद होता है बजट को छोड़ कर कोई भी सभा बिल किसी भी सभा में पेश किया जा सकता है बिल का कानून बनने के लिये दोनों सभाओं में पास होना आवश्यक है और गवर्नर की मंजूरी भी जरूरी है। मतभेद होने पर दोनों सभाओं का सम्मिलित अधिवेशन बुलाकर बहुमत से बिल पास किया जाता है। गवर्नर उसे स्वीकार कर सकता है परन्तु यदि वह चाहे तो वायसराय के विचारार्थ भी भेज सकता है। बजट पास करने का अधिकार सिर्फ असेम्बली को ही है।

नये शासन-विधान के अनुसार जब चुनाव हुआ तो ११ में से ७ प्रान्तों में कांग्रेस की जीत हुई और जुलाई १९३७ में उन प्रांतों में कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल ने अपना काम बड़ी सफलता के साथ किया। परन्तु महायुद्ध के आरम्भ होने पर कांग्रेस के मंत्रियों ने

सीखा। आज कल वे निम्नलिखित कार्य करती हैं—नर्सिंग, टाइप करना, सामान बेचना, टिकट बेचना, पढ़ना आदि।

आर्थिक दृष्टि से कुछ अंश तक स्वतन्त्र होने के बाद स्त्रियां राजनीतिक क्षेत्र में कूद पड़ीं। इस जमाने में भी उनके आन्दोलन ने इतना जोर पकड़ लिया है कि उन्हें वोट देने का अधिकार भी मिल गया है। अब वे व्यवस्थापिका सभाओं की सदस्या भी चुनी जाने लगी हैं और मन्त्री-मण्डलों में भी उन्होंने अपना स्थान पा लिया है।

प्रश्न १८—भारत में स्त्रियों की वर्तमान स्थिति पर एक नोट लिखो—सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में उनकी क्या दशा है?

उत्तर—भारतवर्ष में आज की स्त्रियां बहुत पिछड़ी हुई हैं। सती की प्रथा बन्द हो गई है और विधवा-विवाह जारी होते हुए भी हम यह नहीं कह सकते कि हमारी महिलाएँ अन्य देशों की महिलाओं के मुकाबले में आगे बढ़ी हुई हैं। स्त्रियां अब भी नीच समझी जाती हैं विवाह के सम्बन्ध में अभी भी उनके माँ-बाप निर्णय करते हैं।

इतना होते हुए भी हमारा महिला-समाज प्रगति के रास्ते पर जरूर है। स्त्रियाँ अपने अधिकार समझने लगी हैं। देश की राजनीतिक संस्थाओं ने उनके उत्थान में काफी मदद की है अखिल-भारतीय महिला संघ की भी स्थापना हो चुकी है।

शिक्षा का भी प्रचार काफी बढ़ रहा है। खास कर शहरों में मध्यमश्रेणी के लोग अपनी लड़कियों को शिक्षा देने में बड़ा हिस्सा ले रहे हैं। धीरे २ वे अपना पति भी खुद ही चुनने लगी हैं।

स्त्रियों को वोट देने का अधिकार १८१९ से ही था। सन् १९३५ के शासन-विधान के अनुसार स्त्री वोटरों की सख्या करीब ५० लाख कर दी गई है। व्यवस्थापिका सभाओं में अब स्त्रियों के लिए सीटें सुरक्षित रखी गई हैं। म्यूनीसिपैलिटी और कार्पोरेशन में भी स्त्रिया चुनी जाने लगी हैं।

इसके साथ २ विभिन्न व्यवसायो मे भारतवर्ष की महिलाओं ने प्रवेश करना शुरू कर दिया है। खासकर नर्सिङ्ग, मेडीकल, स्कूल और कालिजों मे भी व पढने पढाने लगी हैं। अब करीब २ कोई भी ऐसा व्यवसाय भारत में नहीं रहा जहाँ स्त्रिया न हों।

अब आपको स्त्री वकील, बैरिस्टर और मैजिस्ट्रेट मिलेगी। स्कूल और कालिजो में अध्यापक का काम करती हुई भी आपको महिलाएँ ज़रूर मिलेंगी।

ऊपर की इन बातो से हम कह सकते हैं कि आजकल पहिले की अपेक्षा स्त्रियो की प्रतिष्ठा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रो मे बहुत बढ गई हैं।

प्रश्न १९—महिला जागृति आन्दोलन के क्या परिणाम हुए ?

उत्तर—इस आन्दोलन के अच्छे और बुरे दोनो परिणाम हुए।

अब स्त्रियाँ सिर्फ घर की रानी ही नहीं रहीं किन्तु वे दिमागी और शारीरिक दोनों कामों मे पुरुषों का मुकाबला करने लगी हैं, जैसे हवाई जहाज़ चलाना, तैरना, खेल कूद आदि। अमरीका में तो स्त्रिया डकैती करना भी सीख गई हैं। [illegible]

मे तो लडकियाँ अब विवाह से घृणा करने लग गई हैं।

सन्तान पालन करना एक आफत समझी जाती हैं। इससे पश्चिम में घर की शान्ति जाती रही हैं।

भारतवर्ष में स्त्रियाँ इस सीमा तक नहीं पहुँची परन्तु धीरे २ अनुकरण किया जा रहा है

प्रश्न ७०—भारतीय समाज में स्त्री का क्या स्थान है ?

उत्तर—प्राचीनकाल में तो भारत में स्त्रियाँ सामाजिक और राजनीतिक जीवन मे भाग लेती थीं । महारानी लक्ष्मीबाई का नाम तो जगविख्यात हो ही गया है। प न्तु हमारे यहाँ स्त्री का वास्तविक स्थान घर के अन्दर ही माना गया है। जिस स्त्री में कोई असाधारण गुण विद्यमान हो और यदि वह सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में उतरे तो उसे कोई रुकावट भी नहीं है। ऐसी स्त्रियाँ और भी आदर की दृष्टि से देखी जाती हैं। परन्तु भारतीय सस्कृति में इसी बात को महत्व दिया गया है कि पुरुष बाहर का काम करे और स्त्री घर की देख-भाल और व्यवस्था रखे। भारतीय आदर्श मे स्त्री और पुरुष एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी नहीं हैं। परन्तु दोनों मिलकर एक दूसरे के गुणों की कमी की पूर्ति करते हैं।

प्रश्न ७१—विज्ञान ने मनुष्य जाति का बहुत भला भी किया है और नुक्सान भी—इसको सिद्ध कीजिए।

उत्तर—विज्ञान ने मनुष्य जाति का बहुत भला किया है। रेल, मोटर, हवाई जहाज, जहाज आदि ने ससार को काफी फायदा पहुंचाया है। इनसे बडी दूर की यात्रा बडी सुगमता से क

जा सकती है। बड़े-बड़े आविष्कारों ने मनुष्य के काम करने की शक्ति को कई गुना कर दिया है। कितना अच्छा होता इन आविष्कारों का उपयोग केवल मनुष्य जाति के लाभ के लिए ही किया जाता। आज इन्हीं आविष्कारों का उपयोग एक दूसरे का गला घोंटने के लिए हो रहा है। हवाई जहाजों का उपयोग गांवों पर बम बरसाने के लिए हो रहा है। जर्मनी और इटली में बड़े २ विज्ञान के विद्वानों को इसलिए भारी वेतन दिया जा रहा है कि वे कोई ऐसे शस्त्र ढूँढ निकालें जिनसे कई आदमियों की [illegible]या तुरन्त हो सके।

प्रश्न २२—निम्नलिखित आविष्कारों को संक्षेप में समझाइये—

(१) टैलीवीजन
(२) रेडियो
(३) बोलते फिल्म
(४) हवाई जहाज़
(५) रौकट शिप

उत्तर (१)—टैलीवीजन—टैलीवीजन से एक घटना का चित्र [illegible] हजार मील की दूरी पर भेजा जा सकता है। जैसे दो आदमी, एक कलकत्ता में और दूसरा लाहौर में टेलीफोन से बात चीत कर लेते हैं। वे आपस में एक दूसरे को नहीं देख सकते। परन्तु टैलीवीजन द्वारा यह सुलभ हो गया है। वैसे ही हम रेडियो से गाने सुनते हैं परन्तु यह नहीं देख सकते कि कौन गा रहा है। टैलीवीजन से हम देख सकते हैं कि कौन गा रहा

सचमुच देखा जाय तो टैलीवीजन एक नया आविष्कार नहीं है, वह तो कितने की विभिन्न आविष्कारो के आधार पर बनाया गया है। टेलीवीजन में प्रकाश और छाया के चित्रों को बिजली और बेतार की तार की मदद से ससार के एक कोने से दूसरे कोने तक भेजा जा सकता है।

टैलीवीजन अभी सिर्फ प्रारम्भिक दशा मे है। धीरे २ इसके प्रयोग और भी अधिक बढ जाएगा और जो त्रुटिया आज हमें मालूम होती है वे दूर कर दी जायेंगी।

(२) रेडियो—रेडियो वास्तव में ज्ञान विस्तार का अनमोल साधन बन गया है। भारत में अब लोक प्रिय होता जा रहा है। अमेरिका में तो घर घर रेडियो हैं। वहाँ इसकी सख्या लगभग डेढ करोड बताई जाती है। इस महायुद्ध में तो विदेश के समाचार सुनने के लिए यह खास साधन हो गया है। नहीं तो पहले हजारों मील दूर देश के समाचार का उसी समय मिल जाना एक असाधारण सी बात थी। रेडियो से व्यापारिक और अन्य समाचार एक ही जगह से उसी समय सारे ससार में सुनाए जा सकते हैं।

रेडियो का सिद्धात यह है—हम आपस में बातचीत करते हैं। और एक दूसरे की आवाज को कान से सुनते हैं। यह आवाज हमें कैसे सुनाई देती है ? आवाज वायुमण्डल की लहरों के कम्पनों द्वारा हमारे कानों तक पहुँचती है। अर्थात् आवाज को हमारे कानों तक पहुचाने के लिए वायु माध्यम का काम करती है। इसके बाद वैज्ञानिकों को ईथर का पता लगा और उन्हें मालूम हुआ कि यह भी एक बहुत श्रेष्ठ वाहक और माध्यम

है और अब ईथर द्वारा ही आवाज को एक स्थान से दूर दूसरे स्थान तक भेजा जाता हैं। हम रेडियो पर गाते हैं तब यह आवाज़ ईथर द्वारा सारे ससार में फैल जाती है और जो सुनना चाहे वह अपने रेडियो यन्त्र द्वारा सुन सकता है।

(३) बोलते फिल्म—कुछ दिन पहले हम चुप फिल्म देखते थे। परन्तु अब बोलती फिल्म लोकप्रिय हो गई है यहाँ तक कि नाटक का तो अब नाम नहीं सुनाई देता। बोलती फिल्म पहिले पहल १६२६ में तैयार हुई और इन १६ सालों में इसने इतनी लोकप्रियता प्राप्त कर ली इतनी शायद ही किसी मनोरंजन के साधन ने प्राप्त की हो फिल्म के एक्टर और एक्ट्रस को काफ़ी बड़ी रकम तनख्वाह में मिलती है और आज कल समाज में भी वे बुरी निगाह से नहीं देखे जाते।

फिल्म में और फोटो खींचने में खास अन्तर नहीं है। फिल्म सेलोलाइट की करीब दो इंच चौड़ी और सैकड़ों फ़ीट लम्बी पट्टी होती है। इस पर फोटो लेने का मसाला लगा रहता है। इस मसाले वाली फिल्म पर एक ही दृश्य के अनेक फोटो बड़ी तेज़ी से खींचे जाते हैं यहां तक की एक सैकण्ड में ७२ चित्र एक साथ लगे हुए, परन्तु अलग-अलग खिंच जाते हैं। इस नैगेटिव को सिनेमा मे बिजली की रोशनी के सामने रखकर तेज़ी से चलाया जाता है जिस से परदे पर हमारे सामने चित्र चलते-फिरते दिखाई देते हैं। इन नैगेटिव फिल्मों के किनारे पर ग्रामोफोन द्वारा आवाज़ के कम्पनोंके चिह्न अङ्कित कर लिए जाते हैं और इन चिन्हों द्वारा बिजली की सहायता से उसी तरह के कम्पन वायुमण्डल में पैदा किए जाते हैं, जिस तरह के

वैज्ञानिक साहित्य में आर्यभट्ट, वराहमिहिर ब्रह्मभट्ट, शुक्राचार्य भास्कराचार्य, और राजनीति शास्त्र में मनु, बृहस्पति, शुक्र, और राजकौटिल्य के नाम अमर हैं। व्यास, गौतम, कपिल, शंकराचार्य महान् दार्शनिक और विचारक इस नाते से प्रसिद्ध हैं। साहित्य के समालोचकों की राय है कि जितनी स्वाभाविकता प्राचीन काव्यों में है उतनी आज के कवियों की कृति में नहीं मिलती। इसी तरह प्रत्येक साहित्य के अंग में प्राचीन साहित्य को आज तक ऊंचा और गौरव का स्थान मिला हैं।

प्रश्न २४—प्राचीन हिन्दी-साहित्य के विषय में तुम क्या जानते हो?

उत्तर—तुलसीदास, सूरदास और कबीरदास ये प्राचीन हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि हो गये हैं। तुलसीदास की रामायण तो भारत विख्यात है। यह ग्रन्थ भक्ति और कविता की दृष्टि से सर्व-श्रेष्ठ माना गया है। सूरदास की कविता में तन्मयता के भाव और कबीरदास रहस्यवाद के लिये प्रसिद्ध हैं। इन कवियों के अतिरिक्त चन्दबरदाई, रहीम, केशवदास, भूषण, बिहारी आदि कवि भी प्रसिद्ध हैं। भूषण कवि वीर रस के लिये प्रसिद्ध हैं। उन की कविता ने मुगलों के जमाने में हिन्दुओं में वीरता की भावना भर दी।

पहले हिन्दी कविता ब्रजभाषा में लिखी जाती थी। उस समय खड़ी बोली का चलन नहीं था। उस समय उपन्यास और नाटक नहीं लिखे गये थे।

प्रश्न २५—नोबल पुरस्कार के सम्बन्ध में एक छोटी टिप्पणी लिखो।

उत्तर—यह पुरस्कार स्वीडन के श्री एल्फ्रेड बर्नहार्ड नोबल की तरफ से दिया जाता है। उन्होने २७० लाख रूपये दान किये, जिसके सूद में से १२० हजार रुपयो के पाँच पुरस्कार रसायन, भौतिक विद्या, चिकित्सा शास्त्र, साहित्य और अन्तर्जातीय शान्ति आदि विषयों के लिये दिये जात हैं। सन् १९१३ मे भारत के जगविख्यात कवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर को यह पुरस्कार मिला था।

प्रश्न २६—आज कल के भारतीय साहित्य पर एक नोट लिखो।

उत्तर—आज का हमारा साहित्य बडी उन्नति कर रहा है। जैसे भारत स्वतन्त्रता क पथ पर आगे बढ़ रहा है वैसे ही हमारा साहित्य भी दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है।

भारत में बङ्गला साहित्य का सर्व प्रथम स्थान है। इसके बाद गुजराती, मराठी और हिन्दी का नम्बर आता है। बङ्गला में श्री माईकेल, मधुसूदनदत्त, श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, श्रीद्विजेन्द्रलाल राय, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर और श्री शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय क नाम आजकल क बडे लेखको मे गिने जात हैं हिन्दी में भी साहित्य की उन्नति बडी तजी से को जा रही है कविता मे कहानियों मे, नाटकों मे और उपन्यासों मे साहित्य के दूसरे अगो में भी हिन्दी तेजी से अपना स्थान रही है यदि ऐसी ही उन्नति रही तो कोई आश्चर्य नहीं कि हि साहित्य एक दिन भारत में सवप्रथम स्थान ग्रहण कर लेगा।

प्रश्न २७—पञ्जाब की भौगोलिक परिस्थिति पर लिखो और यह बताओ कि पञ्जाब प्रांत का अरिक क्यों है ?

उत्तर-पञ्जाब के उत्तर तथा उत्तर-पूर्व की ओर हिमालय है। उत्तर-पश्चिम तथा पश्चिम हिमालय और सुलेमान पर्वत हैं। दक्षिण में अरावली पर्वत तथा राजपूताना का रेगिस्तान है।

इस वक्त पञ्जाब चारों तरफ से सुरक्षित है। इसको हिन्दुस्तान का सैनिक द्वार कहते हैं। पुराने जमाने में जितनी भी जातियाँ यहाँ आक्रमण करने आईं, उन्होंने खैबर के दर्रे से और सिन्ध नदी पार कर पञ्जाब में प्रवेश किया। पञ्जाब के दक्षिण-पूर्व में पानीपत का मैदान है जिसने भारत के भाग्य का निर्णय कई समय किया है। इसलिए सैनिक दृष्टि से पञ्जाब का बड़ा महत्त्व है।

सैनिक दृष्टि से पञ्जाब का महत्व इसलिये भी है कि यहाँ का जल वायु स्वास्थ्य के लिए विशेषरूप से लाभदायक है। यहाँ के लोग लड़ाई झगड़ों से नहीं घबराते। भारत की सेना में पञ्जाबियों की प्रधानता है।

प्रश्न ९८—पञ्जाब में कितनी नदियाँ हैं? उनसे प्रांत को क्या लाभ है?

उत्तर—पञ्जाब में पाँच नदियाँ हैं—जेहलम, चनाब, रावी, व्यास और सतलुज। सिन्ध और यमुना पञ्जाब की सरहद पर बहती हैं। इसी लिए पञ्जाब प्रांत में सात नदियों के पानी से सिंचाई होती है।

यों कहा जाय कि ये नदियां पञ्जाब की देन हैं तो अत्युक्ति न होगी। नदियां न होतीं तो पञ्जाब वीरान रह जाता। पिछले सालों में बड़ी बड़ी नहरें बनाई गई हैं और उनके द्वारा मैदानी

में पानी पहुँचाया जाता है जिन से यहाँ की न्त्री ने काफी उन्नति प्राप्त कर ली है। पञ्जाब में नहरों का जाल बड़ी तेजी से बिछाया जा रहा है, यहाँ तक कि १९३० में १ करोड़ २१ लाख ३६ हजार ज़मीन नहरों के जल से सींची जाती थी। अब इसकी संख्या में और भी वृद्धि हो गई है।

प्रश्न २६—पञ्जाब को मुख्यतः भागों में बाँटा गया है ? पञ्जाब के किसानों पर एक नोट लिखो।

उत्तर—पञ्जाब को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा जा सकता है—(१) मुलतान और रावलपिण्डी की कमिश्नरियाँ—यहाँ अधिकतर मुसलमान जाटों की बस्तियाँ हैं ये खेती-बाड़ी का काम करते हैं। आर्थिक दृष्टि से ये लोग गिरे हुए हैं। (२) लाहौर और जालन्धर की कमिश्नरियाँ—यहाँ मुसलमान और सिक्खों की संख्या करीब करीब बराबर है। यहाँ के किसान, मुलतान और रावलपिण्डी के किसानों से अधिक सम्पन्न हैं। (३) अम्बाला कमिश्नरी—इस प्रदेश में हिन्दू जाटों की प्रधानता है। यहाँ के किसान पञ्जाब के सब किसानों से अच्छी हालत में हैं।

पञ्जाब के किसानों की दशा भारत के अन्य प्रान्तों के किसानों से अच्छी है। इसके तीन कारण हैं—(१) यहाँ छोटे ज़िमींदारों की संख्या अधिक है। वे अपनी भूमि के स्वयं मालिक हैं। (२) पञ्जाब की भूमि अच्छी उपजाऊ है और ज़िमींदारों को फसल की आय का भाग अन्य प्रान्तों की अपेक्षा कम देना पड़ता है। (३) यहाँ का जलवायु स्वास्थ्य के लिए अच्छा है जो किसानों को अधिक मेहनती बना देता है।

पजाब प्रान्त की आर्थिक दशा अच्छी होने के कारण यहा मध्यवर्ग के लोगो की सख्या अन्य प्रान्तो से अधिक है।

प्रश्न ३० पञ्जाब में शहरों की आबादी क्यों बढ रही है? गाँवों पर इसका क्या प्रभाव पडा है?

उत्तर—पञ्जाब में ५ शहर ऐसे हैं जिनकी आबादी बढती ही जाती हैं। इसका कारण यह है कि गाव से जो लोग शहरों मे शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं वे यहीं शहरों में बस जाना अधिक पसन्द करत हैं। भला गावों में वकालत और डाक्टरी चल भी कैसे सकती है। परन्तु ऐसे विद्यार्थी जिनके घर काफी जमीन है, वे भी २०-२५ रुपये की नोकरी कर शहर में रहना अधिक ठीक समझते हैं। इसलिए शहरो की सख्या अधिक बढती जा रही है। इसका परिणाम यह हुआ कि गावो मे पढे लिखो की सख्या दिनोंदिन घटती जा रही है और यह वृत्ति गावों की उन्नति में बाधा डाल रही है। इसलिए सरकार अब गावों में वाचनालय आदि खोल रही है जिससे गावों की उन्नति में बाधा न पडे। फिर भारत के नये शासन-विधान के अनुसार गावों मे वोटरों की सख्या बहुत बढा दी गई है जिनसे उम्मीदवारों को कामयाब होने के लिए गावों के लोगो से अपना सम्पर्क बनाये रखना आवश्यक हो गया है।

छठा पत्र

प्रश्न—निबन्ध कितने प्रकार का होता है—प्रत्येक प्रकार के कुछ निबन्ध लिखो।

उत्तर—निबन्ध तीन प्रकार के होते हैं—

१ वर्णनात्मक २ विवरणात्मक ३ विचारात्मक।

नीचे तीनों प्रकार निबन्ध दिये जाते हैं।

१ वर्णनात्मक—

हवाई जहाज

आदमी अपने को सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी कहता है। प्रकृति की सारी सम्पत्ति पर वह अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है। बड़े-बड़े राज्य बसा कर, हल चला कर अनेक तरह की सवारियां बनाकर, उसने ज़मीन पर अधिकार किया। बड़े-बड़े जहाज़ बनाकर बांध लगा कर नदियों की धाराओं को अपनी इच्छा के अनुकूल बहा कर उसने जल पर कब्ज़ा जमाया। हवाई जहाज़ के द्वारा उसने आकाश पर भी विजय प्राप्त कर ली है।

हवाई जहाज़ का मतलब हवा में उड़ने और चलने वाला जहाज़ है। आम तौर पर इसकी शक्ल चील जैसी होती है। हवाई जहाज़ में सबसे आगे हवा को काट कर आगे बढ़ने के लिये पङ्खा लगा रहता है। उसके पीछे ऊपर नीचे दो लम्बे-लम्बे पंखे लगे रहते हैं। पङ्खों के पीछे आदमियों के बैठने का स्थान होता है। सबसे पीछे पानी के जहाज़ जैसी एक छोटी सी पतवार-सी लगी रहती है। दूर से देखने पर यह जहाज़ की दुम मालूम होती है। हवाई जहाज हलकी लेकिन मजबूत लकड़ी या एलम्यूनिम जैसी हलकी धातु के बनते हैं। इनमें हवा से भी हलकी गैस भरी जाती है जिससे यह हवा में आसानी के साथ उड़ सकें। इसकी चाल को ठीक रखने के लिये एक मोटर लगी रहती है। आकार और काम के विचार से हवाई जहाज़ों के कई भेद हैं। कुछ केवल सवारी के काम आते हैं, कुछ डाक ले जाते हैं, कुछ

युद्ध के लिए बनते हैं कुछ में दो ही आदमी बैठ सकते हैं, कुछ में अधिक। कुछ मे दो बड़े-बड़े पखे लगे होते हैं कुछ में एक और कुछ में एक भी नहीं होता, इसी तरह एरोप्लेन, जेप्लेन आदि इनके कई और नाम भी हैं।

हमारी पुरानी पुस्तकों में ऐसे बहुत से वर्णन मिलते हैं जिन से मालूम होता है कि उन दिनों मे भी लोग हवा मे चलते थे—उन दिनो में भी वायुयान या विमान थे। महाभारत काल तक ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं। तन्त्र ग्रन्थों में विमानों के बनाने की विधि भी बताई गई थी। लेकिन महाभारत के बाद लोगों में एक तरह का वैराग्य पैदा हुआ—और ऐसी चीजों का बनना बन्द हो गया। लोगो ने तन्त्र ग्रन्थो का पढ़ना भी छोड़ दिया। बाद में हम गुलाम हुए, हमारी पुस्तकों से हम्माम गरम किये गए—हमारे साथ दुनिया भी उन तमाम चीज़ो से वञ्चित हो गई। फिर भी ऐसे कुछ वर्णन रह गए जो यह कहते थे कि लोग हवा में भी उड़ते थे। इन वर्णनों ने लोगों के मन में फिर हवा मे उड़ाने की इच्छा पैदा की। कहते हैं कि जर्मन वैज्ञानिकों ने भारतीय ग्रन्थों के आधार पर ही इस दिशा मे प्रयत्न शुरु किए। आधुनिक काल में सबसे पहले हवा के उड़ने वाले गुब्बारे बने, उसमें हवा से भी हलकी हाइड्रोजन गैस भरी गई। एक-आध आदमी इन गुब्बारों में बैठ कर उड़े लेकिन इनकी चाल पर आदमी का कोई अधिकार न था—हवा जिधर चाहती थी इन्हें ले जाती थी। वह गुब्बारों को समुद्र मे डुबा सकती थी और पहाड़ की चोटी से टकरा कर चूर चूर भी कर सकती थी।

कुछ दिन बाद बड़े गुब्बारे बने, उनकी चाल भी अधिकार में करने की कोशिश हुई। फिर कुछ बड़े हवाई जहाज बने उन्हीं दिनों पैट्रोल के इञ्जनो का आविष्कार हुआ और हवाई जहाज सम्पूर्ण होगया। सन् १६०३ में एक व्यक्ति पहली बार पैट्रोल का इञ्जन लगा कर हवा में उड़ा। धीरे धीरे ऐसे हवाई जहाज बने जिनमें बीसियों आदमी बैठ सकते थे और सैकड़ों मन का बोझ रखा जा सकता था। अब तो युद्ध और यात्रा में काम आने वाले विशाल हवाई जहाज भी बनते हैं, उनमे होटल और सिनेमा घर भी हैं। ऐसे जहाज़ भी बने हैं जो हवा में उड सकते हैं और पानी में भी चल सकते हैं।

पहिले लोगो का ख्याल था कि हवा मे उडने वाली चीज हवा से हलकी होनी चाहिये। बाद में यह बात बकार जँची। पक्षी हवा से हलके नहीं होते फिर भी वे उडते हें। वे अपने परों को फटफटा कर हवा में वेग उत्पन्न करते हैं और यह वेग उन्हें हवा में सभाले रहता है। हवा में वेग उत्पन्न करने के लिये ही हवाई जहाज़ में पङ्खे लगाये गये। एक बात यह भी देखी गई जिस चीज का मुँह जमीन से आकाश की तरफ उठा रहता है उसे यदि पीछे से धक्का दिया जाय तो वह ऊपर की ओर ही उठेगी। चिडिया भी जब उडने लगती है तब अपना मुँह ऊपर कर लेती है। इसी लिए हवाई जहाज का मुँह भी ऊपर की ओर उठा रखा गया और पीछे से ज़ोर देने के लिए इजन लगाया गया। इस मोटर के जोर से हवाई जहाज पहले जमीन पर दौडने लगा फिर हवा में उड गया, पङ्खों ने हवा में वेग उत्पन्न किया और वह वहीं सम्भल गया। यही हवाई जहाज के उड़ने का सिद्धान्त

हैं। अब तो इतनी उन्नति हो गई हैं कि हवाई जहाज आकाश में कलाबाजियां भी खाते हैं।

हवाई जहाज के आविष्कार से हमें अनेक लाभ हुए हैं। रेल जहाँ घण्टे में ५० मील सफर तय करती है वहाँ हवाई जहाज तीन-चार सौ मील चला जाता है। इसके लिए पटरी बिछाने की भी जरूरत नहीं पड़ती विलायत से एक हफ्ते में डाक आ जाती है। छोटे-मोटे पार्सल भी पहुँच जाते हैं। अमेरिका से आस्ट्रेलिया तक की यात्रा सुगम हो गई है। स्थल के नदी नालों का कोई भय नहीं रह गया—उन पर पुल बनाने की आवश्यकता भी नहीं रही। बद्रीनारायण की दुगम यात्रा हवाई जहाज से हो जाती है। व्यापार और विज्ञान की उन्नति में हवाई जहाज बहुत सहायक सिद्ध हो रहे हैं जिन स्थानों पर मनुष्य नहीं पहुँच .। वहाँ हवाई जहाज पहुचेंगे। आकाश के ग्रहों और नक्षत्र भेद बतायेंगे।

युद्ध स्थल में भी हवाई जहाज का पउयोग होने लगा है किलों और खाइयों की कोई कीमत नहीं रह गई। युद्ध सीमित नहीं रह सकता। बड़े-बड़े शहर हवाई जहाजों से म बरसा कर नष्ट किये जाते हैं। आज कल लड़ाई मे इनका ..। घातक उपयोग हुआ भी हैं।

बड़े-बड़े राष्ट्र हवाई शक्ति बढाने की धुन में लगे हैं वर्तमान युद्ध में हवाई युद्ध ही अधिक है और उसमें किसी का भी सलामत नहीं हैं। यह विज्ञान का व्यभिचार और मानव बुद्धि का शोचनीय पतन है।

हवाई जहाज पहले भी थे—हमारी पुरानी पुस्तकों में इन का उल्लेख मिलता है। लेकिन अब इन का आविष्कार २०वीं सदी में हुआ है। इन से आवागमन, यात्रा, डाक, व्यापार और विज्ञान की उन्नति में सुविधा हो गई है साथ ही साथ युद्ध में इन के उप-योग ने संसार के नाश का सामान भी उपस्थित कर दिया है। हवाई जहाज का आविष्कार कर मनुष्य ने जहाँ सुख बढ़ा लिये हैं वहाँ दुःख भी दूने कर डाले हैं।

२ विवरणात्मक—

महात्मा गांधी

वर्तमान भारत के राष्ट्रीय आंदोलन की आत्मा महात्मा गांधी, बीसवीं सदी के महापुरुषों में सर्वश्रेष्ठ हैं। उन के ढाई हड्डी मुट्ठी भर ढांचे में ऐसी विलक्षण शक्ति है, ऐसी बलवती आत्मा कि बड़े २ सत्ताधारी उनके सामने झुक जाते हैं। ४० करोड़ भारतीय जनता के तो वे प्रतिनिधि हैं। हमारा सौभाग्य है कि इस महापुरुष को निकट से देखने का अवसर पाया है।

आज के महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी का जन्म २ अक्टूबर १८६९ में काठियावाड़ की राजधानी पोरबन्दर में हुआ। मोहनदास के पिता कर्मचन्द गांधी पोरबन्दर रियासत के दीवान थे। वे बड़े निडर, सच्चे और साहसी थे। गांधी जी की माता ममता और दया की मूर्ति थीं। गरीबों का दुख देख कर आँखों में आँसू आ जाते थे। पूजा-पाठ व्रतादि में उनका बड़ा विश्वास था, गाँधी जी का बचपन इन दोनों की गोद में बीता, वे पिता की भांति निर्भय और माता की भांति धार्मिक और दयालु हुए।

पुरानी परिपाटी के अनुसार ५ वर्ष की अवस्था में गुजराती पाठशाला मे गाधी जी पढने गये, १० वर्ष की अवस्था में अंग्रेजी स्कूल में दाखिल हुए और १७ वर्ष की अवस्था में मैट्रिक पास की इसी बीच में आपका विवाह सौभाग्यवती कस्तूरबा से हो गया। स्कूल के वातावरण मे गाधी जी कुछ बिगड गये, लेकिन माता के प्रभाव से बुरी सगत से निकल आये। उन्हीं दिनों कर्मचन्द गाधी का देहात हो गया। सन १८८८ मे माता के निकट यह प्रतिज्ञा कर कि मैं मास मदिरा और परनारी से सदा बचूँगा गाधी जी बेरिस्टरी पास करने लण्डन गये। लण्डन में कुछ दिन तो आप अप-टू-डेट बन कर रहे फिर आपके विचार पलटे और बिलकुल सादे ढङ्ग से रहने लगे। उन्हीं दिनों आपने गीता का अध्ययन किया। आपने स्वय लिखा है कि गीता अध्ययन से वह ज्योति मिली जिसकी मुझे आवश्यकता थी। १८९१ मे गाधी जी बैरिस्टर बन कर भारत लौट और बम्बई में वकालत करने लगे, भारत लौटने के पहले गाधी जी की धर्मपरायणा माता का स्वर्गवास हो गया था। गाधी का ? वर्ष का जीवन शिक्षा प्राप्त करने और आजीविका पैदा करने ही बीता। इसके बाद जीवन का वह अध्याय आरम्भ हुआ जिसने आप को राजनीतिज्ञ, महात्मा के रूप में दीनों और दुखियों के हिमायती के रूप में ससार के सामने उपस्थित किया। एक मुकदमे की पैरवी के सम्बन्ध में महात्मा जी १८९३ में दक्षिण अफ्रीका गये। भारत से कई लाख आदमी कुली बनाकर, शर्तें में बाध कर दक्षिण अफ्रीका भेजे गये थे। उन्होंने अपने रक्त से सींच कर वहाँ जमीन उर्वरा बनाई थी। उस उर्वरा भूमि की पैदावार से विलायती गोरे धन्ना सेठ बन गये थे और गरीब

तथा निरीह भारतीयो पर जघन्य अत्याचार करते थे। डेढ़ लाख भारतीय मुट्ठी भर गोरो के पाशविक अत्याचारों से पीड़ित होकर अपमान की आग में जल रहे थे। इन्हीं दिनो गाधी जी दक्षिण अफ्रीका पहुँचे और पहुंचने के कुछ दिन बाद ही गोरो के बर्बर अत्याचारो का व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त किया। एक बार आप फर्स्ट क्लास का टिकट लेकर रेल में सफर कर रहे थे कि एक गोरे ने डब्बा छोड़ देने की आज्ञा दी। आप न माने तो गार्ड ने पुलिस द्वारा बाहर निकलवा दिया और सामान प्लेटफार्म पर फेंकवा दिया। एक बार रेल में ही गोरे गार्ड ने आप को घूँसो से पीटा। गोरो के प्रेजीडेण्ट के बङ्गले के सामने से जाते हुए एक सिपाही ने आपको लात मार कर वहाँ से हटाया, इन घटनाओं ने गाँधी जी की सुप्तात्मा को जगा दिया। इन्हीं दिनों में दक्षिण अफ्रीका के भारत वासियो को सब तरह हीन करने के लिये उनके अधिकार छीनने के लिये नये कानून बनाने की तैयारी होने लगी। भारतीयों ने गाधी जी को अपना नेता बनाया और आप सब कुछ छोड कर मुकाबले मे डट गये। गाधी जी ने अफ्रीका भारत और इङ्गलैंड में बड़े जोर का आंदोलन किया। तीन बार सत्याग्रह किया, तीन बार जेल गये। गोरों के अमानुषी अत्याचारो के सामने भारतीयो को सिर उठा कर चलना सिखाया। पीड़ित जनता ने गाधी जी की प्रेरणा मे सत्याग्रह का अस्त्र सभाला अन्त में विजयिनी हुई। मार्च सन् १९१४ में ब्रिटिश पार्लियामैंट में भारतीयो के ऊपर से सारे जुल्मी कानून ... सिफारिश की। यह गाधी जी और उनके नि शस्त्र पहली विजय थी। गोरों ने गाधी जी और उनके

पर इतने अत्याचार किये थे कि उनका वर्णन एक पूरी पोथी में भी नहीं हो सकता, लेकिन गाधी जी के दिल में गोरो के प्रति किसी तरह का विरोध नहीं हुआ बोअर युद्ध मे उन्होने गोरों की सहायता की और प्लेग से उनके प्राण बचाए।

दक्षिण अफ्रीका का काम समाप्त कर गाधी जी भारत आये और सन् १९१५ में अहमदाबाद के पास साबरमती नदी के रम्य एव शात तट पर आश्रम बना कर रहने लगे। आश्रम निवासी सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और स्वदेशी का व्रत लेते थे परिश्रम करते और सादा जीवन बिताते थे। १९१७ में चम्पारन (विहार) के नील की खती करने वाले किसानो की जाँच के लिये गये और उन्हें गोरों के अत्याचारो से बचाया। १९१८ में अहमदाबाद के मिलो मे हडताल हुई। मालिकों ने मजदूरी घटा दी थी। गाधी जी ने पहली वार अनशन व्रत किया और कहा—जब तक मजदूरी पूरी न दी जायगी मैं भोजन न करूँगा। मालिकों को झुकना पडा। १९१८ मे ही खेडा के किसानों को लगान न देने की सलाह दे कर आप ने लगानबन्दी के अस्त्र को आजमाया और सफल हुए १९१८ में ही आप हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति बने और मदरास मे हिन्दी प्रचार की नींव डाली।

इन दिनों भारत की राजनीतिक अवस्था बहुत विचित्र थी योरुप का महायुद्ध समाप्त हो चुका था। युद्ध मे अंग्रेजों ने बडे बडे वायदे करके भारतीयो से सहायता ली थी। लेकिन जब युद्ध समाप्त हो गया तब व वायदे भी भुला दिये गये २० अगस्त सन् १९१८ को भारत को धीरे २ स्वराज्य देने

घोषणा की गई। माटेग्यू-चेम्सफोर्ड-सुधार योजना के अनुसार पहली किश्त के रूप में कौंसिलें बनीं। भारत में इनका विरोध किया। उधर रौलट कमेटी ने दमनात्मक क़ानून बनाकर स्वराज्य आंदोलन की जड़ खोद डालने की सलाह दी। इधर लोकमान्य तिलक की मृत्यु हो गई। फलत गाधी जी सामने आये। रौलट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह घोषित कर दिया गया। देश भर में आदोलन उठा, पञ्जाब में जलिया वाला बाग बना लेकिन सरकार न झुकी। खिलाफत के कारण मुसलमानों में भी असतोष हुआ। फलत वे भी आदोलन के साथ थे। गाधी जी ने सत्याग्रह स्थगित कर १६२० में सरकार से असहयोग करने की सलाह दी। तमाम सरकारी सम्पर्कों का बहिष्कार, स्वदशी माल का बहिष्कार और स्वदेशी का प्रचार असहयोग का आधार बनाए। गाधी जो इस आदोलन के नेता हुए। १६२२ में गाधी जी गिरफ़्तार हुए और ६ साल के लिए जेल मे डाल दिए गए, दो साल बाद जब बाहर आये तब तक हालत बदल गई थी, कुछ लोग कौंसिलों में चने गये थे, कुछ मजदूरो में काम कर रहे थे। हिंदू-मुस्लिम एकता भी शिथिल हो चली थी। गाधी जी ने एकता के लिये डाक्टर अन्सारी के मकान पर २१ दिन का उपवास किया और फिर कौंसिल जाने वालो का समर्थन करने लगे।

इस परिस्थिति में देश में युवकों का प्रभाव बढ़ने लगा, गाँधी जी का असर कुछ कम हो गया। लेकिन १६३० में एक सत्याग्रह का कार्यक्रम रखकर आपने बागडोर फिर अपने हाथ में ले ली। १६३० के मार्च में ही आपने

की। देश भर मे नमक सत्याग्रह चल पड़ा। लोग नमक बनाते और जेल जाने लगे। गांधी जी गिरफ्तार कर लिए गए। १९३१ मे जेल से बाहर आये। वायसराय से समझौता हुआ और राउण्ड टेबल कान्फ्रेन्स में भाग लेने लण्डन गए। वहां आप भारत की मांग उपस्थित की। जब भारत लौटे तो समझौता टूट चुका था। दमनचक्र चल रहा था। आप भी जेल गये। सन ३८ मे आप जल से बाहर आये – सत्याग्रह स्थगित कर दिया और हरिजनोद्धार के काम में लग गये। बाद में राजनीति से भी पृथक् हो गये। तब से अब तक इसी स्थिति मे हैं। लेकिन आप भी भारतीय राजनीति की धुरी यही हैं। उनके परामर्श से ही कांग्रेस चलती है।

महात्मा गाधी का जीवन तप, तपस्या, त्याग और सत्य की मूर्ति है। भारत की पीड़ित जनता को सघनद्ध होकर अपने अधिकारों के लिए शांतिपूर्ण ढङ्ग से लड़ना उन्होंने ही बताया है। राजनीति मे अहिंसा और असहयोग का प्रयोग उनकी दे - । भारतीय राष्ट्र उनका चिरऋणी है। लाहौर की एक सभा ख्यातनामा सनातनी नेता गोस्वामी गणेश दत्त जी ने ठीक कहा था कि महात्मा गाधी ईश्वर के अशावतार हैं।

---

३ विचारात्मक—

राष्ट्रभाषा की आवश्यकता

भेष, भाषा और भावों के साम्य के विना कोई राष्ट्र रा नहीं कहला सकता। इसीलिए हरेक राष्ट्र अपनी भाषा को समुन्नत बनाने का भरसक प्रयत्न करता है। राजकाज और जनसाधारण

के नित्य के जीवन-सम्बन्धी कारोबार के भुगतान करने के लिए -एक भाषा की आवश्यकता अनुभव होती है और इस आवश्यकता को देश के हरेक विद्वान ने पूरा किया है । भाषा के अभाव में साहित्य की सृष्टि नहीं होती और साहित्य के बिना विचार और भाव नहीं उठते, ऐसी दशा में दैनिक जीवन में कोई उन्नति नहीं हो सकती। यही कारण है कि विजेता विजितो की भाषा को नष्ट करने की चेष्टा किया करते हैं। एक भाषा के ही नष्ट हो जाने में—साहित्य, विचार, भाव और दैनिक जीवन की उन्नति सब नष्ट हो जाती है भारत की वर्तमान हीनता का प्रधान कारण यही है। ८वीं सदी तक संस्कृत ही भारत की राष्ट्रीय भाषा थी। यवनों के आक्रमण बढ़ने से और विदेशियों का हेल-मेल अधिक हो जाने से यहाँ एक और भाषा की सृष्टि हुई। पर वह एक छात्र राज्य'के अभाव में राष्ट्रीय भाषा न बन सकी। विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न भाषाओं की उन्नति हुई, उन भाषाओं में साहित्य भी रचा गया। उसके प्रचार से विचारो और भावों की उन्नति भी हुई पर अभी तक विचारो और भावो की उत्पत्ति और उनके दृढीकरण का केन्द्रीय-स्थल संस्कृत भाषा और उसमें लिखा हुआ साहित्य ही है। किन्तु उसके लोक-भाषा, न रहने के कारण, लोकभाषा की आवश्यकता अखरने लगी। एक पञ्जाबी के लिये बङ्गाल बिहार, मदरास अथवा बम्बई प्रांतीय जन से व्यवहार करना असम्भव हो गया। यवनों और हिंदुओं की भाषा के मेल-जोल से जिस भाषा ने जन्म लिया वह विक्रमी १४ वीं सदी तक बहुत कुछ परिमार्जित हो• साहित्य की रचना हुई। वीर, शृंगार और भक्तिरस

अच्छे काव्य लिखे गये। कई मुसलमानों ने भी इस भाषा में काव्य-रचना की। खानखाना रहीम, रसखान ताज और मीर गुसरो के नाम वर्णनीय हैं। विक्रम की १८ वीं सदी के अन्त तक इस भाषा में उत्तमोत्तम काव्य—रचना हुई सही, पर उसके प्रचार का क्षेत्र सीमित रहा—वह लोक भाषा का रूप ग्रहण न कर सकी। उन्हीं दिनो भारत में विदेशियो का एक और समूह आया। धीरे-धीरे उन्होंने राजसत्ता प्राप्त कर ली। होते होते उनकी राज सत्ता सार्वभौमिक सत्ता बन गई उन्होंने अपनी सुविधा के लिये देश के एक छोर से दूसरे छोर तक अपनी भाषा का प्रचार किया इससे भारतीयो को एक ऐसी भाषा प्राप्त हो गई कि जिसके द्वारा वे निर्विघ्न विचार विनिमय करने में समर्थ हो गये। इस भाषा के प्रचार से एक पञ्जाबी, बगाली, आसामी, मदरासी, मैसूरी, कर्णाटकी से बिना झिझक और बिना अडचन बात करने लगा। इस तरह लोकभाषा की कमी आंशिक रूप से दूर हो गई। पर उस भाषा को सीखना बडा मँहगा सिद्ध हुआ। गरीब भारतीयो के पास इतने पैसे नहीं थे फिर सीखने के सुविधाएँ भी अधिक न थीं। इसके प्रचार के केन्द्र शहरों तक ही सीमित रहे इस लिए यह भाषा भी लोक-भाषा न बन सकी। यह विदेशी थी, इसे सीखना भी आसान नहीं था—फिर आर्थिक कठिनाइयाँ।

इन बातों को देख कर राष्ट्रभाषा की आवश्यकता फिर हुई। बहुत सोच विचार के बाद उसी पुरानी भाषा को व्यापक रूप देने का फैसला किया गया। एतदर्थ अ०भा० हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई। १६१६ में महात्मा गांधी उसके एक

वार्षिक अधिवेशन के प्रधान चुने गये उन्होंने हिंदी को राष्ट्रीय भाषा बना लेन के लिये विशेष प्रयत्न किये । मद्रास मे उसका प्रचार के लिये विशेष प्रबन्ध किये गये । अब भारत की राष्ट्रीय सभा राष्ट्र भाषा के प्रचार पर ध्यान ही नहीं दे रही, न ही उसने प्रचारार्थ भरसक प्रयत्न ही कर रही है । अब तो भारत के किसी कोने मे चले जाइये आप को हिंदी बोलने और समझने वाले अवश्य ही मिल जायेंगे । इस तरह जब यह अभाव मिट जायगा तभी राष्ट्रीयता का बीज फले-फूलेगा – विचारों और भावों का साम्य भी तभी आयेगा ।

प्र०—दहेज प्रथा पर निबन्ध लिखो ।

दहेज प्रथा

भारत के सामाजिक जीवन को जो कुछ बातें नरक बना रही हैं, दहेज-प्रथा उन्हीं मे से प्रमुख है । विवाह के समय लड़की की ओर से लडके को कुछ अदा करना ही दहेज है ।

इस प्रथा का कोई क्रमिक इतिहास नहीं बताया जा सकता । अनुमान और अनुभव ही काम दे सकते हैं । धर्मशास्त्र मे विवाह के समय वर कन्या के साथ कुछ सम्पत्ति देने का भी विधान है । ईसाई और मुस्लिम समाज मे भी ऐसी प्रथा है । एक तरह से यह अच्छी बात है । विवाह के बाद दो नये प्राणी एक साथ मिल कर संसार-यात्रा करते हैं । इसलिए दोनों के अभिभावक अपने आध्यात्मिक आशीर्वाद के साथ कुछ लौकिक साधन भी दे देते हैं ताकि उन्हें तकलीफ न हो । कन्या के साथ साथ धर्म शास्त्रों में सम्पत्ति देने का विधान ... परिया ... यह मनोभावना बहुत ...

रूप में न रह पाई। जातियो और उपजातियों और प्रान्तो के अनुसार इसमे कई परिवर्तन आ गये। किसी उपजाति में लडकियो की सख्या अधिक हो गई, किसी मे लडको की, किसी प्रान्त में लडके बढे, किसी में लडकियाँ। परिणाम यह हुआ कि जिस जाति या प्रांत मे लडकियो की सख्या अधिक हुई उससे विवाह के समय अधिक धन लडके को देने की प्रथा चल पडी। यह इस लिये की लडकी छाती का पीपल न बन कर अपने घर चली जाय, अपने सिर की बला टालने और लडकी को सुखी रखने के लिये लोगो न वर पक्ष को अधिक से अधिक लोभ देकर अपने कब्जे में करने की चेष्टा की। यही हाल जहाँ लडकियो की सख्या कम थी वहाँ लडके वालो का हुआ। यही बात आज बढते-बढते इस रूप म आ गई है, जो हमारे सामने है। आज दोनों बातें पाई जाती हैं लेकिन लडकी वालों की ओर से धन देने का सवाल अधिक देख पडता है, लडके वाले कहीं कहीं ही धन देते हैं।

दहेज-प्रथा के इस रूप ने विवाह का आत्मिक और शारीरिक सम्बन्ध न रख कर एक सौदा बना दिया है। जिनके ... मे अच्छा लडका है वे उसके लिये अच्छी लडकी नहीं अच्छी रकम देखते हैं। जिनके घर में लडका अच्छा नहीं है लेकिन उनका कुल अच्छा है या घर पर चतुर वाहिनी लक्ष्मी की कृपा है, उनकी नज़र भी मोट आसामी ढूँढती है। परिणाम स्वरूप अच्छे जोडे नहीं मिलते। बहुत सी लड़किया कुँआरी रह जाती हैं बहुत सी बूढों और अयोग्यों के गले मढी जाती हैं, इससे अधिक करुणा-जनक बात यह होती है कि बहुत सी आत्महत्या करके अपना दुःखद जीवन ही समाप्त कर लेती हैं। भारत के

प्राय सभी प्रांतो से इस तरह के समाचार मिलते हैं। बंगाल, संयुक्त प्रांत में दहेज प्रथा का नाशकारी ताण्डव अधिक दीख पड़ता है। अब तो पञ्जाब में भी यह अपना प्रभाव दिखाने लगी है। इसी दहेज के कारण जब अच्छे जोड़े नहीं मिलते, तब उनकी संतति भी भली नहीं होती, विधवाओं की संख्या बढ़ती है—सब तरह के दुराचार फैलते हैं। जो दहेज की बलिवेदी पर अपना बलिदान दे गई हैं—उनकी पूरी संख्या एकत्रित की जाय तो एक मोटा पोथा तय्यार हो जाय और उसे पढ़कर पत्थर से कलेजे वाला आदमी भी आँसू बहाये बिना न रह सके।

केवल स्त्रियाँ ही इस प्रथा के परिणाम स्वरूप परेशान नहीं होतीं पुरुषों को भी योग्य पत्नियाँ नहीं मिलतीं। वे भी इसी तरह परेशान होते हैं। हाँ, उन्हें मरते नहीं सुना गया। संयुक्त प्रांत के कानकुब्ज समाज में तो इस प्रथा ने ऐसा सत्यानाश किया है कि न पूछिये। एक तरफ बहुत से युवक अविवाहित बैठे हैं, दूसरी तरफ बहुत सी युवतियाँ और बहुत से बूढ़े चार-चार ब्याह कर रहे हैं बंगाल में भी ऐसे दृश्य दीख पड़ते हैं।

संयुक्त प्रांत के एक गाँव में एक ब्राह्मण के पाँच लड़कियाँ हैं, पाँचो जवान हैं एक की शादी उसने ५० साल के बूढ़े से कर दी है—चार अभी बैठी हैं। बेचारे ब्राह्मण के पास इतना पैसा नहीं है कि वह उनके शिक्षित युवक वर खरीद सके। उसी गाँव में एक सज्जन की दो २४-२५ वर्ष की लड़कियाँ अविवाहित हैं—वे शिक्षित भी हैं कुलीन भी। लेकिन पैसे के बिना कोई भी नहीं पूछता।

आज यह सिद्ध हो चुका है कि दहेज-प्रथा के कारण अनेक युवतियां जिनके खेलने खाने के दिन होते हैं, जो समाज की मिट्टी पर सोने के महल खड़ी कर सकती हैं, वीर माताएँ बनकर राष्ट्र का गौरव बढ़ा सकती हैं वे असमय में ही आत्म-हत्या करने के लिये विवश होती हैं। अनेक अविवाहिता रह जाती अनेक बूढ़ों और कामियों के पल्ले पड़ती हैं। अनेक युवक य पत्नी के अभाव से निकम्मे बन जाते हैं। समाज में दुराचार लता है, विधवाओं की वृद्धि से और सधवाओं के क्रन्दन से, म्पत्य जीवन भी रौरव बन जाता है। योग्य संतति के अभाव राष्ट्र का निर्माण नहीं हो पाता। हैरानी की बात यह है कि छ लोग उस प्रथा का समर्थन इस लिये करते हैं कि यह एक र्मिक विधान है। वे यह सोचने की तकलीफ नहीं उठाते कि नव समाज को धारण करने वाली शक्ति का नाम धर्म है। सदा कल्याणकर है—ऐसी कोई व्यवस्था धर्म की व्यवस्था हो सकती जिससे समाज, राष्ट्र—मानव जाति का कल्याण । है। इस प्रथा का धार्मिक रूप इतना ही है। जितना कि ऊपर बताया है, और इतने से किसी को आपत्ति । हो सकती।

यदि आज दहेज प्रथा न होती तो हमारा समाज भी उन्नत ता। दाम्पत्य जीवन की विषमता इतनी तेज न होती। बूढ़ों को र-चार विवाह करने की नौबत न आती। युवक और युवतियाँ विवाहित न रहतीं—न जाने क्या क्या होता? इस लिये आव-क है कि इस प्रथा में फौरन सुधार किया जाय। दहेज का सौदा रके जो जितना प्रसन्नता के साथ दे सके, उससे उतना ही ले ।

लिया जाय। यदि सुधार न हो सके तो उसे मिटा देने में भी किसी तरह की कमी न होनी चाहिए। जब तक यह प्रथा इसी रूप में रहेगी, तब तक हमारा कल्याण नहीं हो सकता।

गोसाईं तुलसीदास

सुरतिय, नरतिय नागतिय, यह चाहत सब कोय,
गोद लिए हुलसी फिरैं, तुलसी सम सुत होय।

अस्थिर धामिक विरक्त में कमी न ला जाती है, और जब विचार प्रवाह पलट जाता है तो यह क्या क्रान्ति उपस्थित कर सकता है। गोसाईं जी का जीवन-चरित्र इन बातों का ज्वलन्त उदाहरण है।

गोसाईं जी का जन्म विक्रमी सम्वत् १६८६ में बांदा जिला में (यू० पी०) के राजपुर नामक ग्राम में हुआ था। इन के पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। यह जाति से सरयूपारीण ब्राह्मण थे और बड़े ही धर्मिष्ठ और भगवद् भक्त थे। गोसाईं जी का जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मूल नक्षत्र में पैदा हुआ बालक त्याज्य समझा जाता है। धर्म भीरु आत्माराम ने भी अपने पुत्र को, मूल नक्षत्र में पैदा होने के कारण त्याग दिया और वह नवजात बालक को जंगल में रख आए। उन्हें क्या पता था कि यही बालक आगे चल कर अपनी अलौकिक प्रतिभा, अभूतपूर्व काव्य मार्मिकता और अगाध भगवद् भक्ति के कारण भारतवन्द्य होगा और साहित्यिक जगत् में सम्मान की दृष्टि से देखा जाएगा।

नरसिंहदास नामी एक महात्मा ने एकान्त स्थान में बालक को पड़ा देखा और विस्मयपूर्वक उठा कर घर ले

उस के लालन पालन की व्यवस्था की। जब बालक कुछ बड़ा हुआ तो उसे अक्षराभ्यास कराया गया। महत्मा नरसिंहदास भगवान राम के भक्त थे। वह बालक को भक्ति रस की कथाएँ सुनाया करते थे। इस तरह तुलसीदास को बचपन से ही राम की भक्ति सिखाई थी। पर यौवन की आंधी ने भक्ति की सरिता को ऐसा मुग्ध किया कि युवक तुलसीदास को स्त्री के बिना कहीं न कल पड़ता, तुलसीदास को रामभक्त देखकर दीनबन्धु पाठक ने उस से अपनी कन्या का विवाह कर दिया। तुलसीदास के लिए यह बात असह्य थी कि मेरी स्त्री मुझ से अलग रहे। श्वसुर गृह से कई बुलावे आये—पर उन्होंने स्त्री को पिता के घर न भेजा। एक दिन तुलसीदास जी सौदा खरीदने बाजार गए हुए थे—पीछे से उनका साला अपनी बहन को लिवाने आया। स्त्री यह समझ कर भाई के साथ फौरन ही चली गई कि यदि वह आ गये तो फिर जाना न मिलेगा। जब तुलसीदास जी घर लौटे तो स्त्री को गैरहाजिर देखा। पड़ोसियों से पता लगा कि पीहर चली गई है। तुलसीदास जी को भला यह बात कब सह्य थी वह पीछे ही पीछे पहुँचे। अभी वह बेचारी घर वालों में मिल भी न पाई थी कि तुलसीदास जी भी घर पहुंच गये। पत्नी पति को आया देखकर आगबबूला हो गई, और बोली आपको जितना मोह मेरी हाड़ माँस की नश्वर देह से है, यदि इतना प्रेम भगवान् राम में हो—तो कल्याण हो जाए। व्यंग्यबाण ने दिल को जर्जरित कर दिया। आसक्ति भक्ति में बदल गई। पत्नी ने क्रोध वश जो बात कही—वह उनके लिए प्रकाशस्तम्भ सिद्ध हुई। भर्तृहरि को भी स्त्री का

नपदेशपूर्ण व्यवहार देख कर ही वैराग्य हुआ था।

श्वसुर गृह से चलकर गोसाईं जी काशी पहुंचे और वहीं
रहने लगे। वह हर रोज शौच जाकर लोटे में बचा हुआ पानी
क बेरी की जड़ में डाला करते थे। एक दिन पानी बचाना
न रहा। एक वृक्ष के समीप जाकर याद आया। भूल कर
छताने लगे। इतने में वृक्ष पर से आवाज़ आई कि हम आपके
लदान से प्रसन्न हैं। वर माँगिए। गोसाईं जी ने कहा रामदर्शन
रा दो। उत्तर मिला–हम अधम योनि पिशाच आपको रामदर्शन
नहीं करा सकते। अमुक जगह हनुमान जी आया करते
। आप उनकी आराधना करें, रामदर्शन हो जाएगा उसी
न से हनुमान जी की आराधना करने लगे। कुछ दिन बाद
होंने प्रसन्न होकर रामदर्शन करा दिया। इसके बाद गोसाईं जी
योध्या जाकर रहने लगे।

गोसाईं जी भगवान् राम के अनन्य भक्त थे। उन्होंने
रामायण जैसा महाकाव्य उसी भक्ति भाव के वश होकर लिखा
। उन्होंने इस महाकाव्य में जितने पात्रों का चरित्र चित्रित
या है—वह मानव जीवन के लिए आदर्श है। वैसे तो
साईं जी ने अपने हाथ से २० पुस्तकें लिखी हैं, पर रामायण
की अमर रचना है। यह घर घर आदर पूर्वक पढ़ी जाती
आज हिन्दुओं का हिन्दुत्व इस महाग्रन्थ के कारण है।
साईं जी ने रामायण लिख कर हिन्दू जाति को अमर बना
है। जब तक हिन्दुओं के घरों में रामायण और रामनाम
चर्चा रहेगी—वह मिट नहीं सकती। कहते हैं कि एक बार
ईं जी काशी में रहते थे। वह स्नान करके लौट

एक स्त्री ने उन्हें प्रणाम किया। गोसाईं जी सौभाग्यवती हो, कह कर आगे चल दिए। इतने में उन्हें मालूम हुआ कि यह स्त्री तो आज ही विधवा हो गई है। वह उस समय फिर घाट पर गये स्नान करके भगवान् राम की स्तुति की, वह आदमी जी उठा। उन दिनो दिल्ली में अकबर राज करता था। खानखान रहीम से गोसाईं जी का सौहार्द था। शाह ने उनकी मार्फत गोसाईं जी को बुलाया और कहा आप जब तक रामदर्शन नहीं करा दें—अपने को इस क़िले में क़ैद समझिए। गोसाईं जी ने कातर होकर हनुमान् जी की स्तुति की। कुछ ही देर में किले की दीवारो पर और सारे शहर मे बन्दरों की किलकारियाँ सुनाई देने लगीं। बन्दर उत्पात करने लगे। अकबर और शहरी तङ्ग आगए। अकबर ने क्षमा मागी।

गोसाईं जी ने रामायण लिखने का काम सम्वत् १६३१ चैत्र सुदी ६ मगल को शुरू किया। कहते हैं भगवान राम ने स्वप्न मे उन्हें रामायण लिखने का आदेश दिया था। गोसाईं जी को शैव और वैष्णवों के झगडो से हार्दिक घृणा थी। इस लिए उन्होंने आरम्भ में ही शिव जी के गुण गाए और रामायण की कथा शिव जी के मुँह से कहला कर राम की प्रशंसा कराई उधर राम से रामेश्वर में शिव-पूजा कराकर शिव की बड़ाई की।

एक बार उनके पास एक निर्धन ब्राह्मण आया और पुत्री का विवाह करने के काम मे सहायता मागी। गोसाईं जी ने उसे निम्न पक्ति लिख कर खानखाना रहीम के पास भेज दिया —

सुरतिय, नरतिय, नागतिय यह चाहत सब कोय।

रहीम भी पहुँचा हुआ पंडित था। काव्यसिद्ध था। पंक्ति अर्थ समझ गया। ब्राह्मण को प्रचुर दान दिया और नीचे की पंक्ति लिख कर दोहा पूरा कर दिया

गोद लिए हुलसी फिरे, तुलसी सम सुत होय।

सहशिक्षा

बीसवीं सदी अन्यान्य क्षेत्रों की भांति शिक्षा के समान ...कई चीजें लेकर आई हैं। सहशिक्षा उनमें से एक है। ...यों और पुरुषों को लड़के और लड़कियों को एक ही ...न पर—एक ही पाठ्यक्रम से शिक्षा देने की व्यवस्था का ...ही सहशिक्षा है। भारत में सहशिक्षा पाश्चात्य सभ्यता ...हवा के साथ आई है। अब हमारे देश में यद्यपि कई ...लों पर सहशिक्षा की व्यवस्था हो चुकी है फिर भी इस ...न्ध में उठने वाला वाद-विवाद शांत नहीं हुआ। अब तक ... लोग सहशिक्षा का विरोध कर रहे हैं और कुछ समर्थन। ...ई समर्थकों का कहना है कि सहशिक्षा से लड़कों और ...कियों के बीच का सकोच दूर होता है वे आपस में उचित ...हार करना सीखते हैं। अनावश्यक उत्सुकता बहुत हद ...शांत हो जाती है। कुछ लोग आर्थिक दृष्टिकोण से सह-...ा का समर्थन करते हैं, और कुछ लोग कहते हैं कि स्त्री ...पुरुष में कोई भेद नहीं है इसलिए दोनों को एक ही ... और एक ही स्थान पर पढ़ने में हानि नहीं है। सहशिक्षा ...विरोधी इसे भारतीय संस्कृति की जड़ पर कुठार ...वाली अनैतिकता की प्रचारिका और स्त्रियों के ...

कार्यक्षेत्र के विरुद्ध बतलाते हैं। उनका कहना यह है कि सह
शिक्षा से हमारे समाज का सारा ढाचा ही बिगड़ जायगा।

यों तो हर बात के लिए दलीलें मिल जाती हैं, लेकि
जब तक ये कसौटी पर खरी न उतरें तब तक ठीक नहीं मानी
जा सकतीं। जो लोग आर्थिक दृष्टि से—पैसे की निगाह से सह
शिक्षा का समर्थन करते हैं, वे बहुत हद तक ठीक कहते हैं
देहातों में बहुत सी ऐसी जगहें हैं जहा एक ही स्कूल है। ल
कियों को शिक्षा दिलाने के लिए भी उसी स्कूल का सहा
लेना पड़ेगा—उनके लिए दूसरा स्कूल डिस्ट्रिक्ट बोर्ड र
खोलता और गावों के रहनेवाले स्वय इतना खर्च सहन न
कर सकते—घर पर ही पढ़ाने की व्यवस्था करने में भी
समर्थ नहीं हैं। परन्तु यह व्यवस्था भी प्रारम्भिक शिक्षा
ही ठीक कही जा सकती है। मिडिल और ऊची शिक्षा क
तो स्वतन्त्र प्रबन्ध करना ही उचित है। शहरों में इस दृष्टि
से सहशिक्षा का समर्थन करने की कोई आवश्यकता नहीं
यहा लड़कियों के लिए स्वतन्त्र विद्यालय हैं और उनमें बी०
तक की शिक्षा का प्रबन्ध भी है। इससे आगे या किसी वि
विषय की शिक्षा दिलाने के लिए शहरों में भी सहशिक्षा
सहारा लिया जाता परन्तु यह ठीक नहीं जँचता। प्रयत्न
जाए तो इसके लिए भी स्वतन्त्र व्यवस्था हो सकती है।

आर्थिक दृष्टिकोण के अतिरिक्त सहशिक्षा के समर्थन
जो दलीलें दी जाती हैं उनमें कोई बल नहीं है। सहशिक्षा
द्वारा स्त्रियों और पुरुषों के बीच का सङ्कोच दूर होता है
एक दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करना सीखते हैं। कि

की सहजात लज्जा और उसके परिणाम-स्वरूप उनकी एक विशेष प्रकार की कमजोरी दूर होती है—यह सब बकार सी बातें हैं। अब तक सहशिक्षा का जो अनुभव हुआ है, वह इन में से एक बात को भी ठीक सिद्ध नहीं करता। यों भी हम जंगल में नहीं रहते। हमें अपनी माताओं, बहनों और अन्य सम्बन्धिनियों से मिलने का अवसर मिलता है, अनावश्यक संकोच भी हम नहीं करते, उनके साथ उचित व्यवहार करना भी सब जानते हैं। इसके विरुद्ध सहशिक्षा व सम्मिलन वाला-[illegible]पा से आपस का सकोच दूर होना भयावह है। प्राचीन भारत में भी सहशिक्षा के एक आध उदाहरण मिलते हैं—साथ ही यह भी मालूम हो जाता है कि नगरों के ऐश्वर्य और विलास से दूर निर्जन जगलों की उन ऋषिकुटियों में भी मानवीय विचार ने अपना चमत्कार दिखाया था। कच और देवयानी की प्रेम गाथा इस का प्रमाण है। फिर आजकल के नागरिक जीवनमें तो इस प्रकार के बढने की बेहद गुञ्जायश है। यह ठीक है कि सह-शिक्षा से स्त्रियों को पुरुषों की कुछ हवा लग जाती है, परन्तु सवाल यह उठता है कि क्या स्त्रियों को पुरुष बनाना उचित होगा ?

यहीं पर सहशिक्षा का विरोध करने वाले हमें अपनी दलीलों के साथ मिल जाते हैं। वे इसे अनैतिकता की प्रचारिका [illegible]-दोष के विरुद्ध और भारतीय संस्कृति की जड पर कुठारा-घात करने वाली बताते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार [illegible] का मूल गृहस्थाश्रम है। गृहस्थाश्रम का आधार [illegible]। स्त्री इस घर [illegible], सरक्षिका और [illegible]

अतएव उसे ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जो उसके इस कार्य को सुचारुरूपेण सम्पन्न करने में सहायक सिद्ध हो। सहशिक्षा में स्त्री को भी वही शिक्षा दी जाती हैं जो पुरुषों को मिलती है। भारत में आजकल जो शिक्षा दी जाती है, वह अधिकांश क्लर्क बनाने की मशीन है। पुरुष इसी शिक्षा के फेर में पड़कर गुलाम बनते जा रहे हैं। सहशिक्षा स्त्रियों को भी इसी बीमारी का शिकार बनाती है। वह घर नहीं होटल आबाद करना चाहती है। वह स्त्रियों को घर के काम में—दक्ष न बनाकर पुरुषों सा जीवन बिताने के लिये—प्रेरित करती है—वे भी रुपये कमाने के फेर में पड जाती है। पश्चिम मे इस शिक्षा में बरबाद हो गये हैं। अब भारत में होने वाले हैं। इसका अवश्यम्भावी परिणाम यह होगा कि स्त्रियाँ भी भारतीय सभ्यता के आधार पर घर को छोड कर बाजारों की तरफ दौड़ेंगी, नौकरियों के लिये लपकेंगी। नौकरिया पुरुषों को ही नहीं मिलतीं—बेकारों की तादाद दिन बदिन बढ़ती जा रही है, स्त्रिया भी जब इस मैदान में आ जायेंगी तब तो ईश्वर ही मालिक होगा। कुछ दिन पहले एक विलायती समाचार पत्र में छपा था कि लण्डन की काउण्टी कौंसिल के सामने अजीब समस्या उपस्थित है। हर साल लगभग २०-२५ हजार युवतिया देहात से नौकरी करने के लिए लण्डन आती हैं। प्राय वे घरवालों से लड कर, उनके बताये रास्ते को न ग्रहण कर, स्वतन्त्र जीवन बिताने की इच्छा लेकर शहर में आती हैं। यहाँ वे नौकरी एक विचित्र जीवन बिताने के लिए विवश होती हैं। शहर में रहने को जगह तक नहीं मिलती, फलत उन्हें अपना

साथी चुनने नहीं, ढूँढने पडते हैं । यह है पश्चिम में सहशिक्षा का प्रभाव । क्या भारत में भी हम यही दृश्य देखना चाहते हैं ? नहीं तो हमें मानना पडेगा कि जो लोग सहशिक्षा का विरोध कर रहे हैं, वे ठीक करते हैं ।

सहशिक्षा के विरोधी ठीक कहते हैं कि यह अनैतिकता की प्रचारिका, स्त्री-क्षेत्र के विरुद्ध और भारतीय संस्कृति की जड पर कुठाराघात करने वाली है इसके प्रचलन से भारत व घर नष्ट हो जायेंगे । यह केवल प्रारम्भिक शिक्षा में, वह भी गावों में, लडकियों की शिक्षा का स्वतन्त्र प्रबन्ध न होने के कारण स्वीकार की जा सकती है—अन्यथा नहीं ।

प्रश्न – स्त्रीशिक्षा, सहशिक्षा, ग्रामसुधार, परोपकार, संक्षिप्त नोट लिखो ।

स्त्री शिक्षा

मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियो को विकसित करने का साधन शिक्षा है । प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा की आवश्यकता है ।

स्त्री समाजरूपी गाडी का एक पहिया है, घर की रानी देवी है—बच्चों की माता और पहली शिक्षिका है—स्त्री के हाथ में ही जाति, देश और धर्म की बागडोर है । स्त्री के लिये शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है ।

स्त्री शिक्षिता होगी तो समाज की गाडी ठीक चलेगी, घर का प्रबन्ध सुखदायी, सन्तोष और कर्त्तव्यानुकूल होगा बच्चे स्वस्थ, साफ, तेजस्वी, बलवान् और कर्त्तव्य प्रेमी शिक्षा की परम्परा ठीक रहेगी । देश, जाति की मर्यादा और गौरव अक्षुण्ण रहेगा । स्त्री

घर भूतो का डेरा बनेगा, बच्चे कुत्सित और कामी होंगे समाज, राष्ट्र और धर्म का पतन हो जायगा।

प्राचीन काल में स्त्रियां शिक्षित थीं—गार्गी, मैत्रेयी सावित्री, सीता, मडन मिश्र की पत्नी, अहिल्याबाई, लक्ष्मी बाई आदि। वे वेद मन्त्रों की द्रष्टा तक थीं, इसलिए भारत उन्नत था। स्त्री-शिक्षा बन्द हुई—जब तक पुराने संस्कार बचे—भारत चलता रहा। जब संस्कार भी मिट गये तब भारत भी गिर गया। आज भी जो शिक्षिता नारियां हैं वे भारत का मुख उज्ज्वल कर रही हैं। समाज-सुधार, देशोद्धार आदि में लगी हैं, स्त्री-शिक्षा का कार्य कर रही हैं।

स्त्री-शिक्षा बहुत आवश्यक है लेकिन शिक्षा ही होनी चाहिए, कुशिक्षा नहीं। अकबर ने कहा है—

तालीम लडकियों की जरूरी तो है जनाब,
उस्ताद अच्छे हो मगर उस्ताद जी न हों।

ग्राम-सुधार

भारत गावों का राष्ट्र है। ८० प्रतिशत से अधिक आबादी गावों में रहती है। गावों की स्थिति पर ही भारत का उत्थान और पतन निर्भर है।

पूर्व स्थिति—गाव साफ सुथरे थे—ग्रामीण स्वस्थ थे खेती के अलावा समय में घरेलू उद्योग करते थे। उपज अच्छी थी—सम्पन्न थे। उनकी आवश्यकताएँ कम थीं। हर गाव में पाठशालाएँ थीं, शिक्षा का प्रचार था। पचायतें थी। प्रेमपूर्वक रहते थे। व्यवस्था थी, चोरी—चकोरी का ज़ोर न था। ...

थे।

अब—सफाई नहीं है, स्वास्थ्य नहीं है बीमारियों का ज़ोर है, खेती से उपज कम होती है। जानवरों का बुरा हाल है उद्योग धन्धे मिट गये हैं, आवश्यकताएँ घट गई हैं उनके लिये शहरों का मुंह देखना पड़ता है। गरीबी और कर्ज का भार। अशिक्षित मुकदमेबाज़ी, चोरी—चकारी का ज़ोर। नरक में पड़े हैं।

कारण—अशिक्षा, अज्ञान, शहरों के उद्योग धन्धों ने घरेलू धन्धे बन्द कर दिए गए, व्यापार पूंजीपतियों के हाथ में चला गया, लगान, आबियाने की वृद्धि, ज़मीन खराब हो चली है। कारोबार नष्ट हो गये।

उपाय—शिक्षा प्रचार सफाई के लाभ बताना मुकद्दम-बाज़ी से बचाना, पाठशाला और पञ्चायतें, चरागाह रखवाना, लगान में कमी कराना, आवश्यकताएँ सीमित करना, कुरीति की बुराई बताना।

ग्राम—सुधार के बिना देश का कल्याण न होगा। यह काम वही कर सकते हैं जो सब तरह ग्रामीणों में मिल सकते हैं।

परोपकार

मनुष्य को वास्तविक मनुष्य बनाने वाले गुणों परोपकार प्रमुख है। जिस से हमारा कोई स्वार्थ का सम्बन्ध नहीं है उसकी भलाई करना ही परोपकार है। दूसरे के में सहायक बनना, दूसरे की कमी को पूरा करना मानवता लक्षण है। यह परोपकार से ही हो सकता है।

लाभ—दुनिया में साधन कम हैं, आदमी ज़्यादा, पास नहीं हैं वे परोपकार से प्राप्त कर सकते हैं। कम रहेगा। समाज की व्यवस्था में कुछ

करन से अवकाश भी देना पडता है। उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति परोपकार से ही हो सकती है। जो परोपकार करेगा वह अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा। आत्मा प्रसन्न होगी। संसार में उस का यश बढ़गा। सब महापुरुष परोपकारी थे और हैं। शिवि, दधीचि, हरिश्चन्द्र, प्रताप, शिवा, रहीम, गाँधी, जवाहर, सब परोपकारी हैं। देशभक्ति की बुनियाद परोपकार की भावना पर ही है। परोपकार में मनुष्य ईश्वर की ओर बढ़ता है देवता बनता है। सांसारिक कष्ट उसे परेशान नहीं करते।

हानि अन्धाधुन्ध परोपकार करने से जो लोग पात्र नहीं हैं—वे भी लाभ उठाते हैं। अकमर्ण्यों की भीड बढती है।

परोपकार मनुष्य को ईश्वर की ओर बढाने वाला गुण है, सामाजिक व्यवस्था के लिए आवश्यक है लेकिन समझ-बूझ कर परिमाण के साथ ही करना चाहिए।

प्रश्न—अपने मित्र को पत्र लिखो। जिसमें "परीक्षा उत्तीर्ण करने बाद तुम क्या करने का विचार रखते हो।" का वर्णन हो।

अमृतसर

५-५-४६

कृष्णा,

वन्दे ! मित्र ! इस बार तो तुम सचमुच ईद के चाँद ही हो गए, देहली क्या गए हमारे लिए लण्डन चले गए, पत्र का उत्तर तक नहीं देते, ऐसा मालूम होता है कि आपको कालेज के कार्य से अवकाश नहीं मिलता होगा परन्तु फिर भी मित्रों को इस प्रकार पत्र से वञ्चित तो नहीं कर दिया जाता, अपनी कुशलता की ढाई पंक्तियां लिखने का समय तो निकल ही आता है। आशा है कि इस बार पत्र का उत्तर अवश्य देंगे।

मित्र, आप यह जानकर अति प्रसन्न होंगे कि मैं अपनी परीक्षा में सफल रहा हूँ अङ्क भी ८०० मे ६१० लिए हैं। अपने स्कूल में प्रथम आया हूँ, ऐसी आशा तो थी नहीं। यह केवल आपके बताए गए कार्यक्रम पर चलने का फल है। मैंने भी तो अन्तिम दो मास मे दिन रात एक कर रखा था। घर के सब लोग मुझे इस प्रकार पुस्तकों का कीडा बनने से रोका करते थे। अन्त में इस परिश्रम का फल मिल ही गया।

भाई इस समय मेरे सम्मुख दो बातें उपस्थित हैं। एक तो यह है कि पढना समाप्त कर कोई नौकरी तलाश करूँ और दूसरी यह कि कालेज में प्रविष्ट होकर अपने अध्ययन को पूर्ववत् जारी रखूँ। आप तो स्वयं भली प्रकार जानते हैं कि बेकारी की समस्या कितनी बढती जा रही है। जिधर दृष्टि डालकर देखें यही रोना रोया जा रहा है। फिर क्या किया जाय, यदि पढना छोड देता हूँ तो बेकार फिरना पडता है और यदि आगे पढता हूँ तो कोई लाभ ही दिखाई नहीं देता, क्योंकि बी. ए. पास करने तक यह अवस्था और भी भयंकर हो जायगी। हाँ, एक ओर थोडी सी आशा की झलक दिखाई देती है। मेरा विचार है कि आयुर्वेदिक कालिज में प्रविष्ट होकर चार वर्ष अध्ययन कर वैद्यक का काम आरम्भ कर दूँ। एक तो स्वतन्त्र पेशा है और आदर-पूर्वक जीवन-निर्वाह का साधन हो सकता है, दूसरे इससे जन-साधारण की सेवा भी भली प्रकार कर सकूँगा। मैंने पिता जी से इस विषय में बात की थी। वह इसके लिए सहमत हैं और हर प्रकार की सहायता देने के लिए तैयार हैं। हमारी श्रेणी के छात्र इसी कालेज में प्रविष्ट होने का विचार रखते हैं

प्रत्येक धर्म के प्रत्येक राष्ट्र के निवासी कुछ महापुरुषो, महात्माओं, वीरों विजेताओ को · · जीवन का · मानते हैं। उनके चरणचिह्नों पर कर अपने जीवन को करने का · करते हैं। उन के उपदेशों को स्मरण रखने अपने जीवन में के लिये जन्म की निर्वाण तिथि हैं। राष्ट्रीय जीवन नया देती हैं जातिया रहती हैं, धर्म के पर का बोल वाला नहीं होता।

उत्तर—आज से प्राय पाच हज़ार वर्ष पहले मावस की काली अधेरी अष्टमी को मथुरा के काले कैदखाने में आनन्द कन्द भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्र ने अवतार ग्रहण किया था। उन के अवतरित होते ही अधेरा उजाले में बदल गया था, अन्याय की जड़ हिल गई थी। अत्याचार काप उठा था—सताये हुए प्राण प्रफुल्लित हो गये थे। तभी से कृतज्ञ और भावुक भारतवासी इस अष्टमी को जन्माष्टमी का नाम देकर इस महोत्सव को कस्बे में मानते आरहे हैं।

प्रत्येक धर्म के अनुयायी प्रत्येक राष्ट्र के निवासी कुछ महापुरुषों महात्माओं, वीरों और विजेताओं को अपने जीवन का आदर्श मानते हैं उन के चरणचिह्नों पर चल कर अपने जीवन को सफल करने का प्रयत्न करते हैं। उनके उपदेशों को स्मरण कर अपने जीवन में ढालने के लिए उनके जन्म की निर्वाण तिथि मनाते हैं। राष्ट्रीय जीवन को नया बल देती हैं—जातियाँ उन्नत रहती हैं, धर्म के नाम पर अनाचार का बोल बाला नहीं हो—।

आर्ट प्रैस, १२ मगुल्लर रोड, लाहौर में छपी।